Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासुदेव आरोग्य वाटिका का
" प्रथम रोग-निवारक पुष्प "

जटिल रोगों की सफल चिकित्सा

[स्वानुभव सार सनुकवक का पूर्वीभाग]

॥

लेखक
वैद्य एस० वासुदेव

★

प्रकाशक
वासुदेव आरोग्य-वाटिका
जम्मू (कश्मीर)।

55
320

प्रथम संस्करण २००० १९५७ ई० मूल्य [illegible])

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विषय संख्या 320 ५५ आगत नं० 32964

लेखक वासुदेव वैद्य 20 सं०

शीर्षक जटिल रोगों की सफल चिकित्सा

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या .... आगत संख्या 32164

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा 50 पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

55.1
20
55.1
41.1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासुदेव आरोग्य वाटिका का
"प्रथम रोग-निवारक पुष्प"

जटिल रोगों की सफल चिकित्सा

[स्वानुभव सार समुच्चय का पूर्वाभास]

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः
पुस्तक संख्या 55,320
आगत 22, 9, 74
गुरुकुल कांगड़ी

लेखक—
वैद्य एस० वासुदेव

55,320
32174

प्रकाशक—
वासुदेव आरोग्य-वाटिका
जम्मू (कश्मीर)।

प्रथम संस्करण २०००   १९५७ ई०   मूल्य—२॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमन के देवता और शान्ति के अवतार

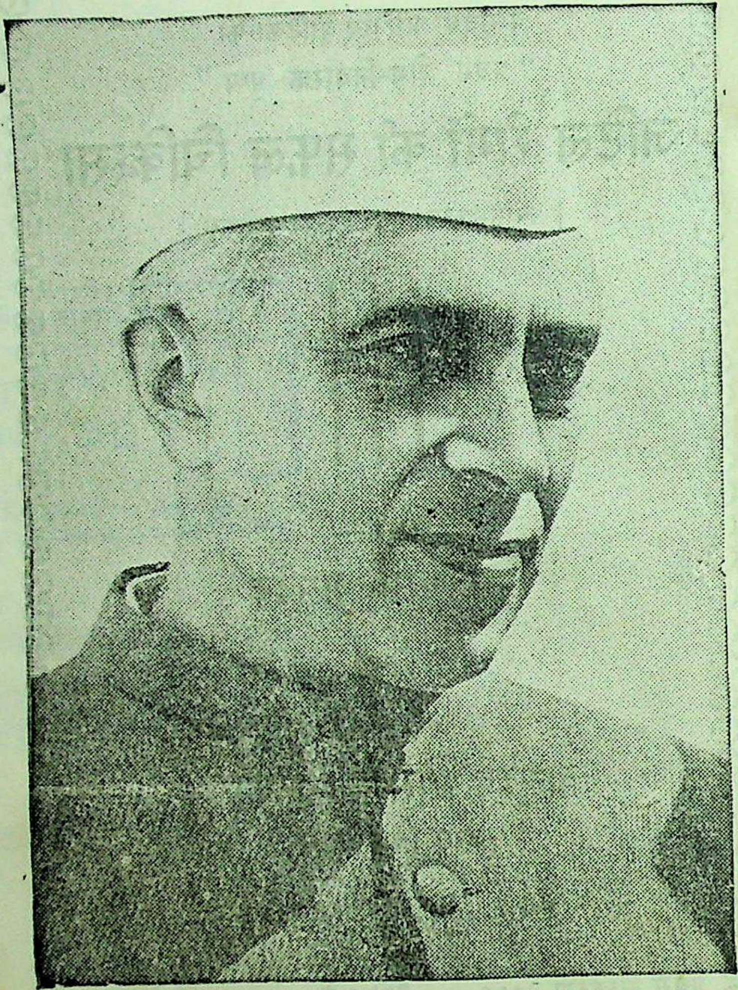

जिन के आदेश के अनुसरण स्वरूप आधुनिक चिकित्सा के प्रति परि-समर्पणार्थ "जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" का अवतरण हुआ है।

पहला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पण

वर्तमान युग की अलौकिक विभूति, तथा शान्ति और अमन के साक्षात अवतार, मानव धर्म के अनन्य उपासक तथा मानवता के समुज्ज्वल मीनार, पंच शील के प्रवर्तक और पुजारी, तथा उसकी नैय्या के खेवनहार, भारत मैया की स्वाधीनता के सेनानी और ध्वजा धारी, तथा उसकी उन्नति और सुख समृद्धि के कर्णधार, देशरत्न श्री पं० जवाहिर लाल जी के आगामी पृष्ठ समुद्धृत सदुपदेश तथा तत्सम्बन्धी रेखान्तरित अनुकरणीय आदेश के अनुसरण स्वरूप मत्प्रणीत "जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" नामक तुच्छ कृति, जो लेखक की अल्पज्ञता एवं तत्सम्बन्धी अनुभव की प्रतीक तथा आयुर्वेद की असाधारण महत्ता की अभिद्योतक है, आयुर्वेदीय उपदेश सहित, आधुनिक चिकित्सा पद्धति के प्रति सादर समर्पित है।

—लेखक

CHECKED 1973
Initial

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान युग के अवतारी महापुरुष

भारतरत्न श्री पं० जवाहिर लाल नेहरू का

चिकित्सक जगत् को सदुपदेश

जो माननीय पण्डित जी ने दिनाङ्क १७-१-५७ को कलकत्ता में डाक्टरी अनुसन्धानालय के उद्घाटन अवसर पर दिया था—

"मैं आधुनिक चिकित्सा पद्धति के डाक्टरों के इस तर्क को स्वीकार नहीं कर सकता, कि जीवन के विषय में सारी जानकारी उन्हें प्राप्त है। ऐसे व्यक्तियों का दिया फिर काम नहीं कर सकता। वे सर्वज्ञाता समझ आगे काम करना पसन्द नहीं करते। निरन्तर अभ्यास, परीक्षण एवं ग़लतियों से विज्ञान का चमत्कार दिखाई देता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति से उन्हें अनेक लाभकारी चीजें प्राप्त हो सकती हैं।"

वैद्य लोग आधुनिक चिकित्सा पद्धति को अनुपम देन दे सकते हैं। लेकिन यदि वे एक गुट बना कर बिना उस के बाहर गये बात करते रहेंगे तो उन के दावों को स्वीकार करना कठिन है।

[नव भारत टाईमस १८-१-५७ ई०]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" के सम्बन्ध में आयुर्वेद जगत् के जवाहिर वैद्यरत्न श्री पण्डित शिव शर्मा आयुर्वेदाचार्य जी के शुभ विचार

Vaidyaratna
Pandit SHIV SHARMA
Aayurvedacharya

Baharestan
Bomanji Petit Road
Cumbala Hill
Bombay 16 Feb. 1957

"I have read portions of the Book "Jatil Rogon ki Saphal Chikitsa" by Vaidya Shri Vasudev ji of Jammu. The Learned Author has collected valuable clinical material for benefit of the profession and presented it in a handy value. I hop the Book will be popular and the profession will Benefit by it."

Shiv Sharma.

भावार्थ—श्री वैद्य वासुदेव जी कृत "जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" नामक पुस्तक के कुछ अंश का मैंने अध्ययन किया है। सुयोग्य लेखक ने स्वानुभव सम्बन्धी सार भूत विषय को एक उपयोगी पुस्तिका के रूप में स्वव्यवसाय को समर्पित करके व्यवसाय पर अतुल उपकार किया है। मुझे आशा है कि पुस्तक चिकित्सक जगत में प्रसारित हो कर यथेष्ट सम्मान प्राप्त करेगी।

—शिव शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जम्मू के राजवैद्य जी की सम्मति का सार

(ले०—राजवैद्य श्री विश्वनाथ जी बी. ए. भिषगाचार्य धन्वन्तरि)

लगभग ३० वर्ष हुए जटिल रोगों की सफल चिकित्सा के सुयोग्य लेखक वैद्य श्री एस. वासुदेव जी से मेरा परिचयात्मक साक्षात्कार हुआ। तत्पश्चात अनेक बार विचार विनिमय और पारस्परिक परामर्शनादि के सुअवसर प्राप्त होते रहे। परिणाम स्वरूप मैंने आपको अनुभवी, विचारवान, सुशील, सुहृद् और एक होनहार चिकित्सक के रूप में पाया। आप की चिकित्सा पद्धति और चिकित्सा विज्ञान विषयक खोजों की मेरे मन में विशेष कदर है। आप की कृति और कीर्ति मेरे लिये विशेष आह्लाद कारक है।

आप की अनुपम सुकृति "जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" की पाण्डु लिपि पर दृष्टिपात करते हुए विशेष आनन्द का आभास हो रहा है। क्योंकि इस में सुयोग्य लेखक की जिन सुकृतियों का रोगी विवरणों और चिकित्सा तत्वों के रूप में उल्लेख आया है, उन में से अधिकांश सुकृतियों का मुझे निजि ज्ञान है और कृति के परिशिष्ट में जिन सिद्ध योगों का उल्लेख आया है उनमें से अनेक योग मेरे अनुभव में आ चुके हैं, बल्कि कुछ योग तो मेरे औषधालय में नियमित रूप से निरन्तर निर्मित और व्यवहृत हो रहे हैं।

वर्तमान काल में चिकित्सा के कर्म क्षेत्र में पदार्पण करने वाले अधिकांश वैद्य हकीम साहित्यिक ज्ञान रखते हुए भी जहां तक सक्रिय ज्ञान का सम्बन्ध है उस से प्रायः वञ्चित ही दृष्टिगत होते हैं। बहुत से स्पष्टवादी युवक अपनी एतद्विषयक त्रुटियों और कठिनाइयों को स्वीकार भी करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने चिकित्सक कई कई वर्ष तक अपने गुरुओं के साथ कार्य करते हुए इतने अनुभवी और कार्य कुशल हो जाते थे कि वे रोगों के तार तम्य और औषधियों के गुण, कर्म एवं प्रभावों आदि से पूर्णतया अवगत होने के कारण औषध के प्रयोग काल में निश्चित रूप से यह कह दिया करते थे कि अमुक समय औषधि का यह असर होगा और तदुपरांत अमुक औषधि अथवा पथ्य रूप अमुक अहार की आवश्यकता पड़ेगी। आज के आधुनिक विद्यालयों में विद्या ग्रहण करने वाले वैद्य, हकीम इस विषय में प्राय: कोरे ही हैं। अस्तु यही कारण है कि अधुना अधिकांश वैद्य हकीम ऐलोपैथिक औषधियों की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। अतएम इस प्रकार की त्रुटियों की निवृत्ति के लिये अनुभूत योगों से अधिक ऐसी पुस्तकों की आवश्यकता है कि जिन में अनुभवात्मक सार भूत विषय रोगी विवरणों एवं चिकित्सां तत्वों सहित यह विवर्णित हो कि रोग और रोगी की किस परिस्थिति में कौनसी औषधि का प्रयोग हुआ, उस का क्या असर हुआ। परिणाम क्या परिव्यक्त हुआ और रोगी ने कौनसे चिकित्सा क्रम द्वारा, स्वास्थ्य सुख प्राप्त किया इत्यादि—अस्तु जटिल रोगों की सफल चिकित्सा इस सम्बन्ध में यथेष्ट रूप से सफल हुई है।

पुराने अनुभवी और कला-प्रवीण चिकित्सकों का यह कर्तव्य है कि वे भी अपने जीवन भर के अनुभवों को लोकोपकारार्थ प्रकाश में लाने एवं ऋषि-ऋण से उऋण होने के सम्बन्ध में उसी आत्म-त्याग का परिचय देवें जिस आत्म-त्याग का सुपरिचय प्रस्तुत कृति के यशस्वी कृतिकार ने अपनी इस पुस्तक में दिया है।''

—विश्वनाथ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक के दो शब्द

मूकं करोति वाचालं, पंगुं लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे, परमानन्द माधवम् ॥

कितनी बड़ी कृपा है कृपा सिन्धु भगवान माधवानन्द की और माधव स्वरूप भगवान धन्वन्तरि की, कि जिसने एक अल्पज्ञ व्यक्ति के चिकित्सा विज्ञान विषयक पङ्गुत्व को तो चिकित्सा के कर्मक्षेत्र में कुछ ऐसी परिसफलताएं प्रदान की हैं कि जो गिरि लङ्घयन के समान ही हैं और उस अल्पज्ञ व्यक्ति की क्षीण काय एवं मूक प्राय लेखनी को गिरि मार्ग सम्बन्धी अनुभव पर प्रकाश डालने के लिए वरदान प्रदान किया है। जिस का परिणाम जटिल रोगों की सफल चिकित्सा का अवतरण है, जो वर्तमान युग के अवतारी महापुरुष के अनुकरणीय आदेश को साकार बनाने के लिये प्रस्तुत पुस्तिका के रूप में सुविज्ञ पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है।

अत एव प्रथम तो लेखक उस अनुकम्पा और वरदान के लिये वरदानकार और अनुकम्पा के भण्डार भगवान माधवानन्द और माधव स्वरूप भगवान धन्वन्तरि को साभिवादन कोटिशः धन्यवाद देता है, कि जिस वरदान और अनुकम्पा के परिणाम स्वरूप "जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" का शुभ जन्म हुआ है। तदनन्तर लेखक उस तथ्य से पाठकों को अवगत करना भी आवश्यक समझता है कि जिस तथ्य से पाठकों का अवगत होना अत्यावश्यक है और वह तथ्य यह है कि "जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" जो प्रस्तुत पुस्तिका के रूप में सुविज्ञ पाठकों के कर-कमलों का चुम्बन कर रही है। यह उस अस्त-व्यस्त स्थिति में परिस्थित, टूटे-फूटे शब्दों के संकलन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिबिम्ब रूप पूर्वाभास है, कि जिस सङ्कलन के संग्रह के पीछे लेखक के ३५ वर्षीय कर्माभ्यास तथा तत्सम्बन्धी चिकित्सा विज्ञान विषयक परिसफलताओं का प्रामाणिक इतिहास है, जैसा कि 'जटिल रोगों की सफल चिकित्सा' के अन्तर्गत सफल चिकित्सा विषयक विवरणों के उपरि लिखित तिथियों आदि से भी स्पष्ट है।

अस्तु सूचनार्थ सुविज्ञ पाठकों की सेवा में विनम्र निवेदन है कि प्रस्तुत पुस्तिका जिस ऐतिहासिक और प्रामाणिक सङ्कलन का प्रतिबिम्ब रूप पूर्वाभास है वे संकलन भी (जिस का नामकरण संस्कार "स्वानुभव सार समुच्चय" संज्ञा से हो चुका है) परिमार्जित होने के पश्चात् लोकोपकारार्थ प्रकाश में आने के लिये विशेष उत्सुक है। परन्तु उसका प्रकाश में आना उसके पूर्वाभास के स्वागत सम्बन्धी परिणाम पर ही आधारित व अवलम्बित है।

अतएव न केवल सुविज्ञ पाठकों द्वारा ही अपितु ऐलोपैथी की संरक्षक भारत सरकार की ओर से भी यदि प्रस्तुत पुस्तिका सम्बन्धी लेखक के आत्म-त्याग का यथोचित स्वागत और सत्कार हुआ तो आशा है कि "स्वानुभव सार समुच्चय" को भी प्रकाश में आने का अवसर शीघ्र ही प्राप्त हो जायेगा।

इसके अतिरिक्त लेखक उस महत्ता पर भी प्रकाश डालना अनिवार्य समझता है, कि जो महत्ता प्रस्तुत पुस्तिका ने शान्ति और अमन के अवतार के आयुर्वेद संसार सम्बन्धी अनुकरणीय आदेश को साकार बनाने के सिलसिले में प्राप्त की है और वह महत्ता यह है, कि प्रस्तुत पुस्तिका चिकित्सा विज्ञान विषयक उस पक्षपात का सक्रिय उत्तर देने में भी परिसफल हो गई है, कि जिस पक्षपात का प्रदर्शन ऐलोपैथी की अनन्य उपासना और अन्य पैथियों, विशेषतया आयुर्वेद विज्ञान की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुश्मनी के रूप में दिनांक १२–४–५४ को लोक सभा में स्वनाम धन्य, माननीया राज कुमारी अमृत कौर जी महोदया के निम्नांकित वास्तविकता विरुद्ध वक्तव्य द्वारा हो चुका है :—

ग्रामीणों का भी ख्याल है. कि देसी इलाज मामूली बीमारियों के लिये मुफीद है। बड़ी २ बीमारियों का इलाज ऐलोपैथी द्वारा ही हो सकता है।

(दैनिक 'तेज' १४–४–५४)

कारण कि उपर्युक्त वक्तव्य उस वास्तविकता के नितान्त विपरीत है, कि जिस वास्तविकता की प्रस्तुत पुस्तिका परिचायक और प्रतीक है। रही बात यह, कि लेखक के जिस अनुभवात्मक आत्म त्याग का प्रदर्शन प्रस्तुत पुस्तिका के अन्तर्गत हुआ है, वह आत्म त्याग भारत के समुज्ज्वल रत्न श्रद्धेय श्री पण्डित नेहरू जी के आयुर्वेद जगत् सम्बन्धी अनुकरणीय आदेश को साकार बनाने में कहां तक सफल हुआ है ? इसका उत्तर लेखक को तो सुविज्ञ पाठक अथवा ऐलोपैथी के अनन्य उपासक ही दे सकते हैं और सुविज्ञ पाठक तथा एलोपैथी के उपासकों को उस पारसीकोक्ति के अनुसार प्रस्तुत पुस्तिका स्वत: ही उत्तर देगी, कि जिस पारसीकोक्ति का भावार्थ तो यह है, कि मृगमद वही है, कि जो अपनी सुसुर्भित मादकता का सुपरिचय स्वसौरभ्य द्वारा स्वत: ही देवे, न कि उसकी सुगन्धी का वर्णन भी गंधी ही करे और उक्त भावार्थ बोधक मूल पारसीकोक्ति अधोलिखित है :—

मुश्क आंस्त कि खुद बबोयद, न कि अत्तार बगोयद।

विनीत—

वैद्य एस. वासुदेव

वासुदेव आरोग्य वाटिका

जम्मू (काश्मीर)।

२०–४–५७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपम देन के रूप में

आधुनिक चिकित्सा पद्धति को आयुर्वेद विज्ञान का

लोकहित सम्बन्धी उपदेश

प्रयोगः शमयेद व्याधिं, योऽन्यमऽन्यमुदीरयेत् ।
नासौ विशुद्धः शुद्धास्तु, शमयेद्यो न कोपयेत् ॥

अर्थात् उन औषधियों को व्यवहार में लाना विशुद्ध नहीं है कि जो रोग को शमन करते हुए अन्य अन्य उपद्रवों को उत्पन्न कर देवे। (जैसा कि अधिकांश ऐलोपैथिक औषधियों की अनिष्ट कारी प्रतिक्रिया द्वारा प्रायः होता है और जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण वह घटना है कि जिस घटना का उल्लेख आगामी पृष्ठ पर "स्टेटो मायसीनज अनिष्ट" शीर्षक से आया है- लेखक) शुद्ध प्रयोग तो वही है कि प्रयोग सम्बन्धी औषधि व्याधि का तो मूलोच्छेद कर देवे, परन्तु किसी अन्य उपद्रव को उत्पन्न न करे (जैसा कि आयुर्वेदीय औषधियों द्वारा होता है और जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण वे घटनाएं हैं कि जिन घटनाओं का उल्लेख प्रस्तुत पुस्तिका में जटिल रोगों की सफल चिकित्सा के रूपमें आया है—लेखक)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जटिल रोगों की सफल चिकित्सा

[१]

रोग—स्टेपटोमाईसीनज अनिष्ट दिनांक १७-७-५३

Steptomysinia

रोगी—भा० ज० सं० के भू० पू० प्रधान श्री पं० प्रेमनाथ जी के निकटस्थ आत्मीय श्री पं० लब्भू राम जी की आत्मजा आयु—१७ वर्ष।

निवास स्थान—जम्मू, घटनास्थल—श्रीनगर (कश्मीर)

रोग विवरण—रुग्णा एक असाध्य उदरज व्याधि द्वारा व्यथित थी। रोगाणुनाशक (Antibiotic) औषधियों की शिरोमणि औषधि श्रीमती स्टेपटोमाईसीन द्वारा एक नामाख्यात एवं विशेष उच्च कोटि के ऐलोपैथिक चिकित्सक की चिकित्साधीन शय्या-ग्रस्त रुग्णा की चिकित्सा हो रही थी। विशेष आशुकारी औषधि की असाधारण चमत्कारी प्रतिक्रिया के परिणाम स्वरूप दिनांक १६-७-५३ ई० को औषधि के इन्जैक्शन के कुछ कालान्तर सायं काल के समय अकस्मात् ही, प्रथम रुग्णा को एक वमन हुई, वमन के अनन्तर दो दस्त हुए, दस्तों के अनन्तर मूर्छा और मूर्छा के अनन्तर अनिष्ट सूचक पतनावस्था का प्रादुर्भाव हुआ।

अस्तु उपर्युक्त अनिष्ट के प्रतिकारार्थ अविलम्ब ही चिकित्सक महोदय को आमन्त्रित किया गया। परिणामस्वरूप चिकित्सक महोदय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने रुग्णा को परिलक्षित करने के अनन्तर यह विचार व्यक्त किया कि रुग्णा को मैनिंजाइटिस (मस्तिष्कावर्ण प्रदाह) हो गया है। इस लिए लम्बर पङ्क्चार (कटि वेध) का प्रबन्ध करना चाहिए। लेकिन जब तक लम्बर पङ्क्चर का प्रबन्ध नहीं होता तब तक कोरोमीन और गल्योकोज़ का सूचिकाभरण द्वारा प्रयोग जारी रहना चाहिये।

अस्तु, रात तो कोरोमीन और गल्योकोज़ के आधीन ही काटी गई। दूसरे दिन प्रातः काल परामर्शार्थ इन पंक्तियों के लेखक को भी स्मरण किया गया। परिणामस्वरूप लेखक की अल्पज्ञता ने इस रहस्य का उद्घाटन किया, कि रुग्णा को मैनिंजाइटिस तो है नहीं क्योंकि मैनिंजाइटिस के अधिकांश लक्षणों का अभाव है। परन्तु रुग्णा को स्टेप्टोमाईसीनिया अवश्य हो गया है, अर्थात् स्टेप्टो माईसीन की उसी प्रकार की अनिष्टकारी प्रतिक्रिया रुग्णा को पतनावस्था की ओर ले जा रही है कि रोगाणुनाशक औषधियों की जिस प्रकार की अनिष्टकारी प्रतिक्रियाओं के विषय में पाश्चात्य देशों के समाचार पत्रों और मासिक पत्रों आदि में लेख आते रहते हैं।

अस्तु उपर्युक्त रहस्य के उद्घाटन के अनन्तर एक अन्य कला प्रवीण ऐलोपैथिक चिकित्सक को परामर्शार्थ कष्ट दिया गया। परन्तु बात वहीं की वहीं ही रही, क्योंकि उन्होंने भी किसी विशेष कारणवश उस रहस्य पर परदा डालने का ही प्रयास किया कि जिस रहस्य का उद्घाटन एक अल्पज्ञ व्यक्ति की अल्पज्ञता द्वारा हुआ था। परिणाम स्वरूप रुग्णा की परिस्थिति विशेष भयावह हो गई, और भयावह परिस्थिति के परिणाम स्वरूप रुग्णा का अन्त दान भी होगया। लेकिन वह जो किसी ने कहा है कि मर्ज़ का इलाज है मौत का इलाज नहीं। तदनुरूप रत्नगर्भ पोटली नामक (जिसकी निर्माण विधि प्रस्तुत पुस्तक के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट में है) सद्य फलदायक आयुर्वेदीय सिद्ध औषधि की नन्हीं २ तीन मात्राएं ही, मरणासन्न रुग्णा को २ मास के लिये जीवन दान देने एवं उस रहस्य का समर्थन करने में सफल हो गईं, कि जिस रहस्य का उद्घाटन एक अल्पज्ञ व्यक्ति की अल्पज्ञता द्वारा हुआ था।

विशेष द्रष्टव्य

उपर्युक्त घटना सम्बन्धी रहस्य उन तथ्यों में से एक है कि जिन तथ्यों से अवगत होने के अनन्तर ही लण्डन यूनिवर्सिटी के प्रोफैसर आफ मैडीसन श्री डा० केक विक महोदय ने एतद्विषयक अपने एक सारगर्भित लेख के अन्तर्गत दिनाङ्क ७-४-५६ के ब्रिटिश मैडीकल जर्नल द्वारा चिकित्सक जगत को अधो लिखित चेतावनी दी है :—

श्री डा० केक विक की

चेतावनी

Almost Every Form of therapy Involves Taking a Calculated Risk, and Complications with Drugs merly make mandatory thak the Indications for the use must be carefuly considierd In Every Patatient and they should never be used If Less noki-ous Remedies or no therapy at all would be as Effectione. (B. M. J. 7-4-56)

अर्थात् प्रत्येक प्रकार की चिकित्सा में कुछ संशय और भय तो रहता ही है (जिस आयुर्वेदीय उपदेश का उल्लेख इस से पूर्व आ चुका है, यदि उस उपदेश का अनुकरण किया जाये तो कोई भय नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—लेखक) किन्तु इन रोगाणुनाशक औषधियों से उत्पन्न होने वाले अनिष्टों को आलक्षित करते हुए चिकित्सक का यह कर्तव्य हो जाता है कि प्रत्येक रोगी की रोग सम्बन्धी लक्षणावलि को दृष्टिगत रखते हुए बड़ी सावधानी और सोच समझ के साथ ही इन्हें व्यवहार में लाने का निश्चय करें। यदि किसी अन्य निरापद औषधि द्वारा अथवा बिना औषधि ही काम चल सके तो इन्हें भूल कर भी व्यवहार में न लाए।

(ब्रिटिश मैडीकल जर्नल ७–४–५६)

ज्ञातव्य—डा० केक बिक महोदय की चेतावनी के अन्त में बिना औषधि सम्बन्धी जिस संकेत का उल्लेख आया है। वे संकेत उन अर्थ लोलुप चिकित्सकों के कान खोलने के लिये है (चाहे वह एलोपैथिक हों अथवा अन्य पैथिक के रूप में कुपैथिक) कि जो जुकाम सरीखे स्वतः ही शान्त हो जाने वाले रोग में भी रोगी के रक्त में पैनस्लीन के रूप में विष को विलीन करना अनिवार्य समझते हैं, यद्यपि दोष उन रोगियों का भी है, कि जो तुरन्त लाभ की लालसा के वशीभूत हो कर छींक आते ही पैन्सलीन के आधीन हो जाते हैं, अत एव यह कहना अनुचित न होगा कि दोष उभय पक्षीय ही है और उभय पक्षीय दोष की रूप रेखा यह है कि रोगी पक्ष तो तुरन्त लाभ की लालसा के वशीभूत हो कर इस कवि कथन का अनुसरण कर रहा है कि—

अब तो चैन से गुजरती है वले, अमीर कल की खबर खुदा जाने।

और अर्थार्थी चिकित्सक इस कहावत को अपनी आजीविका का आधार बना रहे हैं कि—

कोई मरे कोई जीवे, सुथरा घोल पतासे पीवे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२]

रोग—अविच्छिन्न अपस्मार ति० १३-६-३०

Status Epilepticus

रोगी – श्री देवदत्त – आयु २१ वर्ष।

निवास स्थान—जम्मू। चिकित्सा स्थान—श्रीनगर (काश्मीर)।

रोग विवरण—रोगी के निकटस्थ आत्मीय श्रीमान् लाला मूल राज जी द्वारा वर्णित। तीन दिन पूर्व अकस्मात् ही रोगी पर अपस्मार के आवेश का आक्रमण हुआ। श्री डा०......जी के कथनानुसार समझा यह गया कि आवेश का अशेष होने पर रोगी स्वतः ही सचेत हो जायेगा, जैसा कि अपस्मार में प्रायः होता है। परन्तु ऐसा हुआ नहीं। कारण कि ऐसा होने से पूर्व ही रोग ने अविच्छिन्न अपस्मार का रूप धारण कर लिया और अविच्छिन्न अपस्मार की लाक्षणिक रूप रेखा यह है कि आवेश जन्य आक्षेपों (Convulsions) के अन्त में अचेतना और अचेतना के अन्त से पूर्व ही आक्षेपों का पुनः आक्रमण। रोगी की चिकित्सा के लिये सी० एम० ओ० (चीफ मैडीकल आफीसर) साहिब का कतिपय अन्य ऐलोपैथिक चिकित्सकों सहित सहयोग प्राप्त किया गया। परन्तु परिणाम निराशाजनक ही रहा। वह यूं कि तीन दिन की चिकित्सा के अनन्तर सी० एम० ओ० साहिब ने अपने सहयोगियों सहित यह विचार व्यक्त किया कि रोग असाध्य और विशेष भयावह है और रोगी का जीवन खतरे में है! अस्तु रोगी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिस्थिति यह है कि रोगी जब से रोग ग्रस्त हुआ है तब से उसे एक क्षण के लिये भी चेतना का आभास नहीं हुआ।

चूंकि उपर्युक्त परिस्थिति वास्तव में ही विशेष भयावह थी, इस लिये लेखक ने भी मरणासन्न रोगी को चिकित्सार्थ हस्तगत करने में किसी अंश तक संकोच सा ही व्यक्त किया। परन्तु रोगी के अभिभावकों ने यह विचार व्यक्त किया, कि यह तो हम भी समझते हैं कि रोग असाध्य है, परन्तु इसके बावजूद भी हम इस आशा पर आप के सहयोग के इच्छुक हैं, कि शायद कोई आयुर्वेदीय सिद्ध औषधि ही मरणासन्न रोगी को प्राण-दान देने में सफल हो जाये।

अस्तु, चिकित्सा के सम्बन्ध में रोगी के अभिभावकों विशेषतया श्रीमान् लाला मूलराज जी का आग्रह जब बहुत बढ़ गया तो लेखक को भी अधोलिखित शास्त्रोक्ति का अवलम्बन करना पड़ा।

यावत् कण्ठ गतः प्राणास्तावत्कार्या प्रतिक्रिया।
कदाचिद्दैव योगेन दृष्टरिष्टोऽपि जीवति ॥

परिणाम स्वरूप जिस चिकित्सा-क्रम ने उपर्युक्त शास्त्रोक्ति को सत्योक्ति में परिणत करने एवं लेखक की अल्पज्ञता के आश्रित आयुर्वेद के गौरव को उजागर करने का श्रेय प्राप्त किया, वह चिकित्सा-क्रम सपरिणाम अधो लिखित है।

चिकित्सा

प्रतिमात्रा—वात कुलान्तक विशेष १ रत्ती, सिद्ध मकरध्वज आधी रत्ती, जवाहिर मौहरा आधी रत्ती।

प्रयोग— १-१ घण्टे के अन्तर से। सहपान—मधु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूंकि रोगी आवेशाक्रांत होने की वजह से स्वतः औषधि सेवन करने में असमर्थ था, इस लिये रोगी के एक आत्मीय ने तो रोगी के मुख को खोलने का प्रयत्न किया और दूसरे स्वजन ने मधु मिश्रित औषधि को थोड़े से जल द्वारा तरल करके मुख द्वार से रोगी के उदर में पहुंचाने का प्रयास किया। अस्तु, इसी प्रकार से औषधि की तीन मात्राएं जब रोगी के उदरस्थ हो गईं तो रोगी महोदय सचेत हो गये और चेतना के कुछ कालान्तर ही शिरो-व्यथा और अङ्गमर्द आदि की कथा कहने लग गये। अत एव औषधि की अन्य मात्राओं में २—२ रत्ती नारदीय लक्ष्मी-विलास रस को भी संयुक्त कर दिया गया। तदनन्तर दो दिन तक तो ना. ल. वि. रसयुक्त औषधि का प्रयोग प्रतिदिन ४ मात्रा के रूप में परिचालित रहा। तत्पश्चात् एक सप्ताह तक ना. ल. विलास रस विरहित औषधि का प्रयोग हुआ। चूंकि रोगी महोदय को मलावरोध की शिकायत भी थी, इस लिये मलावरोध निवृत्ति के लिये दैनिक ग्लेसरीन वर्ति के प्रयोग की व्यवस्था की गई।

एक सप्ताह के अनन्तर औषधि तो चार के स्थान में तीन मात्रा कर दी गई और ग्लेसरीन वर्ति के सम्बन्ध में यह संकेत किया गया कि जिस दिन स्वतः मल विसर्जन न हो उस दिन ग्लेसरीन वर्ति को व्यवहार में लाया जाये।

आहार के रूप में १० दिन तक तो गो दुग्ध और फलों के रस का प्रयोग हुआ। ११वें दिन गोधूम के दलिये को व्यवहार में लाने की व्यवस्था की गई। दलिया रोगी ने स्वजिह्वा के वशीभूत होकर उदर-समाई से अधिक उदरस्थ कर लिया। परिणाम स्वरूप रोगी को अजीर्ण के कारण २—३ वमन हुई और वमनावस्था में ही रोगी पुनः पूर्ववत् आवेशाक्रांत हो गया। अतएव रोग का उपचार भी पुनः पूर्ववत्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही होने लग गया। परन्तु अब के औषधि की तीन मात्राओं ने कुछ काम न किया। इस लिये औषधि की मात्रा तो द्विगुणी कर दी गई और प्रयोग काल का अन्तर १ घण्टे के स्थान में २-२॥ घण्टे कर दिया गया। परिणाम यह कि १६ घण्टे तक आवेशाक्रांत रहने के अनन्तर रोगी महोदय पुनः सचेत हो गये। इसके बाद १ सप्ताह तक तो औषधि प्रतिदिन तीन मात्रा के रूप में व्यवहृत हुई। उसके उपरांत प्रतिदिन २ मात्रा और तत्पश्चात् २-२॥ मास तक निम्नांकित व्यवस्था का अनुसरण हुआ।

व्यवस्था

(१) प्रति मात्रा—वात कुलान्तक विशेष 1 रत्ती, सिद्ध मकरध्वज आधी रत्ती, जवाहिर मोहरा आधी रत्ती।

प्रयोग—प्रातः, सायं। सहपान—मधु।

(२) प्रति मात्रा—स्मृति सागर रस १॥ रत्ती।

प्रयोग—मध्याह्न: तथा रात्रि को शयन काल से १ घण्टा पूर्व! सहपान—मधु मिश्रित मक्खन!

परिणाम—वह दिन और आज का दिन—जिसे बीते हुए २६ वर्ष से कुछ मास ऊपर ही हो गये हैं। श्री देवदत्त जी को उक्त रोग का दौरा नहीं पड़ा। यद्यपि श्री लाला मूलराज जी के कथनानुसार रोग को असाध्य घोषित करने वाले तत्कालीन काश्मीर के सी. एम. ओ. साहिब निरन्तर १ वर्ष तक इस भ्रान्ति के भंवर में ही भ्रमण करते रहे कि रोग विशेष भयावह रूप में पुनः प्रगट होगा।

सत्य समर्थनार्थ

रोग विमुक्त होने वाले महानुभाव तथा उन के आत्मीय श्रीमान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाला मूलराज जी (जिनके निवास स्थान में रोग का मूलोच्छेद हुआ) का पूरा पता :—

(१) श्री लाला देवदत्त जी मेंगी बी. ए. बी. टी. हैड मास्टर गवर्नमेंट हाई स्कूल, ऊधमपुर (जम्मू)।

(२) श्री लाला मूलराज जी मेंगी, रिटायर्ड—सैशन जज, जम्मू।

द्रष्टव्य

यद्यपि उपर्युक्त सत्यता है तो एक अल्पज्ञ व्यक्ति के चिकित्सा विज्ञान विषयक पंगुत्व की सफलता की परिचायक, परन्तु है उसी वास्तविकता की ही अभिद्योतक—जिस वास्तविकता को स्पष्टवक्ता डा० श्री राम कृष्ण हरी भडकमकर एम. ए. एम. डी. के स्पष्टवाद ने निम्न शब्दों में स्वीकार किया है :—

शुद्ध आयुर्वेद हें परिपूर्ण व जिवंत शास्त्र आहे, असें मी स्वत: मानतों! आयुर्वेदाशीं तुलना करता पाश्चात्य वैद्यक हे अचूक निदान व निश्चित चिकित्सा करण्याचे बाबतींत, अद्याप बरेचं मागे आहे।

(भिषग्विलास जून १६४४ ई०)

अर्थात् शुद्ध आयुर्वेद सर्वांगपूर्ण जीवित शास्त्र है, ऐसा मैं स्वत: मानता हूं। आयुर्वेद के साथ तुलना करने से पाश्चात्य वैद्यक अचूक निदान और निश्चित चिकित्सा करने के विषय में आयुर्वेद से अभी बहुत पीछे है।

(क्षयरोग विशेषज्ञ डा० श्री रामकृष्ण हरी भडकमकर एम० ए० एम० डी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५४/३२० ३२१६८

[३]

रोग—साक्षेपकोन्माद ति० २-५-३६

Mania with Eclampsia

Library

रोगी—श्रीमती शांति देवी—आयु २२ वर्ष।

निवास स्थान—जम्मू। चिकित्सा स्थान—जम्मू व श्रीनगर (कारमीर)।

पूर्ववृत्त—रुग्णा के पिता श्री ला० हवेली राम जी (तत्कालीन चीफ सैक्रेटरी जम्मू व कश्मीर) के कथनानुसार उपर्युक्त तिथि से २–३ मास पूर्व रुग्णा बुद्धि विभ्रंश तथा अनिद्रादि सहित जरायु विकार जन्य आक्षेपक (Eclampsia) रोग द्वारा परिपीड़ित हुई। चिकित्सार्थ एक उच्च कोटि की योरुपियन लेडी डाक्टर सहित जम्मू के सुप्रसिद्ध ऐलोपैथिक चिकित्सकों का सहयोग प्राप्त किया गया। परन्तु जम्मू की चिकित्सक-मण्डली के चिकित्सा-चातुर्य पर कहावत वही चरितार्थ हुई कि—

मरज बढ़ता ही गया, ज्यों २ दवा की।

अत एव रुग्णा को चिकित्सार्थ जम्मू से लाहौर ले गया। क्योंकि अविभाजित पञ्जाब की राजधानी होने के कारण लाहौर भी उन दिनों में बड़े बड़े लासानी एवं कला-प्रवीण चिकित्सकों का केन्द्र समझा जाता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्तु, लाहौर में भी पहले तो ऐलोपैथिक उपचार ही हुआ, ऐलोपैथी की असफलता के अनन्तर एक नामाख्यात होम्योपैथिक चिकित्सक की असाधारण ख्याति का अनुभव हुआ। तदनन्तर एक उच्च कोटि के मनोविज्ञानाचार्य (Psychologist) ने रुग्णा की मनःसमीक्षा (Psycho Analysis) की। तत्पश्चात् रुग्णा अविभाजित पंजाब के सुप्रसिद्ध यूनानी चिकित्सक शफा उल् मुल्क हकीम फकीर मुहम्मद चिश्ती महोदय की चिकित्साधीन पहुंच गई। परन्तु लाहौर तक की दौड़ भी इस कवि कथन के अनुरूप ही सिद्ध हुई कि—

बेकार हुईं सब तदबीरें, कुछ भी न दवा ने काम किया।

अन्ततः रुग्णा के अभिभावकों और परिजनों ने अन्तिम उपाय के रूप में आयुर्वेद विज्ञान के अनुभव का विचार किया और स्वविचार को साकार बनाने के लिये इन पंक्तियों के लेखक की अल्पज्ञता को लक्ष्यवेध बनाने का निश्चय किया। क्योंकि लेखक उन दिनों में स्वकार्यवश श्रीनगर से जम्मू आया हुआ था। परिणाम स्वरूप रुग्णा को अधो लिखित लक्षणों सहित लाहौर से पुनः जम्मू लाया गया।

विद्यमान लक्षण—थोड़ी २ देर के बाद मूर्छा सहित मांस पेशीय आक्षेपों का आक्रमण, आक्षेपक के आवेशों के अनन्तर भी हाथों और पैरों की उंगलियों में आकुञ्चन, मल का अवरोध तथा क्षुधा और निद्रा का अभाव, अवसन्नता, विषण्णता, विमर्षता तथा बुद्धि विभ्रांशादि उन्माद के लक्षणों की विद्यमानता और मल परिष्कारार्थ दैनिक वस्तिकर्म यन्त्र का व्यवहार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा

(१) **प्रति मात्रा**—वात कुलान्तक विशेष १ रत्ती, जवाहिर मौहरा आधी र०, सिद्ध मकरध्वज आधी रत्ती ।

प्रयोग—प्रातः काल । सहपान-मधु । अनुपान-त्रिफला फाण्ट ।

(२) **प्रति मात्रा**—सर्व गन्धा चूर्ण ६ रत्ती, जवाहिर मौहरा आधी र०, सिद्ध मकरध्वज आधी र० ।

प्रयोग—मध्याह्न तथा रात्रि के १० बजे ।

अनुपान—गुलाब जल ।

(३) बृहद्वातचिन्तामणि रस १ रत्ती, वातकुलान्तक विशेष आधी र०, जवाहिर मौहरा आधी रत्ती ।

प्रयोग—६ बजे सायं । सहपान-मधु । अनुपान-त्रिफला फाण्ट ।

परिणाम—१ सप्ताह में ही आक्षेपक-मूर्छा के आवेशों का तिरोभाव हो गया । मल का उत्सर्जन वस्तिकर्म यन्त्र के बिना स्वतः ही होने लग गया । क्षुधा बढ़ गई और निद्रा आने लग गई ।

अस्तु १॥ मास तक उन्हीं औषधियों का ही प्रयोग जारी रहा कि जिन औषधियों के चमत्कार का ऊपर की पंक्तियों में उल्लेख आ चुका है । परिणाम स्वरूप उन्माद के अन्य लक्षणों का तो अभाव हो गया परन्तु मूकत्व के रूप में मौन व्रत का आविर्भाव हो गया । अतएव सब औषधियों को बन्द करके निम्नलिखित व्यवस्था की गई :—

(१) माहेश्वर घृत ६ माशा से एक तोला तक ।

प्रयोग समय—प्रातः सायं । सहपान—गोदुग्ध ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) कृष्ण चतुर्मुख रस १ रत्ती, जवाहिर मौहरा आधी रत्ती।

प्रयोग—नित्य नहीं, बल्कि यदा कदा घृत-पान से १ घण्टा पूर्व प्रातः काल। सहपान–मधु।

उपर्युक्त औषधियों का प्रयोग भी २–२॥ मास तक जारी रहा। परिणाम स्वरूप रुग्णा पूर्ण स्वस्थ हो गई।

सत्य समर्थनार्थ रोग विमुक्त होने वाली महिला के पूज्य पिता का पता :—

श्रीमान् ला० हवेली राम जी मलहोत्रा
रिटायर्ड—चीफ सैक्रेटरी (*J. & K. Govt.*)
जम्मू [काश्मीर]।

द्रष्टव्य

उपर्युक्त सच्चाई उन सच्चाइयों में से एक है, कि जिन सच्चाइयों के आधार पर उन्माद रोग विशेषज्ञ श्री डा० जे. पी. चौधरी महोदय ने बङ्गीय उन्मादाश्रमों (Mental Hospitals) के चतुर्थ वार्षिकोत्सव में स्व-वक्तव्य के अन्तर्गत आयुर्वेद की असाधारण महत्ता को निम्नांकित शब्दों में स्वीकार किया है :–

आयुर्वेद मते चिकित्साय गड़ पड़ता शतकरा ८६ जन उन्माद रोगी आरोग्य लाभकरिया छे एवं ईहा केवल आयुर्वेद चिकित्सा ते सम्भव, ऐलोपैथिक व होम्योपैथिक चिकित्साय सम्भव नहें।

("उन्माद उ मनो व्याधि" नामक बङ्गला पुस्तक से उद्धृत)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात्—आयुर्वेदीय चिकित्सा से उन्माद के ८६ प्रतिशत रोगियों ने स्वास्थ्य-लाभ किया है। ऐसा केवल आयुर्वेदीय चिकित्सा से ही सम्भव है, एलोपैथिक और होम्योपैथिक चिकित्सा से सम्भव नहीं।

---

[४]

रोग—रक्तचापाधिक्य दिनांक २०-५-३६

High Blood Pressure

रोगी—श्रीमान् लाला मूलराज जी (तत्कालीन सैशन जज्ज श्रीनगर) की सहधर्मिणी। आयु ४० वर्ष के लगभग।

पूर्ववृत्त—रुग्णा को अर्धावभेदक के दौरों की शिकायत तो कई वर्षों से थी परन्तु उपर्युक्त तिथि से ५–६ मास पूर्व अर्धावभेदक जन्य शिरो व्यथा का रुग्णा के नेत्रों पर कुछ ऐसा कुप्रभाव पड़ा, कि धीरे धीरे रुग्णा की नेत्र-ज्योति ही जाती रही। नेत्र-ज्योति की ज्योत को जगाने के लिये नेत्र-रोग विशेषज्ञ ऐलोपैथिक चिकित्सकों से परामर्श किया गया।

चूंकि रुग्णा गर्भवती भी थी, इस लिये परामर्श दाताओं ने दृष्टि दोष का कारण तो अण्डलाला मेह (Albuminuria) बताया और अण्डलाला मेह के आविर्भाव का कारण गर्भ स्थिति बताया और दृष्टि दोष के उपचार के विषय में यह विचार व्यक्त किया, कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसव-काल के अनन्तर जब अण्डलाल (Albumen) के उत्सर्जन में स्वत: ही ह्रास हो जायेगा, तो दृष्टिदोष की भी निवृत्ति हो जायेगी, परन्तु प्रसव काल के अनन्तर दोष-निवृत्ति के स्थान में दृष्टि-दोष में कुछ वृद्धि हो गई। अतएव भारत के सुप्रसिद्ध नेत्ररोग विशेषज्ञ श्री डा० मथुरा दास जी (जो संयोग से उन दिनों श्रीनगर में ही थे) से कतिपय अन्य कला-प्रवीण ऐलोपैथिक चिकित्सकों सहित परामर्श किया गया। परिणाम स्वरूप यह निर्णय हुआ, कि रुग्णा के कष्ट का कारण रक्त चापाधिक्य (H. B. P.) है। अतएव रक्त चापाधिक्य की चिकित्सा शुरू हो गई। परन्तु ६–७ दिन की चिकित्सा से रुग्णा को लाभ लेश मात्र भी न हुआ। इस लिये परामर्शार्थ लेखक को स्मरण किया गया। अस्तु, लेखक ने प्रथम तो विद्यमान लक्षणों को लिपिबद्ध किया, जो अधो लिखित हैं :-

विद्यमान लक्षण–नाड़ी की गति तीव्र और द्रुत, हृत्कम्प और शिरो-व्यथा के कारण रुग्णा जल वञ्चित मीनवत् व्याकुल, रक्त चाप (Blood Pressure) २०० से कुछ ऊपर।

अस्तु जब उपर्युक्त लक्षणावलि लिपिबद्ध हो गई तो तदुपरान्त अधो लिखित चिकित्सा की व्यवस्था हुई।

चिकित्सा

(१) **प्रति मात्रा**—माहेश्वर (सर्पगन्धा) मूल त्वक् चूर्ण ३ रत्ती, जवाहिर मोहरा आधी र०, माणिक्य पिष्टि १ रत्ती।

प्रयोग—प्रात: सायं। अनुपान—गो दुग्ध अथवा गुलाब जल।

(२) **प्रति मात्रा**—मुक्ता पिष्टि ½ रत्ती, माणिक्य पिष्टि ½ र०,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पन्ना पिष्टि ½ रत्ती ।

प्रयोग—हृत्कम्प-जन्य व्याकुलता के प्रतिकारार्थ दिनमें २—३ बार । सहपान—मधु अथवा मक्खन ।

(३) त्रिफला अर्ध कुट्टित चूर्ण १॥ तोला ।

प्रयोग - फाण्ट के रूप में प्रातः काल माहेश्वरादि के प्रयोग से २ घण्टा पूर्व ।

अस्तु, त्रिफला फाण्ट को तो रुग्णा ने केवल २ दिन तक ही सेवन किया । अतएव रुग्णा की रुचि के अनुसार मल परिष्कारार्थ यदा कदा यथावश्यक फरूट साल्ट को व्यवहार में लाने की व्यवस्था की गई । परन्तु अन्य औषधियों का प्रयोग एक मास तक निरन्तर चालू रहा । यद्यपि लाभ दूसरे दिन से ही शुरू हो गया था ।

परिणाम—१ मास में बढ़े हुए रक्त-भार का तो ह्रास हो गया और तज्जन्य हृत्कम्प आदि की भी निवृत्ति हो गई । परन्तु दृष्टि-दोष की पूर्णतया निवृत्ति न हुई जिस का कारण यह था कि अण्ड लाला मेह का पूर्णतया प्रतिकार नहीं हुआ था । अत एव अण्ड लालामेह (Albuminuria) के प्रतिकार के लिये चन्द्र प्रभावटी विशेष के प्रयोग की योजना की गई । अस्तु, चन्द्र प्रभावटी विशेष का प्रयोग भी १ मास तक जारी रहा । परिणाम स्वरूप दृष्टि-दोष सहित अण्ड लालामेह की भी निवृत्ति हो गई ।

सत्य समर्थनार्थ रोग विमुक्ता के पूज्य पति महोदय का वर्तमान पता :-

श्री ला० मूलराज जी मेंगी (रिटायर्ड सैशन जज्ज)
जम्मू (काश्मीर) ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रष्टव्य

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि रक्त चापाधिक्य तथा तज्जन्य कष्टों की चिकित्सा विधि के विषय में आधुनिक चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद विज्ञान की आभारी और अभिऋणि है, कारण कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति के कर्णधारों का यह कहना है कि बढ़े हुए रक्त भार (High Blood Pressure) एवं तज्जन्य कष्टों का उपचार रेचन, उपवास और रक्त स्रावण है और ऐसा कहना उन्हें महर्षि चरक के उस अमर वचन ने सिखाया है कि जिस अमर वचन का उल्लेख महर्षि चरक की अमर सुकृति (चरक संहिता) के सूत्र स्थान के २४वें अध्याय में निम्नाङ्कित प्रवचन के रूप में आया है।

कुर्याच्छोणित रोगेषु रक्तपित्त हरी क्रियाम्।
विरेकमुपवासं च स्रावणं शोणितस्य च ॥

और आज प्रयोजन सिद्धि के लिये आधुनिक चिकित्सा पद्धति ने सर्पगन्धा (Rauwolfia Serpentina) नामक जिस आयुर्वेदीय औषधि पर अधिकार जमाना एवं नये नये रूपों में उसे मार्कीट में लाना शुरू कर दिया है, उस औषधि को व्यवहार में लाना आधुनिक चिकित्सा पद्धति के कर्णधारों ने वर्तमान युग के महर्षि चरक महा महोपाध्याय कविराज डा० श्री गणनाथ सेन जी के उस आत्म त्याग से सीखा है कि जिस आत्म-त्याग का उल्लेख स्व० महा महोपाध्याय और स्व० डा० के० सी० बोस के संयुक्त लेख के अन्तर्गत जुलाई १९३१ ई० के 'इण्डियन मेडीकल वर्ल्ड' [Indian Medical World] में निम्नाङ्कित शब्दों में आया है :-

पूर्व लेखक (श्री महा महोपाध्याय जी) महोदय ही पहले व्यक्ति हैं जिन्हों ने इस दवा के रक्त-भार की वृद्धि को कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाले गुण को प्राप्त किया और इस की कृपा से वह इस योग्य हो सके कि अपने रोगियों के रक्त भार को नियमित रख सकें।

---

[५]

रोग—यकृच्छूल सहित कामला दिनांक ३०-१०-४८

Jaundic with Hepatlgia

रोगी—देसराज। आयु ३० वर्ष के लगभग।

निवास स्थान—शरणार्थी होने की वजह से अस्थायी रूप से सहारन पुर। चिकित्सा स्थान—सहारन पुर।

वृत्त—रोगी द्वारा विवर्णित। रोग का कारण तो है आहार सम्बन्धी अपथ्य और धूप में अधिक भ्रमण और रोग की उत्पत्ति का इति वृत्त यह है कि १५-२० दिन पूर्व प्रथम यकृत् स्थान में वेदना का आभास हुआ, तदनन्तर ज्वर सहित कामला का प्रकाश हुआ। तब से अब तक यहां के [सहारनपुर के] नामाख्यात ऐलोपैथिक चिकित्सक श्री डा०……जी की चिकित्सा विषयक आख्याति का अनुभव हो रहा है। परिणाम स्वरूप लाभ केवल इतना ही है कि ज्वर कुछ कम हो गया है, परन्तु मूल रोग वैसे का वैसा ही है जिस के मूलोच्छेद के लिये श्री से० गोवर्धन दास जी के आदेशानुसार आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास आया हूं ।

विद्यमान लक्षण— रोगी का यकृत्स्थल वेदना युक्त, नेत्र हरिद्रावत्, पीत, ज्वरांश १०० डिगरी के लगभग और यकृत् आध इञ्च के लगभग विवर्द्धित ।

चिकित्सा

[१] कामलांतक रस १ माशा, ताम्रकल्प आधी रत्ती, प्रति मात्रा ।

प्रयोग दिन में ३ बार । अनुपान—मक्खन निकाली हुई दही की लस्सी ।

[२] शूल गज केसरी १ रत्ती, अग्निमुख चूर्ण ४ रत्ती प्रति मात्रा ।

प्रयोग— जिस समय यकृत् में शूल अधिक हो उस समय १ मात्रा गरम जल के साथ खा कर ऊपर से एक सादा पान का पत्ता धीरे २ चबा कर खाएं । यदि एक मात्रा से लाभ न हो तो २ घण्टे बाद दूसरी मात्रा खा लें ।

परिणाम— यकृच्छूल तो एक सप्ताह से पूर्व ही शान्त हो गया और दो सप्ताह में कामला का भी तिरोभाव हो गया । परन्तु यकृत् अभी कुछ थोड़ा सा बढ़ा हुआ था, इसलिये कामलांतक रस और ताम्रकल्प का प्रयोग १५ दिन तक कामला की निवृत्ति के अनन्तर भी जारी रहा । परिणाम स्वरूप रोगी पूर्णतया रोग विमुक्त हो गया ।

द्रष्टव्य

उपर्युक्त वृत्त सम्बन्धी रोगी का विवरण सम्बन्धी इतिवृत्त नर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रत्न डा० श्री नरहर डेसाई एम० डी० के उसी स्पष्टवाद का ही समर्थक है कि जिस स्पष्टवाद का उल्लेख "जङ्गलनी जड़ी बूटी" नामक गुजराती पुस्तक में "नाग दमनी" नामक जड़ी के विवरण के अन्तर्गत निम्नाङ्कित शब्दों में आया है :-

कमला ना रोग माटे अंग्रेजी वैद्यक मां कोई पण सारु औषध नथी। आ विषय मां मारो जाति अनुभव कहुँ— बांदरा मां एक योरोपयन गृहस्थ ने कमलो थयो। जे थी तेओ औषध माटे मारी पासे आव्या। मैं तेमने अंग्रेजी पद्धति प्रमाणे मिकश्चर करी आपयुं। दर विज़िटे दश रुपीया फ़ी लईने मैं तेमनी पास थीं आशरे दोढ़सो रुपीया फ़ी ना कढाव्या अने लगभग दोढ़ महीना सुधी दवा आपी परन्तु लाभ थयुं नहीं। आथी निराश थई ने तेओ एक सूरत ना वैद्य पासे गया। ते वैद्ये तेमने एक वनस्पति नुं चूर्ण सुंघवा आप्युं। अने आश्चर्य नी बात ए छे के मात्र बे दिवस चूर्ण सुंघवा थी नाक मां थीं पीली रसी निकली ने कमलो मटी गयो। पछी तेओ साहेब मारी पासे आवी ने बोल्या के— तम ने मैं रुपाया दोढ़सो आप्या ते फोगट ना गया। आ बात मैं मुंगे महोड़े सहन करी।

भावार्थ—कामला के लिये ऐलोपैथी में कोई भी उत्तम औषधि नहीं है। इस विषय में मेरा निजि अनुभव है और उस अनुभव का इतिवृत्त यह है कि बांदरा में एक युरोपियन गृहस्थ कामला ग्रस्त हुआ। चिकित्सा के लिये वह मेरे पास आया। मैंने ऐलोपैथिक मिक्श्चरों द्वारा उसकी १॥ मास तक चिकित्सा की। दस रु० प्रति परामर्श शुल्क के हिसाब से १५० रु० के करीब मैंने उस से परामर्श

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुल्क के रूप में प्राप्त किये। परन्तु उसे लाभ न हुआ, परिणाम स्वरूप वह निराश हो कर किसी सूरत के वैद्य के पास पहुंच गया। वैद्यवर ने उसे सूंघने के लिये किसी वनस्पति का चूर्ण दिया। आश्चर्यजनक बात यह कि केवल दो दिन उसने चूर्ण का प्रयोग किया। फलस्वरूप उस की नाक में से पीत वर्ण स्राव का परिस्रवण हुआ और वह रोग विमुक्त हो गया। तदनन्तर उस ने मेरे पास पहुंच कर यह शब्द कहे कि मैंने जो १५० रुपया तुम्हें दिया है, वह व्यर्थ ही गया। चूंकि मेरे पास उस के शब्दों का कोई उत्तर नहीं था, इस लिये मैंने मौन व्रत द्वारा ही उस के शब्दों को सहन किया।

ज्ञातव्य—नर-रत्न डा० श्री डेसाई जी के उपर्युक्त स्पष्टवाद का प्रदर्शन उस व्याख्यान के अन्तर्गत हुआ था, कि जो व्याख्यान उन्हों ने स्वानुभव के आधार पर आयुर्वेद विज्ञान की महत्ता पर प्रकाश डालने के लिये पूना में बसन्तोत्सव सम्बन्धी एक समारोह में दिया था।

इसके अतिरिक्त श्री डा० डेसाई जी के स्पष्टवाद का समर्थन भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग के उस अनुभव द्वारा भी हो चुका है, कि जो अनुभव स्वास्थ्य विभाग ने ऐलोपैथी की उपासनार्थ गत वर्ष देहली निवासियों को मल-मिश्रित जल पिला कर किया है—लेखक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[६]

रोग—ग्रहामयान्वित अपस्मार ति० ३-५-४०

Epilepsy with Catalepsy

रोगी— कृष्ण चन्द्र । आयु—१७ वर्ष । व्यवसाय—बढ़ई

निवास स्थान—जम्मू ।

रोग विवरण— दिनाङ्क ३–५–४० को रोगी को जब जम्मू से चिकित्सार्थ श्रीनगर में लेखक के औषधालय में लाया गया तो रोगी के सहोदर मिस्त्री अमरनाथ जी ने यह बताया, कि रोगी लगभग आठ वर्ष से छोटे बड़े दो प्रकार के दौरों के दौर में चक्र काट रहा है। छोटे बड़े अनेक डाक्टरों हकीमों से रोगी की चिकित्सा करा चुके हैं और श्री डा०……जी के आदेशानुसार कई मास तक Rai pills नामक पेटेण्ट औषधि भी रोगी को प्रयोग करा चुके हैं। परन्तु स्थायी लाभ किसी चिकित्सा से भी नहीं हुआ।

विगत शीत काल में मिस्त्री बसन्त लाल नामक जिस व्यक्ति की उन्मादग्रस्त धर्मपत्नी का आपने इलाज किया था, उसी व्यक्ति के आदेशानुसार रोगी को उपचारार्थ आपके पास लाया गया है। दोनों प्रकार के दौरों की लाक्षणिक रूपरेखा यह है, कि बड़े दौरे अर्थात् अपस्मार के आवेश का आक्रमण तो प्रायः दस-बारह दिन बाद होता है और अपस्मारवत् ही उसके लक्षण यथा—आक्षेप Convulsions

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचेतना तथा मुख से झाग आना आदि होते हैं। परन्तु छोटे दौरे दिन में कई बार पड़ते हैं। लेकिन न तो उन में अपस्मारवत् आक्षेप ही होते हैं, न रोगी के मुख से फेन का उत्सर्जन ही होता है। प्रत्युत इस के विपरीत आवेश काल में रोगी केवल एक-दो मिनट के लिये अकस्मात् ही अवाक्, अचेष्ट, स्तब्ध और अवसन्न सा हो जाता है।

अस्तु, उपर्युक्त बात अभी हो ही रही थी, कि रोगी पर छोटे दौरे का उपर्युक्त लक्षणावलि के अनुसार ही आक्रमण हो गया।

रोग विनिश्चय—ग्रहामयान्वित अपस्मार।

वक्तव्य—ग्रहामय संज्ञा के संज्ञाकार तो डा० श्री एम. बी. भट्टाचार्य जी हैं परन्तु संज्ञा की कल्पना का आधार अंग्रेज़ संज्ञा कैटेलैप्सी ही है और कैटेलैप्सी यूनानी भाषा का शब्द है जिस का अर्थ ग्रहण करना अर्थात् पकड़ना है और कैटेलैप्सी का अरबी भाषान्तर जुमूद है, उक्त रोग की संप्राप्ति क्या है ? इस सम्बन्ध में "स्वानुभव सारसमुच्चय" में प्रकाश डाला जाएगा।

चिकित्सा

(१) स्मृति सागर रस, मात्रा—१ रत्ती।

प्रयोग—प्रातः-सायं। सहपान—मधु-मिश्रित मक्खन।

(२) प्रति मात्रा—प्रेम पुष्प्यादि चूर्ण—६ रत्ती, वात कुलान्तक विशेष १ रत्ती।

प्रयोग—मध्याह्न और रात्रि को शयन काल से एक घण्टा पूर्व।

अनुपान—अर्क गुलाब।

(३) प्रति मात्रा—अश्वगन्धारिष्ट १ तोला, सारस्वतारिष्ट १ तोला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग—भोजनोपरान्त दोनों समय सम भाग जल मिला कर।

परिणाम—यद्यपि रोगी को निर्देश तो दो ढाई मास तक औषधि सेवन करने का था। परन्तु रोगी ने औषधि केवल डेढ़ मास तक ही प्रयोग की। परिणाम स्वरूप रोगी अपस्मार से तो पूर्णतया निर्मुक्त हो गया, परन्तु ग्रहामय की 80% प्रतिशत निवृत्ति हुई।

नोट—रोग विमुक्त होने वाले महाशय के विषय में तो पता करने पर यह ज्ञात हुआ है कि वह गत वर्ष किसी अन्य रोग से दिवङ्गत हो चुका है। परन्तु चिकित्सा विषयक विवरण की सत्यता का जहां तक सम्बन्ध है उस का समर्थन उन्हीं मिस्त्री बसन्त लाल जी द्वारा हो सकता है, कि जिनका आदेश रोगी को सहोदर सहित जम्मू से काश्मीर ले गया था। अस्तु उन का पता अधो लिखित है :—

मिस्त्री बसन्त लाल जी बढ़ई
पुरानी मण्डी, जम्मू।

---

[७]

रोग—साक्षेपक मूर्छा दिनांक ३-६-३५

Eclampsia

रोगी—धर्मपत्नी श्री रामलाल जी आनन्द।

निवास स्थान—तलागंग (जिला अट्क)।

रोग विवरण—रुग्णा के श्वसुर श्रीमान् ला० साहिब दयाल शाह के पत्र से उद्धृत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चि० राम लाल की सहधर्मिणी ग़शी (मूर्छा) के दौरों से परि-पीड़ित है। आवेश-काल अर्थात् दौरे की हालत में पहले रुग्णा का समस्त शरीर साक्षेप उछलता है। जोरदार हाथों से जब रुग्णा के शरीर को दबाया जाता है तो उछलन बन्द हो जाती है। परन्तु तदुपरांत रुग्णा अचेत, अचेष्ट और संज्ञा-हीन हो जाती है। आवेश काल में यदि कोई वस्तु रुग्णा के हस्तगत होती है तो उसे हाथ से पृथक करना दुस्तर हो जाता है। रुग्णा का मासिक धर्म तो नियमित है, परन्तु मलावरोध की विशेष शिकायत है। अत एव मलावरोध की निवृत्ति के लिये दैनिक वस्तिकर्म यन्त्र का प्रयोग होता है।

चिकित्सा न केवल घर पर ही विभिन्न डाक्टरों, हकीमों से करा चुके हैं—अपितु निरन्तर १॥ मास तक रुग्णा को सरकारी हस्पताल में रख कर भी उपचार करा चुके हैं। परन्तु निराशा में उत्तरोत्तर वृद्धि ही होती जा रही है। यहां तक कि अब रुग्णा को खान पान का अवसर भी यदा कदा ही प्राप्त होता है, कारण कि दिन रात में २०-२२ घण्टे आवेशावस्था में ही व्यतीत हो जाते हैं। यहां की आर्य समाज के प्रधान श्री ला० सन्तराम जी से हमें यह ज्ञात हुआ है, कि आप को इस प्रकार के रोगों की चिकित्सा का विशेष अनुभव है और प्रस्तुत पत्र भी हम माननीय प्रधान जी के आदेशानुसार ही आप की सेवा में भेज रहे हैं। आशा है कि आप हमारे प्रार्थना पत्र पर विशेष ध्यान देते हुए कोई ऐसी औषधि वी. पी. द्वारा शीघ्र भेजने की कृपा करेंगे कि जो जीवन से निराश रुग्णा को जीवन-दान देने के लिये जीवन सुधा सिद्ध होवे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां के कुछ चिकित्सक तो रोग का नाम हिस्टीरिया बताते हैं और कुछ टैटनी (Tetany)।

रोग विनिश्चय—साक्षेपक मूर्छा ।

द्रष्टव्य—हिस्टीरिया, टैटनी और उक्त रोग में क्या अन्तर है अथवा उक्त रोग की संप्राप्ति क्या है ? इस सम्बन्ध में "स्वानुभव सार समुच्चय" में प्रकाश डाला गया है।

चिकित्सा सम्बन्धी व्यवस्था

प्रति मात्रा—वात कुलान्तक विशेष $\frac{3}{4}$ रत्ती, बृहद्वात चिन्तामणि रस $\frac{3}{4}$ रत्ती, मल्ल सिन्दूर $\frac{1}{4}$ रत्ती।

प्रयोग—प्रातः सायं और रात्रि को । सहपान—मधु ।

अनुपान—त्रिफला फाण्ट ।

(२) सर्पगन्धा चूर्ण ६ रत्ती ।

प्रयोग समय—मध्याह्न ।

अनुपान—जटामांसी फाण्ट ।

उपर्युक्त व्यवस्थानुसार १५ दिन के लिये औषधि भेजी गई जिसका परिणाम रुग्णा के श्वसुर महोदय के १५-६-३५ के पत्रानुसार अधो लिखित है :—

बड़ी पुड़िया वाली औषधि (सर्पगन्धा) रुग्णा के लिये सात्म्य सिद्ध नहीं हुई, कारण कि उस के प्रयोग से रोग में वृद्धि हो जाती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(रोग में वृद्धि क्यों हुई ? इस सम्बन्ध में "स्वानुभव सार समुच्चय" में प्रकाश डाला गया है—लेखक) इस लिये उसे बन्द कर दिया है। परन्तु छोटी पुड़ियों ने इतना बड़ा चमत्कार दिखाया कि जिसे देखकर यहां के सब चिकित्सक अवाक् और आश्चर्य चकित हो गये हैं, कारण कि आपकी औषधि से पूर्व रुग्णा प्राय: अहोर्निश आवेशाक्रांत रहती थी और अब यह परिस्थिति है कि दिन रात में केवल २–३ बार ही दौरा पड़ता है और वह भी २–२ या ४–४ मिण्ट के लिये। औषधि केवल ५ दिन के लिये अवशेष है। इस लिये जितने दिन के लिये औषधि का प्रयोग आवश्यक समझें उतने दिन के लिये औषधि भेज देवें !

अस्तु, उपर्युक्त पत्र पर दृष्टिपात करने के अनन्तर २१ दिन के लिये सर्पगन्धा विरहित औषधि भेज दी गई। परिणाम स्वरूप रुग्णा पूर्णतया रोग-विमुक्त हो गई।

नोट – लेखक को रोग-विमुक्त होने वाली महिला के पति एवं उनके अन्य स्वजनों का वर्तमान पता तो ज्ञात नहीं है, किन्तु श्री ला० राम लाल जी के पितृव्यात्मज श्री ला० जयगोपाल जी का पता ज्ञात है और चिकित्सा विषयक उपर्युक्त घटना भी उनके परिवार के समक्ष घटित हुई थी। इस लिये सत्य समर्थनार्थ श्री ला० जयगोपाल जी का पता ही लिखा जा रहा है—जो अधो लिखित है।

M/s. B. R. Jai Gopal Anand
Army Contrector
Cownpur. (U. P.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[८]

रोग—तीव्र उदर शूल दिनांक २८-१०-३६

Acute Abdominal Colic

रोगी—सुलतान मुहम्मद फ़ीरोज़-उ-द्दीन ख़ान। आयु ५० वर्ष के लगभग।

निवास स्थान—गढ़ी दुपट्टा ज़िला मुज़फ़्फ़राबाद।

रोग विवरण—उपर्युक्त तिथि को अकस्मात् ही रोगी महोदय को मलावरोध के कारण तीव्र उदर शूल हुआ। शूल की शान्ति के लिये एक ऐलोपैथिक चिकित्सक को आमन्त्रित किया गया। चिकित्सक महोदय ने यह जानना तो अवश्य न समझा कि शूल का मूल कारण क्या है। परन्तु अपने उस हथियार को तुरन्त व्यवहार में लाना अनिवार्य समझा कि जिस हथियार को आधुनिक चिकित्सा पद्धति के कर्णधार अहिफेन सार (मार्फ़िया) के नाम से अधिकांश में अनावश्यक रूप से व्यवहार में लाते हैं। परिणाम स्वरूप अहिफेन सार की उग्रता से रोगी महोदय को निरन्तर वमन शुरू हो गई और वमन की उग्रता के परिणाम स्वरूप ज्वर का जन्म भी हो गया। अतएव रोगी महोदय शूल को तो अस्थाई रूप से भूल गये, लेकिन वमन और ज्वर की शान्ति के लिये प्रयत्नशील हो गये और प्रयोजन-सिद्धि के लिये उन्होंने उन उच्च-कोटि के दो चिकित्सा-चूड़ामणियों का सहयोग प्राप्त किया, कि जिन चिकित्सा-चूड़ामणियों को कश्मीर के ऐलोपैथिक चिकित्सकों में विशेष उच्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान प्राप्त है । परिणाम स्वरूप चिकित्सा चूड़ामणियों ने यह विचार व्यक्त किया, कि रोगी आन्त्र-पुच्छ-प्रदाह (Appendacitis) द्वारा पीड़ित है, अत एव २४ घण्टे के भीतर ही रोगी का ओपरेशन होना चाहिये, क्योंकि २४ घण्टे के बाद रोग के असाध्य हो जाने की सम्भावना है।

अस्तु, ओपरेशन की तैयारी भी शुरू हो गई। परन्तु ओपरेशन से पूर्व रोगी महोदय ने आधुनिक चिकित्सा-पद्धति के कला-प्रवीण कर्ण-धारों के ओपरेशन विषयक विचार का इन पंक्तियों के लेखक की अल्पज्ञता द्वारा विश्लेषण कराना अनिवार्य समझा । अत एव परा-मर्शार्थ लेखक को भी स्मरण किया गया । परिणाम स्वरूप लेखक ने अपनी अल्पज्ञता के आश्रित यह विचार व्यक्त किया, कि आन्त्र-पुच्छ प्रदाह का जो प्रधान लक्षण है (जिसका उल्लेख स्वानुभव सार समुच्चय में आया है) उस का तो अभाव है, परन्तु अहिफेन सार (मार्फिये) को अनावश्यक रूप से व्यवहार में लाने का परिणाम स्पष्ट दृष्टिगत हो रहा है। अत एव ओपरेशन की तो आवश्यकता नहीं है, लेकिन अहिफेन सार के अनिष्ट के प्रतिकारार्थ मल-परिष्कार अनिवार्य है । अस्तु, स्वविचारानुसार ही लेखक ने अहिफेन सार के शिकार रोगी के उपचारार्थ अधो लिखित चिकित्सा की व्यवस्था की ।

चिकित्सा

प्रति मात्रा—शूल गज केसरी १ रत्ती, अग्निमुख चूर्ण ४ रत्ती ।

प्रयोग—दो-दो घण्टे के अन्तर से ।

अनुपान—एक घूंट जल और ऊपर से एक पान का सादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्ता धीरे २ चबा कर खा लिया जाय।

(२) **प्रति मात्रा**—शिवाक्षार पाचन चूर्ण ८ माशा।

प्रयोग—शूल गज केसरी से एक घण्टा पश्चात्।

अनुपान—कवोष्ण जल।

परिणाम—५-६ घण्टे के भीतर ही रोगी को २-३ दस्त हुए, फलस्वरूप शूल सहित सब उपद्रव शान्त हो गये और शूल सहित उपद्रवों की शान्ति का परिणाम यह—कि रोग-विमुक्त होने वाले महानुभाव ने लेखक के समक्ष इन शब्दों द्वारा आयुर्वेद की आराधना की कि "वैद्य जी! हज़ार हज़ार शुक्रिया है आपका, आपके शूलगज केसरी रस का और शिवाक्षार पाचन चूर्ण का, कि जिनकी बरकत से बन्दा खुदाबन्दाने तिब्बइ जदीद (आधुनिक चिकित्सा पद्धति के महाप्रभुओं) के खुदाई फ़तवा का शिकार बनने से बच गया है।" जिस का उत्तर लेखक ने सुलतान साहिब को यह दिया कि :—

तबीबों का है फ़र्ज़ देना दवा का।
शफ़ा बख़्शना काम है किब्रिया का॥

सत्य समर्थनार्थ रोग-विमुक्त होने वाले महानुभाव का पूरा पता—

सुलतान मुहम्मद फ़ीरोज़-उ-द्दीन ख़ान जागीरदार।
गढ़ी दुपट्टा, ज़िला मुज़फ़्फ़राबाद,
(पाकिस्तानाधीन कश्मीर)

द्रष्टव्य

इस सत्यता को स्वीकार करने में तो लेखक को संकोच नहीं है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक चिकित्सा पद्धति के शल्य विभाग (Surgical side) ने जो असाधारण उन्नति की है, यदि उसका प्रयोग अहिफेनसार के प्रयोगवत् अनावश्यक छुरी के प्रयोग के रूप में न हो तो वह उन्नति संसार के लिये वरदान रूप है, परन्तु लेखक इस वास्तविकता को व्यक्त करने में भी हानि नहीं समझता कि सुलतान साहिब (उपर्युक्त विवरण सम्बन्धी रोगी महोदय) को स्वास्थ्य-सुख प्रदान करने के लिये आधुनिक चिकित्सा पद्धति के महाप्रभुओं ने जिस वैज्ञानिकता का सुपरिचय दिया है, वह वैज्ञानिकता वही है कि जिस वैज्ञानिकता के विषय में पूज्य पं० नेहरू जी ने तो अपने उपदेश के अन्तर्गत यह संकेत किया है कि ऐसे व्यक्तियों का दिया फिर काम नहीं करता और वे सर्वज्ञाता समझ आगे काम करना पसन्द नहीं करते और डा० मैगएडी आदि आधुनिक चिकित्सा पद्धति के कतिपय विशेषज्ञों ने उस वैज्ञानिकता से निराश होकर निम्नाङ्कित निराशावाद का प्रदर्शन किया है—

(१) "मुझे इस तथ्य को स्वीकार करने में संकोच नहीं है कि हम रोग की हक़ीकत से नितान्त अविज्ञ हैं। हमारे लिये इलाज करने से यह अधिक श्रेयस्कर है कि हम अपने रोगियों को प्रकृति के प्रति सौंप देवें।"

—मैगएडी।

(२) "मैं एक पुराना डाक्टर हूँ, परन्तु सच्च कहे बिना नहीं रह सकता, कि हम अन्धकार में सिर फोड़ रहे हैं।"

—डग्लस मैक्लेगन।

(३) "हमारी चिकित्सा पद्धति की उन्नति रोगियों का संहार करना है।"

—स्टेसली कोपर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ह० मुहम्मद हसन क़र्शी कृत 'जामा-उल-हिक्मत' नामक उर्दू पुस्तक से उद्धृत)

---

[९]

रोग—वृक्क शूल ति० २३-८-४३

Renal Colic

Gurukul Kangri Library

रोगी— श्री० ला० गुरुसहाई मल जी—आयु लगभग—५० वर्ष।

निवास स्थान—श्रीनगर (काश्मीर)।

पूर्व वृत्त—(रोगी के कथनानुसार) एक वर्ष पूर्व रोगी को वृक्क शूल का दौरा पड़ा, जो ऐलोपैथिक उपचार से तीन दिन में शान्त हुआ। परन्तु शूल की शान्ति वृक्क विकारजन्य ज्वर में परिणत हो गई। अस्तु, ज्वर से जान छुड़ाने के लिये रोगी महोदय ने एक नामाख्यात योरुपीयन डाक्टर (डा० रालन्स) का सहयोग प्राप्त किया। निरन्तर छः मास तक योरुपीयन डाक्टर महोदय ने रोगी का उपचार किया। परिणाम स्वरूप रोगी महोदय ज्वर से तो विमुक्त हो गये, परन्तु वृक्क शूल के दौरे पुनः शुरू हो गये। अस्तु, वृक्कशूल के दौरों का कष्ट जब असह्य हो गया तो दिनाङ्क २३-८-४३ को रात के १२ बजे रोगी ने दौरे की हालत में ही उपचारार्थ लेखक को स्मरण किया। परिणाम स्वरूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक जब रोगी के निवास स्थान में पहुंचा तो लेखक ने रोगी को अधो लिखित लक्षणों से युक्त पाया :—

विद्यमान लक्षण—कटि प्रदेश से ले कर उदर और उरु प्रदेश तक असह्य व्यथा, मूत्रावरोध तथा मूत्राशय किसी अंश तक उत्सन्न और व्यथायुक्त तथा रोगी को विवमिषा की वजह से वमन की इच्छा।

अस्तु उपर्युक्त लक्षणावली के आधार पर जो चिकित्सा हुई तत्सम्बन्धी विवरण सपरिणाम अधो लिखित है :—

चिकित्सा

(१) **प्रति मात्रा**—पञ्चपाषाण भस्म २ रत्ती, मूली क्षार २ र० द्राक्षा क्षार २ रत्ती, सिता ६ रत्ती।

प्रयोग—२–२ घण्टे के अन्तर से।

अनुपान—जल।

परिणाम—तीन मात्राओं के प्रयोग से शूल तो शान्त हो गया। परन्तु मूत्रावरोध की पूर्णतया निवृत्ति न हुई। इस लिये समझा यह गया कि जो अश्मरी मूत्राशय और मूत्र-पिंड के मार्ग में रुकी हुई थी। वह स्थान-च्युत होकर और मूत्राशय में पहुंच कर मूत्र कृच्छ्र का कारण बन गई है। अत एव औषधि के साथ अनुपान रूप गोक्षुरादि क्वाथ की व्यवस्था की गई। चूंकि दूसरे दिन दो बजे तक मूत्र कृच्छ्र की-निवृत्ति नहीं हुई थी इसलिये रोगी ने मूत्र-निसारक शालाका (Cathetar) द्वारा मूत्र को निसारित कराने की इच्छा व्यक्त की। उत्तर स्वरूप रोगी को यह निर्देश किया गया, कि गरम जल के टब में बैठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर वस्ति प्रदेश पर गीले तौलिये द्वारा धीरे धीरे मर्दन करें और औषधि का प्रयोग पूर्ववत् ही जारी रखें। रोगी महोदय ने निर्देश का अनुकरण किया। फलस्वरूप थोड़ी देर के बाद बड़े वेग के साथ पानी के टब में ही मूत्र का परिस्रवण हुआ और मूत्र के साथ ही अश्मरी के छोटे छोटे ४–५ कणों का भी उत्सर्जन हो गया।

अस्तु उपर्युक्त घटना का काश्मीर के कला प्रवीण धन्वन्तरि (सर्जन) एवं रोगी महोदय के सुहृद्वर श्री० डा० बलवन्त सिंह जी (भू० पू० डायरेक्टर आफ़ मेडीकल डिपार्टमेंट) को जब ज्ञान हुआ तो उन्होंने अपने सुहृद्वर के निवास स्थान पर पहुंच कर निम्न शब्दों द्वारा रोगी महोदय को बधाई दी। यह आप का सौभाग्य है कि आप के वृक्क-स्थल का अस्त्रों द्वारा ओपरेशन होने के स्थान में वृक्काश्मरी का औषधि द्वारा ही ओपरेशन हो गया है। अस्तु जब वृक्काश्मरी का भेदन और उच्छेदन हो गया तो तदनन्तर रोग के मूलोच्छेद के लिये अधो लिखित व्यवस्था की गई।

(१) **प्रति मात्रा**—पञ्च पाषाण भस्म २ रत्ती, मूली क्षार २ र० षड़भुजत्वक क्षार ३ रत्ती, सिता ६ रत्ती।

प्रयोग—प्रातः सायं।

अनुपान—गोक्षुरादि कषाय।

(२) **प्रति मात्रा**—गोक्षुरादि गुग्गल १ माशा।

प्रयोग—मध्याह्न तथा रात्रि को शय्यन काल से पूर्व।

अनुपान—जल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१॥ मास तक उपर्युक्त व्यवस्थानुसार औषधियों का प्रयोग हुआ परिणाम स्वरूप रोग का स्थाई रूप से मूलोच्छेद हो गया।

सत्य समर्थनार्थ रोग विमुक्त होने वाले महानुभाव का पूरा पता :—

श्री ला० गुरु सहाई मल जी सहगल
न० २१ वज़ीर बाग श्रीनगर (काश्मीर)।

---

[१०]

रोग—हृच्छूल ति० २५-११-२४

Angina Pectoris

रोगी—लेखक के पितृव्य स्व० श्री मु० राम चन्द्र जी—
आयु—४५ वर्ष।

निवास स्थान—श्रीनगर (काश्मीर)।

रोग विवरण—उपर्युक्त तिथि को रावलपिण्डी में लेखक को स्व० चचा (रोगी) जी का एक कार्ड मिला, जिस में यह शब्द लिखे थे कि मैं एक हृद्विकार सम्बन्धी विशेष भयावह रोग से पीड़ित हूं। रोग का नाम डाक्टर अन्जाईना पेक्टोरिस बताते हैं। तुम्हारी चची रात भर मेरे सिरहाने बैठी रहती है और सुबह तक उसके आंसू नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूखते। यदि तुम ही आ जाते तो कुछ धैर्य मिल जाता।

अस्तु जिस दिन लेखक को पूज्य चचा जी का कार्ड मिला उससे दूसरे दिन ही प्रात: काल लेखक रावलपिण्डी श्रीनगर रवाना हो गया। श्रीनगर पहुंचने पर ज्ञात हुआ कि ख्यातनामा योरुपियन ऐलोपैथिक चिकित्सक डा० श्री नीव महोदय की चिकित्सा हो रही है और आहारार्थ रोगी को डबल रोटी के साथ पालक का शाक मिल रहा है। अस्तु, चिकित्सा विषयक व्यवस्थादि से लेखक जब अवगत होगया तो तदनन्तर लेखक ने रोग के अधोलिखित लक्षणों को आलक्षित किया।

विद्यमान लक्षण—रोगी का उदर साटोप और वायु पूर्ण, अन्न विक्षेप तथा यदा कदा हृदयस्थल के समीप वेदना का आभास और हृदयावसाद की सी परिस्थिति, रोगी का मुख मलीन और मन उदासीन। अस्तु, उपर्युक्त लक्षणावली के आधार पर लेखक की अल्पज्ञता (जो अभी शैशव काल में ही थी) इस निष्कर्ष पर पहुंची, कि रोग का मूल कारण तो उदरस्थ वायु है और विलायती भोजन अर्थात् डबल रोटी और उबली हुई पालक द्वारा वायु में वृद्धि होती जा रही है। परिणाम स्वरूप लेखक ने रोग के प्रतिकारार्थ अधोलिखित चिकित्सा की व्यवस्था की।

(१) **प्रति मात्रा**—दवा उल मिस्क मोतदिल २ माशा, खमीरा मरवारीद (मुक्तावलेह) २ माशा।

प्रयोग—प्रात: सायं।

अनुपान—जल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) अग्निमुख चूर्ण मात्रा ३ रत्ती ।

प्रयोग दिन में दो-तीन बार ।

अनुपान—जल ।

(३) **अग्नि तुण्डी वटी**—मात्रा १ से २ गोली तक ।

प्रयोग—भोजनोपरान्त दोनों समय ।

अनुपान—जल ।

परिणाम—१५-२० दिन की चिकित्सा से रोगी की क्षुधा बढ़ बढ़ गई, अनाह और आटोप की निवृत्ति हो गई और हृच्छूल की शान्ति हो गई । फलस्वरूप तदुपरांत पूज्य चचा जी जलवायु परिवर्तनार्थ प्रथम तो लाहौर गये और लाहौर से बम्बई रवाना हो गये । परन्तु रोग का भय किसी अंश तक उन के मन में विद्यमान ही रहा । जिसकी निवृत्ति अन्ततः किङ्ग जार्ज के पारिवारिक चिकित्सक (जो उन दिनों में मनोरंजनार्थ बम्बई पधारे हुए थे) के इन शब्दों द्वारा हुई, कि कौन मूर्ख कहता है, कि आप हृद्विकार ग्रस्त हैं । उक्त डाक्टर महोदय से साक्षात्कार होने का अवसर यूं आया, कि उनकी बम्बई के सुप्रसिद्ध डाक्टर श्री आर. बी. पटेल, एम. डी. के हां चाय थी और स्व० चचा जी श्री डाक्टर पटेल जी के हां अतिथि के रूप में स्थित थे ।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[११]

रोग—नाड़ीव्रण के रूप में अस्थिक्षय ति० २७-१-३६

Tuberculosis of Bone

रोगी—श्रीमती रुक्मणि देवी । आयु—२० वर्ष ।

निवास स्थान—सहारन पुर ।

रोग विवरण—रुग्णा के एक हाथ की पृष्ठ पर प्रथम नासूर वत् तीन नाड़ी व्रण हुए । तदुपरांत रुग्णा को मन्द २ ज्वर रहने लग गया । परिणाम स्वरूप रुग्णा का शरीर अस्थि कङ्कालवत् हो गया । चिकित्सा के विचार से प्रथम रुग्णा को तत्कालीन सहारन पुर के सिवल सर्जन को दिखाया गया । तदुपरान्त अस्थिकङ्काल रुग्णा को चिकित्सार्थ देहली में डा० जोशी जी के हस्पताल में ले जाया गया । अस्तु, रोग विनिश्चय तो दोनों जगह अस्थि क्षय हुआ और रोग की निवृत्ति के लिए उभय महानुभावों ने यह विचार व्यक्त किया, कि रुग्णा को अपना रोगाक्रांत हाथ ओपरेशन द्वारा तुरन्त कटवा देना चाहिये, नहीं तो इसे अपने जीवन से ही हाथ धोने पड़ेंगे । परन्तु रुग्णा ओपरेशन के लिये तैयार न हुई । परिणामस्वरूप रुग्णा को देहली से पुनः सहारनपुर लाया गया । चूंकि संयोग से उन दिनों में लेखक भी अपने एक मित्र के हां साहरनपुर में ही स्थित था, इस लिये लेखक से भी परामर्श किया गया । फलस्वरूप लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने अस्थिकङ्काल रुग्णा के लिये अधो लिखित चिकित्सा की व्यवस्था की और स्वव्यवस्थानुसार जम्मू पहुंच कर औषधि भी भेज दी।

चिकित्सा सम्बन्धी व्यवस्था

प्रति मात्रा—अष्टमूर्ति रस $\frac{1}{4}$ रत्ती, स्वर्ण वसन्त मालती १ रत्ती, सुधा कल्प १ रत्ती।

प्रयोग – प्रातः मध्याह्न और सायं काल।

सहपान—मधु।

(२) **निर्गुण्डी तेल**—स्वयं बना लिया जाय।

प्रयोग—दिन में चार-पांच बार तेल में रुई का फाया तर करके व्रणों पर रख कर ऊपर पीपल का पत्ता रख कर पट्टी बांध दी जाय।

परिणाम—यद्यपि निर्गुण्डी तेल को तो व्यवहार में नहीं लाया गया, जैसा कि रुग्णा के पिता श्री सेठ कृष्ण गोपाल जी के पत्र से ज्ञात हुआ था, क्योंकि बाह्योपचार का भार वहन किसी अन्य व्रणोपचारक [जराह] ने स्वनिर्मित मरहमादि द्वारा किया था। परन्तु आभ्यन्तिक उपचार लेखक द्वारा प्रेषित औषधि द्वारा ही हुआ। फलस्वरूप रुग्णा रोग जन्य ज्वर एवं तज्जन्य क्षीणता से तो १ मास में ही निर्मुक्त हो गई थी, लेकिन औषधि का प्रयोग दो ढाई मास तक चालू रहा। परिणाम यह, कि रुग्णा को न तो हाथ से ही वञ्चित होना पड़ा, न जीवन से ही हाथ धोने पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य समर्थनार्थ रोग विमुक्त होने वाली महिला के पूज्य पिता का पता :—

श्री सेठ कृष्ण गोपाल जी माहेश्वरी
मुहल्ला खुमरान, सहारन पुर, यू० पी० !

---

[१२]

रोग—उदरक ग्रन्थियां ति० २३-६-३४

Abdominal glands

रोगी—ध० प० ला० चेत राम चोपड़ा। आयु—लगभग ३० वर्ष।

निवास स्थान—जम्मू। चिकित्सा स्थान—श्रीनगर (काश्मीर)।

पूर्व वृत्त--लेखक के चिकित्साधीन आने से १॥ वर्ष पूर्व (जैसा कि रुग्णा से ज्ञात हुआ था) रुग्णा को उदर व्यथा सहित अजीर्ण आदि की शिकायत हुई और शरीर दिन प्रति दिन दुर्बल होना शुरू हो गया। रोग के प्रतिकारार्थ ऐलोपैथिक उपचार हुआ जो सात्म्य सिद्ध न हुआ। तदनन्तर स्वर्ण पर्पटी आदि द्वारा आयुर्वेदीय चिकित्सा हुई जिस से यथेष्ट लाभ हुआ। परन्तु लाभ स्थाई सिद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न हुआ। अस्तु, उपर्युक्त तिथि को रुग्णा की चिकित्सार्थ लेखक को स्मरण किया।

विद्यमान लक्षण--नाभि के इतस्ततः व्यथा-युक्त तीन चार छोटी बड़ी ग्रन्थियों की विद्यमानता, अन्न विद्वेष, आमाशय से ऊपर आहार पथ दाहान्वित, मल का किसी अंश तक अवरोध, गात्रोत्ताप १०० के लगभग और शरीर क्षीण तथा बलहीन।

चिकित्सा

(१) मतान्तर धात्री लोह मात्रा ४ रत्ती।

प्रयोग—भोजन से पूर्व व भोजनोत्तर दोनों समय।

अनुपान– गो दुग्ध अथवा जल।

(२) ताम्र कल्प मात्रा १ रत्ती।

प्रयोग—भोजन के मध्य में दोनों समय।

सहपान--मधु।

(३) शिवाक्षार पाचन चूर्ण मात्रा ४ माशा।

प्रयोग--जिस दिन मलावरोध हो उस दिन प्रातः काल १-१ घण्टे के अन्तर से दो से तीन मात्रा तक।

अनुपान— कवोष्ण जल।

पथ्य— सुपाच्य अन्न पान।

परिणाम--यद्यपि उदरस्थ ग्रन्थियों के विलय होने में तो तीन चार मास लग गये और इस बीच में यदा कदा कुछ अन्य औषधियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथा द्राक्षासव, कुमारी आसव और नृपति वल्लभ रस आदि का भी प्रयोग हुआ। परन्तु उपर्युक्त व्यवस्था से रोग के अधिकांश लक्षणों का एक मास में ही ह्रास हो गया था। परिणाम स्वरूप न केवल रुग्णा का शरीर-भार ही कई सेर बढ़ गया था अपितु वह शय्या छोड़ कर चलने फिरने भी लग गई थी। इसके अतिरिक्त राज वैद्य श्री विश्वनाथ जी ने भी शीत काल में रुग्णा को कुछ पौष्टिक औषधियां सेवन कराईं, परन्तु उदरक ग्रन्थियों को विलीन करने का श्रेय मतान्तर धातृलोह और ताम्र कल्प को ही प्राप्त है।

सत्य समर्थनार्थ रोग विमुक्ता के पूज्य पति का वर्तमान पता:—

श्री ला० चेतराम जी चोपड़ा एम० ए०
रिटायर्ड गवर्नर जम्मू (काश्मीर)।

द्रष्टव्य

उपर्युक्त चिकित्सा विषयक विवरण में जिन उदरक ग्रन्थियों का उल्लेख आया है उन्हें वर्तमान काल में क्षय रोग का एक रूप समझा जाता है और ऐलोपैथिक चिकित्सक उक्त रोग को उदरक क्षय (Abdominal Phathesis) के नाम से अभिहित करते हैं। परन्तु लेखक की यह धारणा है कि चाहे उसे क्षय मान भी लिया जाय तब भी वह गुल्म रोग का ही विकृत रूप है और लेखक की धारणा का आधार महर्षि चरक का वह संकेत है, कि जिस संकेत का उल्लेख चरक संहिता के गुल्माधिकार में 'राजयक्ष्मणां चाति वृद्धः' शब्दों के रूप में आया है और रोग की चिकित्सा के विषय में लेखक का यह अनुभव है कि यदि रोग अतिसार युक्त हो तब तो पर्पटियों के प्रयोग से विशेष लाभ होता है और यदि रोगी को मलावरोध की शिकायत हो तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपर्युक्त चिकित्सा विशेष फलदायक सिद्ध होती है और उक्त चिकित्सा क्रम का संकेत लेखक को कनखल (हरिद्वार) निवासी वैद्यराज श्री पं० रामचन्द्र जी से मिला था। इस लिये लेखक स्वर्गीय वैद्यराज जी का विशेष आभारी है।

---

[१३]

रोग—सोरक्षत आन्त्र क्षय दिनांक १५-६-२६

Intes tinal T. B. with Consumption

रोगी--श्रीमती भगवती देवी धर्मपत्नी महावीर प्रशाद। आयु--३५ वर्ष

निवास स्थान—करनाल।

पूर्व वृत्त--(रुग्णा के कथनानुसार) १ वर्ष पूर्व प्रथमतः रुग्णा को शुष्क कास शुरू हुई, तदनन्तर ज्वराभास हुआ, तदुपरान्त कास द्वारा कफ़ का उत्सर्जन और यदा कदा कफ में रक्त का सम्मिश्रण, निरन्तर ७-८ मास तक ऐलोपैथिक उपचार हुआ, परिणाम यह कि रुग्णा को दस्त भी शुरू हो गये। अतएव ऐलोपैथी से निराश हो कर रुग्णा देसी इलाज के लिये देहली पहुंच गई। अस्तु, देहली के सुप्रसिद्ध हकीमों का इलाज भी हुआ और इलाज से कुछ लाभ भी हुआ, परन्तु वह लाभ स्थायी और सन्तोषजनक सिद्ध न हुआ। अतएव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने सहोदर श्री सीता राम चौरसिया के आदेशानुसार रुग्णा अधो लिखित लक्षणों सहित चिकित्सा एवं जलवायु परिवर्तनार्थ जून १६२६ ई० में श्रीनगर (काश्मीर) पहुंच गई।

विद्यमान लक्षण – नाड़ी क्षीण, गात्रोत्ताप ६६ से १०१ तक, कास द्वारा पतले कफ का उत्सर्जन और उस के साथ अल्पांश में रक्त का सम्मिश्रण तथा दिन में ७-८ बार दस्त की हाजत।

चिकित्सा

[१] **प्रति मात्रा**—स्वर्ण बसन्त मालती आधी रत्ती, आन्त्र शोथान्तक रस आधी रत्ती, सुधा कल्प १ रत्ती- लाई चूर्ण ६ रत्ती।

प्रयोग प्रातः और दिन के ४ बजे।

सहपान—मधु।

[२] **प्रति मात्रा**—एलादि चूर्ण १ माशा, स्वर्ण बसन्तमालती ½ रत्ती, नारदीय लक्ष्मी विलास रस १ रत्ती।

प्रयोग—दिन के १२ बजे, सायं ७ बजे और रात को शयन काल से आधा घण्टा पूर्व।

सहपान—बृहद्वासावलेह ६ माशा।

पथ्य के रूप में आहार—१ सेर गो दुग्ध आधा जल और २–३ पिप्पली डाल कर मन्दाग्नि पर पकाया जाय। जब पकते २ जल सूख जाय तो दूध को छान कर रख लिया जाय और उसे थोड़ा थोड़ा करके दिन में ३-४ बार पिया जाय। इसके अतिरिक्त मीठे सेब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अनार का रस भी दिन में २-३ बार थोड़ी थोड़ी मात्रा में दिया जा सकता है।

परिणाम – धीरे धीरे सब लक्षणों में कमी होती गई और १॥ मास के अनन्तर रुग्णा अन्नाहार को भी पचाने लग गई। निरन्तर तीन मास तक चिकित्सा हुई। फलस्वरूप रुग्णा सुस्वस्थ होकर दो-तीन मील रोज़ाना भ्रमण भी करने लग गई और शायद गत वर्ष किसी अन्य रोग से रुग्णा का देहावसान हुआ है।

सत्य समर्थनार्थ पता :—

श्री महावीर प्रसाद मूल चन्द चौरासिया

सदर बाजार करनाल।

अथवा

श्री ज्ञानचन्द चौरासिया,

लाल चौक, श्रीनगर [कश्मीर]।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१४]

रोग—अपतन्त्रक ति० १०-८-३३

Hystera

रोगी—धर्मपत्नी श्रीमान् पण्डित श्रीकण्ठ जी। आयु—२० वर्ष।

निवास स्थान—श्रीनगर (काश्मीर)।

रोग विवरण—उपर्युक्त तिथि को लेखक किसी अपने कार्य-वश कस्टम हाऊस में गया। रुग्णा के पति महोदय ने असिस्टेण्ट कस्टम इन्सपैक्टर के रूप में बातों २ में लेखक से यह प्रश्न किया, कि आप की आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति में कोई हिस्टीरिया की भी उत्तम औषधि है, अथवा नहीं ? जिसका उत्तर लेखक ने यह दिया, कि औषधियां तो अनेक हैं, परन्तु औषधि की व्यवस्था से पूर्व रोग की परिस्थिति का ज्ञान होना आवश्यक है। प्रत्युत्तर स्वरूप पृच्छक महोदय ने यह संकेत किया, कि रुग्णा को दिन रात में २०-२२ दौरे पड़ते हैं और ऐलोपैथिक इलाज असफल हो चुका है। अतएव आप स्वयं ही कल मेरे साथ चल कर रुग्णा की परिस्थिति पर दृष्टिपात कर लेवें। अस्तु दूसरे दिन जब रुग्णा को दौरे की हालत में जा कर देखा गया तो यह भी ज्ञात हुआ, कि रुग्णा को रजः कृच्छ्र की शिकायत भी है। अतएव चिकित्सा विषयक अधोलिखित व्यवस्था की गई :-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा

(१) प्रति मात्रा—स्वल्पवातकुलांतक रस १ रत्ती, रस सिन्दूर १ रत्ती, जवाहिर मौहरा $\frac{1}{3}$ रत्ती।

प्रयोग--दिन में ३ बार।

सहपान--मधु।

अनुपान—जटा मांसी फाण्ट।

(१) अनुपान के अतिरिक्त भी जटा मांसी फाण्ट को दिन में दो-तीन बार ढाई-ढाई तोले की मात्रा में प्रयोग कराया जाय।

परिणाम--तीन सप्ताह में ही रजः कृच्छ्र सहित रोग का तिरोभाव हो गया।

सत्य समर्थनार्थ पता :—

श्री पं० श्री कण्ठ जी रिटायर्ड कस्टम इन्सपैक्टर
छत्तावल, श्रीनगर (कश्मीर)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१५]

रोग—अपतन्त्रक व हृत्कम्प सहित जरायु प्रदाह ति० ८-७-३६

Metritis with Hysteria & Heart Palpitation

रोगी—एक सुप्रसिद्ध व्यापारी की सहधर्मिणी—आयु ४२ वर्ष।

निवास स्थान—श्रीनगर (काश्मीर)।

रोग विवरण—(रुग्णा के पति महोदय द्वारा विवर्णित) रुग्णा को हृत्कम्प की शिकायत तीन चार वर्ष से है, मासिक धर्म अनियमित और सकष्ट होता है। जननेन्द्रिय द्वार से दुर्गन्धयुक्त स्राव का परिस्रवण होता है, तल पेट और कटि प्रदेश में ऋतु काल के दिनों में असह्य व्यथा होती है, दिन रात में दो-तीन दौरे हिस्टीरिया के भी पड़ते हैं, क्षीणता और दुर्बलता इतनी है कि रुग्णा के लिये शय्या पर पड़े पड़े करवट लेना भी असम्भव हो गया है, कारण कि रुग्णा जब भी करवट बदलने के लिये इतराश्रित प्रयत्न करती है तो हृत्स्पन्दन में इतनी इतनी वृद्धि हो जाती है कि उस से रुग्णा मूर्छित हो जाती है। चिकित्सा शुरू से ही ऐलोपैथिक हो रही है और अब भी रुग्णा डा... ......रिटायर्ड चीफ मेडीकल आफिसर और कैप्टन डा०......... एम. बी. बी. एस की चिकित्साधीन है। परन्तु रुग्णा की शारीरिक परिस्थिति दिन प्रतिदिन अधो गति की ओर ही जा रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्तु, उपर्युक्त विवरण को कर्णगोचर करने के अनन्तर रुग्णा को दृष्टिगोचर किया गया और दर्शन, स्पर्शन तथा प्रश्नादि द्वारा रुग्णा का निरीक्षण किया गया। परिणाम स्वरूप रोग विनिश्चय वही हुआ, कि जिस का उल्लेख शीर्षक में आ चुका है। तदनन्तर अधो लिखित चिकित्सा की व्यवस्था की गई।

चिकित्सा

(१) **प्रति मात्रा**—कृष्ण चतुर्मुख रस $\frac{1}{2}$ रत्ती, वात कुलांतक विशेष १ रत्ती।

प्रयोग—प्रातः ८ बजे व सायं ५ बजे।

सहपान—मधु।

(२) **प्रति मात्रा**—जवाहिर मौहरा $\frac{1}{2}$ रत्ती, माणक्य पिष्टि एक रत्ती, मकरध्वज $\frac{1}{2}$ रत्ती।

प्रयोग—दिन के १ बजे और रात्रि को शयन काल से एक घण्टा पूर्व।

सहपान—मधु।

परिणाम— दस-बारह दिन में ही हृत्कम्प और हिस्टीरिया के दौरों में यथेष्ट कमी हो गई। अतएव जरायु प्रदाह की निवृत्ति के लिये अधो लिखित व्यवस्था की गई।

(१) नारी सुधा, मात्रा दो गोली।

प्रयोग—प्रातः सायं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपान—अर्क सौंफ और अर्क मकोय ढाई-ढाई तोला।

(२) **प्रति मात्रा**—जवाहिर मौहरा ½ रत्ती, मकरध्वज ½ रत्ती।

प्रयोग—दिन के एक बजे और रात्रि को शयन काल से एक घण्टा पूर्व।

सहपान—मधु।

परिणाम—१५ दिन के अनन्तर रुग्णा जब ऋतुमती हुई तो व्यथा भी कम हुई और ऋतु स्राव भी पहले से कुछ अधिक हुआ। अस्तु, मासिक धर्म की निवृत्ति के अनन्तर निम्न लिखित औषधियों की व्यवथा की गई :—

(१) **प्रति मात्रा**—स्वर्ण बसन्त मालती न० डेढ़ रत्ती माणिक्य पिष्टि १ रत्ती।

प्रयोग—प्रातः सायं।

सहपान व अनुपान—सेब का रस।

(२) **प्रति मात्रा**—जवाहर मौहरा ½ रत्ती, मकरध्वज ½ रत्ती।

प्रयोग—दिन के एक बजे।

सहपान—खमीरा गाव ज़बान।

(३) **प्रति मात्रा**—नारी-सुधा दो गोली।

प्रयोग—भोजनोपरान्त दोनों समय।

अनुपान—दशमूलारिष्ट डेढ़ तोला समभाग जल मिला कर।

उपर्युक्त व्यवस्थानुसार एक मास तक औषधियों का प्रयोग जारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा परन्तु यदा कदा जवाहिर मौहरा वाली मात्रा में वात कुलांतक विशेष का समावेश भी होता रहा।

परिणाम—हिस्टीरिया और हृत्कम्प का पूर्णतया तिरोभाव हो गया इस लिये अन्य औषधियां बन्द करके केवल नारी सुधा नामक गोलियों के व्यवहार की व्यवस्था की गई। फलस्वरूप रुग्णा जरायु प्रदाह से भी पूर्णतया विमुक्त हो गई। यद्यपि रोग मुक्त होने के अनन्तर भी यदा कदा जवाहिर मौहरा और मकरध्वज को सेवन कर लेती थी।

---

[१६]

रोग—जीर्णोन्माद ति० २७-११-३४

Chronic Insanity

रोगी—पं० शिवनाथ राय। आयु—२६ वर्ष!

निवास स्थान—जलाल पुर नौ, जि० गुजरां वाला।

पूर्व वृत्त—(रोगी की सहोदरा के जीवन साथी श्री पण्डित ज्ञान चन्द जी द्वारा विवर्णित) रोगी तीन वर्ष से उन्माद-ग्रस्त है, तब से अब तक अनेक डाक्टरों व हकीमों से रोगी का इलाज कराया जा चुका है और निरन्तर ७—८ मास तक रोगी को लाहौर के उन्मादाश्रम (Mental Hospital) का निवासी भी बनाया जा चुका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु किसी उपाय से भी रोगी को लाभ नहीं हुआ, अतएव जंज़ीरों से बांध कर चिकित्सार्थ रोगी को आज यहां (जम्मू) लाया गया है। रोगी की लाक्षणिक रूप-रेखा शुरू से ही यह है, कि १५ दिन तक तो रोग प्रचण्ड रहता है और १५ दिन तक रोगी किसी अंश तक शान्त रहता है।

विद्यमान लक्षण—प्रलाप अविरत और अनर्गल निद्रा का अभाव तथा खान-पान और मल-मूत्र त्याग के विषय में भी रोगी विमूढ़।

चिकित्सा

(१) **प्रति मात्रा**--चतुर्मुख रस एक रत्ती।

प्रयोग—प्रात: ७ बजे और सायं ५ बजे।

सहपान—मधु।

अनुपान—त्रिफला फाएट।

(२) **प्रति मात्रा**--माहेश्वर मिश्रण एक माशा, कृष्ण मिर्च चूर्ण दो रत्ती।

प्रयोग--दिन के बारह बजे और रात के आठ बजे।

अनुपान--गुलाब जल।

परिणाम--२०-२२ दिन की चिकित्सा के परिणाम स्वरूप अनिद्रा, अक्षुधा तथा प्रलाप आदि की तो निवृत्ति हो गई, परन्तु रोगी के मुख से लाला का स्रवण होने लग गया और हाथों में भी कुछ कम्पन शुरू हो गया। अतएव माहेश्वर मिश्रण को बंद कर दिया गया

Gurukul Kangri Library

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि माहेश्वर मिश्रण का प्रधान घटक सर्पगन्धा है और सर्पगन्धा के प्रयोग से किसी २ रोगी के हाथों में कम्पन शुरू हो जाता है जो सर्पगन्धा बन्द करने पर दो-तीन दिनों में स्वतः ही बन्द हो जाता है। अस्तु, माहेश्वर मिश्रण बन्द करने पर अधो लिखित व्यवस्था की गई :-

(१) **प्रति मात्रा**--चतुर्मुख रस एक रत्ती, वात कुलांतक ½ रत्ती।

प्रयोग--प्रातः सायं।

सहपान--मधु।

परिणाम--तीन चार दिन में ही हस्त कम्प और लाला स्राव की तो निवृत्ति हो गई, परन्तु प्रलाप पुनः शुरू हो गया। अतएव दिन में दो बार माहेश्वर मिश्रण ६-६ रत्ती की मात्रा में प्रयोग कराने की पुनः व्यवस्था की गई और चतुर्मुख रसादि का प्रयोग चालू रहा। अन्तिम परिणाम यह, कि दिनाङ्क २-१-३५ को रोगी पूर्ण स्वस्थ हो कर जम्मू से स्वस्थान (जलाल पुर नौ) को प्रस्थान कर गया और देश विभाजन के बाद रोग विमुक्त हो जाने वाले महानुभाव का किसी अन्य रोग से कानपुर में देहावसान हुआ।

सत्य समर्थनार्थ श्री पण्डित ज्ञान चन्द जी का (जिनके निवास स्थान में रोगी रोग विमुक्त हुआ था) पता :—

श्री पण्डित ज्ञान चन्द जी पुरोहित
मलहोत्रा स्ट्रीट, जम्मू (काश्मीर)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१७]

रोग—तरुणोन्माद ति० ३-१२-४५

Acute Insanity

रोगी--ऐलोपैथिक डाक्टर के रूप में एक सरकारी कर्मचारी। आयु--लगभग ४० वर्ष।

निवास स्थान—जम्मू।

पूर्व वृत्त--उपर्युक्त तिथि से तीन मास पूर्व (जैसा कि रोगी के अभिभावकों ने बताया था) जनाब डाक्टर साहिब आन्त्रिक ज्वर (Typhoid Fever) द्वारा पीड़ित हुए। अस्तु, अपनी अवधि समाप्त करने के अनन्तर ज्वर तो उतर गया, परन्तु इसे आप चाहे देव गति समझें अथवा ऐलोपैथिक औषधियों की प्रतिक्रिया का परिणाम, कि ज्वर उतरने के अनन्तर उन्माद के रूप में अपना उपद्रव पीछे छोड़ गया। चूंकि रोगी महोदय सरकारी कर्मचारी थे, इस लिये उनकी चिकित्सा का भार वहन भी उन डाक्टरों द्वारा हो रहा था कि जो उनके सहकारी थे। परन्तु वह तमाम प्रयत्न निष्फल सिद्ध हुए कि जो कि चिकित्सक-मण्डली ने अपने सहकारी को उन्मत्त से सुमत बनाने के लिये किये थे। अतएव रोगी के विशेष हितकारी श्री डाक्टर देवप्रसाद जी एम. बी. बी. एस. ने रोगी के अभिभावकों को लेखक से परामर्श करने की अनुमति दी। रोगी के अभिभावकों ने श्री डा० देव प्रसाद जी की अनुमति का अनुकरण किया। परिणाम स्वरूप लेखक ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम रोगी के अधो लिखित लक्षणों को आलक्षित किया । तदनन्तर चिकित्सार्थ उन्मादाक्रांत रोगी को हस्तगत किया ।

विद्यमान लक्षण—बात २ में क्रोध और दुर्वचनों का प्रयोग, निद्रा का अभाव तथा क्रोधावस्था में अनर्गल प्रलाप का प्रादुर्भाव ।

चिकित्सा

(१) **प्रति मात्रा**—माहेश्वर मिश्रण ६ रत्ती, माणिक्य पिष्टि १ रत्ती, कृष्ण मिर्च चूर्ण २ रत्ती ।

प्रयोग—प्रातः, मध्याह्न, सायं और रात के १० बजे ।

अनुपान—अर्क गुलाब ।

१५ दिन तक तो औषधि का प्रयोग दिन में ४ बार हुआ । तदनन्तर तीन बार और मास के अन्त में कुछ दिन तक औषधि दिन में दो बार प्रयोग हुई । परिणाम स्वरूप रोगी महोदय सुखी और सुमत बन गये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१८]

रोग—असृग्दर दिनांक १५.६.२६

44

Metorrhagia

रोगी—धर्मपत्नी श्री ला० भक्तराम जी। आयु–३६ वर्ष।

निवास स्थान—बुद्धल ज़िला रियासी [जम्मू]

चिकित्सा स्थान—श्रीनगर [काश्मीर]।

पूर्व वृत्त—(रुग्णा के पति और सहोदर द्वारा कथित) तीन चार वर्ष पूर्व रुग्णा अतिरज: द्वारा परिपीड़ित हुई। अतिरज: का रूप यह था कि न केवल ऋतु काल के चार दिनों में ही रक्त का अत्यधिक मात्रा में उत्सर्जन होता था प्रत्युत उसके उपरान्त भी आठ-दस दिन तक न्यूनाधिक मात्रा में रक्त का परिस्रवण होता रहता था। विभिन्न डाक्टरों-हकीमों की चिकित्सा से यदा कदा इतना लाभ तो अवश्य होता रहा, कि रोगजन्य कष्ट कुछ कम हो जाता था। परन्तु कष्ट की निवृत्ति एवं पूर्ण लाभ का जहां तक सम्बन्ध है उस से रुग्णा वञ्चित ही रही और तीन चार मास पूर्व रोग ने ऐसा रूप धारण किया कि तत्सम्बन्धी अति की इतिवृत्ति आज तक नहीं हुई। यद्यपि चिकित्सा द्वारा अति की गति कुछ अवश्य शिथिल पड़ जाती रही है अस्तु, रोग सम्बन्धी अति के अन्तिम परिणाम के प्रतिकार के लिए एक स्थानीय डाक्टर के आदेशानुसार रुग्णा को एक पालकी में डाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर ८० मील के अन्तर से १० दिन पूर्व यहां (श्रीनगर) के उस सुप्रसिद्ध स्त्री-रोग निवारक चिकित्सालय में पहुंचाया गया, कि जिस चिकित्सालय के संचालन सम्बन्धी प्रबन्ध का भार वहन अमेरिकन ईसाई मिशन द्वारा हो रहा है और जिस की प्रधान व्यवस्थापिका एवं मुख्य चिकित्सका एक उच्च शिक्षा प्राप्त योरपीयन लेडी डाक्टर है।

अस्तु मुख्य चिकित्सका महोदया ने रोग विनिश्चय तो यह किया, कि रुग्णा का गर्भाशय न केवल आयताकार हो है अपितु उसको ग्रीवा भी कुछ कठोर है और चिकित्सा के विषय में यह विचार व्यक्त किया, कि यद्यपि रोग तो शस्त्र साध्य है, परन्तु रुग्णा की क्षीणता और असाधारण शरीर-शोणता शस्त्र क्रिया अर्थात् ओपरेशन के सिलसिले में प्रतिबाधक है। अतएव प्रथम रुग्णा की क्षीणता की निवृत्ति का प्रयास होगा, तदनन्तर ओपरेशन का प्रबन्ध होगा।

अस्तु, रुग्णा की बल-वृद्धि के लिये चिकित्सका महोदया ने जिस चिकित्सा और पौष्टिक पथ्यादि की योजना की उसी योजनानुसार रुग्णा का दस दिन से उपचार हो रहा था। परन्तु दुर्भाग्य से कल सायंकाल के अनन्तर रोग सम्बन्धी आर्ति ने ऐसा उग्र रूप धारण किया कि उस की उग्रता को कन्ट्रोल करना असम्भव हो गया और रुग्णा हृदयावसाद ग्रस्त भी हो गई। परिणाम स्वरूप लेडी डाक्टर महोदया ने अपनी विवशता का प्रदर्शन कुछ ऐसे निराशाजनक शब्दों द्वारा किया कि जिस से यह प्रतीत होता था कि चिकित्सका महोदया के विचारानुसार रोग असाध्य हो चुका है। अतएव उस निराशा के कारण आज प्रातः काल हम रुग्णा को हस्पताल से उठवा कर अपने आत्मीय स्वजन श्री लाला भक्त राम जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपाही के निवास स्थान में ले आए हैं और उनके आदेशानुसार ही चिकित्सा के सम्बन्ध में आपका सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से आप के पास आए हैं। अस्तु उपर्युक्त विवरण को कर्णगोचर करने के अनन्तर आगत महानुभावों के साथ जा कर जब रुग्णा को आलक्षित किया गया तो उसे निम्न लक्षणों युक्त पाया।

विद्यमान लक्षण—रुग्णा का शरीर अस्थि कङ्कालवत्, नाड़ी की गति द्रुत और अति क्षीणहृदयावसाद की परिस्थिति यह है कि रुग्णा प्रश्न का उत्तर देने में भी असमर्थ। अब रह गई बात रोग के मूल कारण अर्थात् रक्तस्राव की, सो उसका उल्लेख पूर्व वृत्त में आ ही चुका है। इस लिये उस के स्थान में उस चिकित्सा-क्रम पर प्रकाश डाला जाता है, कि जिस चिकित्सा-क्रम की असाधारण परिसफलता ने असाध्य रोग पर विजय प्राप्त करके आयुर्वेद के गौरव को उजागर करने का श्रेय प्राप्त किया है और वह चिकित्सा-क्रम सपरिणाम अधो लिखित है :—

चिकित्सा

(१) **प्रति मात्रा**— रजत विद्रुम दो रत्ती, मुक्ता पिष्टी आधी रत्ती, तृणकान्त पिष्टी दो रत्ती, सिता चार रत्ती।

प्रयोग—जब भी विशेष दुर्बलता की प्रतीति हो एक मात्रा अर्क वेद मुश्क के साथ प्रयोग कराई जाय।

(२) **प्रति मात्रा**—पुष्यानुग चूर्ण डेढ़ माशा, रक्तार्गल रस डेढ़ रत्ती, शुक्ति पिष्टी दो रत्ती।

प्रयोग—चार-चार घण्टे के अन्तर से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपान—तण्डुलोदक ।

परिणाम—दूसरे दिन ही रक्तस्राव में यथेष्ट कमी हो गई और हृदयावसाद का भी तिरोभाव हो गया। एक सप्ताह के अनन्तर रक्त का स्रावित होना बिल्कुल बन्द हो गया, परिणाम स्वरूप शय्याशायी रुग्णा इस योग्य हो गई कि शय्या छोड़ कर चल फिर सके। अस्तु, तदुपरांत नं० १ व्यवस्था सम्बन्धी औषधि बन्द कर दी गयी और नं० २ सम्बन्धी औषधि का प्रयोग तदनन्तर एक मास तक, कुछ दिन तक तो दैनिक तीन मात्रा और तदुपरांत कुछ दिन तक (दैनिक दो मात्रा के रूप में) चालू रहा। परिणाम यह कि जिस अस्थि कङ्काल रुग्णा को ८० मील के अन्तर से पालकी द्वारा श्रीनगर पहुंचाया गया था। वह उपर्युक्त व्यवस्था की बरकत से ४० दिन औषधि प्रयोग करने के अनन्तर हृष्ट-पुष्ट अवस्था में एक घोड़े पर सवार हो कर अपने परिवार में पहुंच गई।

वक्तव्य—यद्यपि देश विभाजन-काल के अनन्तर काश्मीर पर जो पाकिस्तानी आक्रमण हुआ था, उस आक्रमण काल में उपर्युक्त चिकित्सा सम्बन्धी महिला और उसके पति महोदय की तो आक्रमण-कारियों के हाथों हत्या हो चुकी है परन्तु उपर्युक्त विवरण की जहां तक सत्यता का सम्बन्ध है उसका समर्थन उन्हीं श्री लाला भक्तराम जी द्वारा हो सकता है कि जिनके निवास स्थान में रुग्णा के रोग का मूलोच्छेद हुआ था। उनका पता अधो लिखित है :—

श्री ला० भक्त राम जी कपाही
रिटायर्ड कस्टम सुपरिन्टेण्डेंट, मु० रिहाड़ी, जम्मू।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१९]

रोग—वयः सन्धिकालिक अतिरजः ति० १७-८-४४

Menopausal Menorrhagia

रोगी—धर्मपत्नी श्री पं० आनन्द कौल जी ! आयु—लगभग ४७ वर्ष ।

निवास स्थान—श्रीनगर (काश्मीर) ।

रोग विवरण—(श्री पण्डित आनन्द कौल जी द्वारा विवर्णित) तीन वर्ष से रुग्णा रोगाक्रांत है और रोग का रूप यह है कि प्रति मास रज: स्राव के रूप में रुग्णा के शरीर से इतने रक्त का परिस्रवण होता है कि शरीर-शैथिल्य के कारण रुग्णा को १४-१५ दिन के लिये शय्या-शायी हो जाना पड़ता है । यहां (श्रीनगर) के सुप्रसिद्ध डाक्टरों-हकीमों का चिकित्सा-चातुर्य रुग्णा की चिकित्सा में असफल हो चुका है । डा० रालन्स महोदय (एक उच्च कोटि के योरपीयन डाक्टर का नाम) की अन्तिम राय यह है कि ओपरेशन द्वारा रुग्णा का गर्भाशय ही निकलवा दिया जाये । परन्तु रुग्णा की असाधारण निर्बलता इस सिलसिले में प्रतिबाधक है ।

अस्तु, उपर्युक्त विवरण को कर्णगोचर करने के अनन्तर दर्शन, स्पर्शन और प्रश्न आदि द्वारा रोग का परीक्षण किया गया । परि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

णाम स्वरूप यह निर्णय हुआ कि अतिरजः का कारण वयः सन्धि कालिक विकृति है ।

वक्तव्य—वयः सन्धिकाल उस अवस्था का नाम है, कि जिस अवस्था में स्त्रियों का मासिक ऋतु बन्द हो जाता है । आंगल परिभाषा में वयः सन्धिकाल को क्रटिकल एज (Critical Age) अर्थात् दोष ग्राही अवस्था के नाम से अभिहित किया गया है । कारण कि इस अवस्था में अधिकांश स्त्रियां किसी न किसी रोग रूपी दोष द्वारा ग्रस्त हो जाती है, जिन में से एक दोष अतिरजः भी है ।

चिकित्सा

(१) **प्रति मात्रा** —पुष्यानुग चूर्ण डेढ़ माशा, रक्तार्गल रस दो रत्ती, प्रवाल पिष्टी दो रती, शुक्ति पिष्टी दो रत्ती ।

प्रयोग—दिन में तीन बार ।

अनुपान—तण्डुलोदक ।

उपर्युक्त व्यवस्थानुसार एक मास तक औषधि व्यवहृत हुई । तदनन्तर प्रतिदिन दो मात्रा की व्यवस्था की गई । परन्तु ऋतु काल में तीन दिन के लिये तो औषधि बन्द कर दी जाती थी और तीन दिन के अनन्तर पांच छः दिन तक दिन में चार बार औषधि का प्रयोग होता था । फल स्वरूप तीन मास के अनन्तर रुग्णा का मासिक धर्म बिल्कुल बन्द हो गया । परन्तु चार मास के बाद रुग्णा पुनः रोगाक्रांत हो गई । यद्यपि रोग इतना उग्र नहीं था, कि जितना उपर्युक्त औषधि के प्रयोग से पूर्व था ।

चूंकि लेखक उन दिनों जम्मू में था, इस लिये पत्र द्वारा सूचना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलने पर रुग्णा के लिये डाक पार्सल द्वारा निम्न व्यवस्थानुसार औपधि भेज दी गई।

प्रति मात्रा—पुष्यानुग चूर्ण डेढ़ माशा, मृगांक चूर्ण ६ रत्ती।

प्रयोग—दिन में तीन बार।

अनुपान—तण्डुलोदक।

परिणाम स्वरूप पुनः पूर्ववत् ही तीन मास के अनन्तर रुग्णा का मासिकधर्म बन्द हो गया। लेकिन संयोग से उन्हीं दिनों में कराची के नामाख्यात चिकित्सक वैद्यरत्न श्री सुखराम दास टी ओझा जी का मनोरंजनार्थ काश्मीर में शुभागमन हुआ। चूंकि स्व० ओझा जी लेखक के विशेष स्नेही थे, इस लिये उनके आदेशानुसार मासिकधर्म बन्द होने के अनन्तर भी कुछ काल तक रुग्णा को निम्न लिखित औषधियां प्रयोग कराने की व्यवस्था की गई।

(१) **प्रति मात्रा**—चन्द्रांशु रस २ रत्ती।

प्रयोग—प्रातः सायं।

सहपान—मधु।

अनुपान—श्वेत जीरक फाण्ट।

(२) **प्रति मात्रा**—पुष्यानुग चूर्ण डेढ़ माशा, प्रदरांतक लोह दो रत्ती, प्रवाल पिष्टी एक रत्ती, शुक्ति पिष्टी एक रत्ती।

प्रयोग—मध्याह्न तथा रात्रि को शयनकाल से एक घण्टा पूर्व।
अनुपान—तण्डुलोदक।

उपर्युक्त व्यवस्थानुसार भी औषधि का प्रयोग दो मा तक चालू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा फलस्वरूप रुग्णा पूर्ण रोग विमुक्त हो गई। सत्य समर्थनार्थ श्री पं० आनन्द कौल जी का पूरा पता :—

श्री पं० आनन्द कौल जी रिटायर्ड सैरिकल्चरिस्ट
मु० बर्बर शाह सित्थू श्रीनगर (काश्मीर)।

---

[२०]

रोग—बन्ध्यात्व ति० २८-११-३२

Sterility

रोगी—धर्मपत्नी स० महताब सिंह जी। आयु—२६ वर्ष!

निवास स्थान—रावलपिण्डी

चिकित्सा स्थान—रावलपिण्डी।

रोग विवरण—(रुग्णा के पति देव द्वारा विवर्णित) गार्हस्थ्य जीवन में पदार्पण किए हुए १०-११ वर्ष हो गये हैं। परन्तु जीवन सन्तान सुख से वञ्चित ही है। यद्यपि प्रयोजन सिद्धि के लिये चिकित्सा के रूप में अनेक उपाय किये जा चुके हैं। अस्तु, यहां की नामा-ख्यात लेडी डाक्टर…जी का तो यह कहना है कि सरदारनी जी का गर्भाशय कुछ छोटा है, इस लिये गर्भ-स्थिति हो ही नहीं सकती। दर्शन स्पर्शन और प्रश्नों आदि द्वारा परीक्षण करने पर हमें भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि किसी निष्कर्ष पर न पहुंच सका। परन्तु इसी प्रकार की एक महिला के बन्ध्यात्व की कुमार कल्पद्रुम घृत द्वारा निवृत्ति हो चुकी थी, इस लिये श्री सरदार महताब सिंह जी की सहधर्मिणी के लिये भी उक्त घृत की ही व्यवस्था की गई।

अस्तु तीन मास तक उक्त घृत का प्रयोग हुआ। परिणाम यह कि एक वर्ष के अनन्तर श्री सरदार महताब सिंह जी एक गोरे चिट्टे नन्हें-मुन्ने के बाप बन गये।

सत्य समर्थन सम्बन्धी पत्र

यद्यपि सरदार महताब सिंह जी का वर्तमान पता तो लेखक को ज्ञात नहीं है परन्तु उनका सन् १९४५ ई० का एक ऐसा पत्र लेखक के पास मौजूद है जो उपर्युक्त विवरण के एक एक शब्द की सत्यता का समर्थक है—जिसका सारांश अधो लिखित है :—

Returned Vehical Park
Dhanbad (*Bihar*).
22-11-45.

मैं वास्तव में सपत्नीक आप की चिकित्साधीन आने का इच्छुक हूं। बच्चा अब १२-१३ वर्ष का हो गया है। उसके बाद फिर कोई सन्तति नहीं हुई। प्रत्यक्ष रूप में उभय पक्षों में कोई दोष नहीं दिखाई देता। मगर परमात्मा जाने क्या कसूर (विकार) है, कि मन की लालसा पूर्ण नहीं हो रही। गृहणी को अनेक बार लेडी डाक्टर को दिखाया गया है। वह भी कोई विशेष विकार नहीं बतातीं। दो तीन वर्ष हुए श्रीमती जी को लेडी डाक्टर के आदेशानुसार कुछ इन्जैक्शन भी लगवाए और रबड़ के रिंग (छल्ले) का प्रयोग भी हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु सफलता नहीं मिली। अतएव विनम्र निवेदन है, कि आप हम दोनों को वही पुराना नुसखा, जो आपने सन् १६३२ में प्रयोग कराया था, तैयार करके भेजें। शायद फिर से गोद हरी भरी देखें। मेरी सहधर्मिणी को तो घृत के रूप में आपने एक औषधि प्रयोग कराई थी और मेरे लिये एक माजून की व्यवस्था की थी। शायद उन से भी अधिक उपयोगी नुसखे आपके अनुभव में आये होंगे परन्तु मेरा विश्वास उन्हीं नुसखों में ही है, कि जिन के प्रयोग से पहले सफलता प्राप्त हो हो चुकी है।

दास—महताब सिंह धीर आर्डिनेंस आफिसर।

---

[२१]

रोग—पूयमेह ति० २०-६-३५

Pyuria

रोगी—श्री ला० देसराज जी! आयु—५० वर्ष।

निवास स्थान—श्रीनगर (काश्मीर)।

पूर्ववृत्त—प्रथम रोगी महोदय पर तीव्र आम वात (Acute Rhematism) का आक्रमण हुआ जिसके प्रतिकारार्थ विशेष उग्र वीर्य उष्ण औषधियों का प्रयोग हुआ, परिणाम स्वरूप आम वात का तो परिहार हो गया, परन्तु उग्र वीर्य उष्ण औषधियों के प्रयोग के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम स्वरूप रोगी महोदय पूयमेह ग्रस्त हो गये । अस्तु, पूयमेह के उपचार के लिये उन्होंने विशेष उच्चकोटि के ऐलोपैथिक चिकित्सकों से परामर्श किया । परिणाम स्वरूप मूत्र-परीक्षणादि के अनन्तर चिकित्सक मण्डली ने यह विचार व्यक्त किया कि पूय का परिस्रवण मूत्रपिण्डों (गुरदों) से हो रहा है । तदुपरांत रोग की चिकित्सा शुरू हो गई और चिकित्सा काल में ही रोगी ने एक दिन परामर्शार्थ लेखक को भी स्मरण किया । परिणाम स्वरूप लेखक ने रोगी के लिये जिस औषधि की व्यवस्था की । उस औषधि में अल्पांश में एक विशेष प्रकार का मकर ध्वज भी था । रोगी ने लेखक की व्यवस्था का जिक्र अपने प्रधान चिकित्सक (जो योरुप की बड़ी २ उच्च कोटि की उपाधियों से अलंकृत थे) से किया जिसका उत्तर रोगी को यह मिला, कि मकरध्वज को भूल कर भी प्रयोग में न लाएं । क्योंकि मकर ध्वज पारद का कल्प है और पारद वृक्क विकार ग्रस्त रोगियों के लिये विषवत् है । परिणाम स्वरूप रोगी महोदय भयभीत हो गये और निरन्तर ६ मास तक आधुनिक चिकित्सा पद्धति के महाप्रभु के चिकित्सा चातुर्य और नये नये अनुभवों के मुक्तभोगी बने रहे, परन्तु परिणाम निराशा जनक ही रहा, अन्तिम परिणाम यह कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति से नितान्त निराश हो कर परामर्शार्थ पुनः रोगी महोदय लेखक की ओर आकृष्ट हुए और आश्चर्यजनक बात यह कि लेखक की जिस व्यवस्था से आधुनिक चिकित्सा पद्धति के महाप्रभुओं ने रोगी को भयभीत किया था वही व्यवस्था गिनती के दिनों में ही उस रोग का मूलोच्छेद करने में सफल हो गई, कि जिस रोग की चिकित्सा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक चिकित्सा-पद्धति के महाप्रभुओं का चिकित्सा-चातुर्य असफल हो चुका था और वह व्यवस्था अधोलिखित है।

व्यवस्था

प्रति मात्रा—वङ्ग भस्म विशेष एक रत्ती, रस कपूरोत्थ शुद्ध पारद द्वारा निर्मित मकर ध्वज $\frac{1}{8}$ रत्ती।

प्रयोग—केवल प्रातः काल।

सहपान—मधु अथवा मक्खन।

परिणाम—यद्यपि औषधि का प्रयोग तो तीन सप्ताह हुआ, परन्तु रोग का मूलोच्छेद दो सप्ताह में ही हो गया था।

नोट :—इतने शीघ्र रोग का मूलोच्छेद क्यों हुआ ? इसका उत्तर स्वानुभव सार समुच्चय में दिया जायेगा।

सत्य समर्थनार्थ—

रोग विमुक्त होने वाले महानुभाव का पूरा पता :-

श्री ला० देसराज जी

C/o

M/s. देसराज ब्रादर्स श्रीनगर (काश्मीर)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२२]

रोग—जीर्ण औपसर्गिक पूयमेह ति० २१-१२-४४

Gleet

रोगी—एक मुसलमान सैनिक ! आयु—३५ वर्ष।

निवास स्थान—सीमा प्रांत (N. W. F. P.)

रोग विवरण—रोगी जब लेखक के पास पहुंचा तो प्रथम उसने यह संकेत किया, कि मैं चिकित्सार्थ आप के पास ठा० कृष्ण सिंह जी (सुपुत्र श्री ठा० कन्धारा सिंह जी) के आदेशानुसार आया है। तद-नन्तर यह व्यक्त किया, कि दो-ढाई वर्ष पूर्व अहमद नगर में सूजाक (Gonorrhoia) हुआ था, जिस की चिकित्सा अधिकतर ऐलो-पैथिक हुई। अस्तु, ऐलोपेथिक औषधियों के कुछ इन्जैक्शन भी लगे और विगत दो-ढाई वर्षों में दो-तीन बार उस औषधि का प्रयोग भी हुआ है, कि जिस औषधि की ख्याति संसार में '६६३' के अङ्क से है। यद्यपि ऐलोपैथिक उपचार से लाभ तो अवश्य हुआ है, परन्तु रोग का मूलोच्छेद नहीं हुआ और वर्तमान परिस्थिति यह है कि मूत्रकृच्छ्रता और मूत्र-मार्ग में किसी प्रकार की प्रदाह तो नहीं है, परन्तु अल्पांश में पूय का परिस्रवण विशेषतया प्रातःकाल में प्रतिदिन होता है।

चिकित्सा

(१) अक्सीर सूजाक—मात्रा आधी रत्ती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग—प्रातः काल।

सहपान—मक्खन अथवा मलाई।

(२) **मात्रा**—वराटिकादि वटी एक गोली।

प्रयोग—दिन के १०, १ और ५ बजे।

अनुपान—१० और १ बजे दही का मट्ठा और ५ बजे जल।

परिणाम—डेढ़ मास तक औषधि का प्रयोग हुआ परिणाम स्वरूप रोग का मूलोच्छेद हो गया।

---

[२३]

रोग—जीर्ण वातरक्त ति० २४-६-४०

Chronic Guot

रोगी—रायजादा श्री त्रिलोक चन्द जी (भू० पू० गवर्नर कश्मीर)। आयु—६०—वर्ष से कुछ ऊपर।

रोग विवरण—उपर्युक्त तिथि को श्री रायजादा जी जब लेखक के औषधालय में पधारे तो उन्हों ने यह वर्णन किया—कि रोग तो बहुत पुराना है। क्योंकि उस का भोग भोगते हुए २० वर्ष के करीब हो गये हैं। अस्तु, रोग का उपचार शुरू से ही ऐलोपैथिक औषधियों द्वारा हो रहा है, क्योंकि उन औषधियों से कुछ काल के लिये अस्थाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाभ हो जाता है। परन्तु रोग अब उस उपचार की लाभ सम्बन्धी सीमा को पार कर चुका है। कारण कि रोग के दौरों की गति तो द्रुत हो गई है और लाभ की गति मन्द पड़ गई है। इसके अतिरिक्त यूरक ऐसिड (मूत्रामल) के आधिक्य के कारण मूत्राशय में कुछ जलन भी शुरू हो गई है।

चिकित्सा

(१) प्रति मात्रा—गोक्षुरादि गुगुल एक माशा।

प्रयोग—प्रातः सायं।

अनुपान—जल।

(२) निर्गुण्डी मूल चूर्ण एक भाग, रसौंत आधा भाग, दशांग लेप आठ भाग।

प्रयोग—सब को काकमाची स्वरस अथवा धत्तूर पत्र स्वरस द्वारा थोड़े से घृत सहित पेषित कर व्यथित और प्रदाहान्वित स्थान पर प्रलेप करें।

परिणाम—एक सप्ताह के अनन्तर रोगी महोदय ने यह सूचना दी कि लाभ तो अवश्य है परन्तु लाभ की प्रगति कुछ मन्द है।

अतएव औषधि के प्रभाव को आशुकारी बनाने के लिये अनुपान के रूप में प्रति मात्रा दो-तीन तोला वृश्चिका स्वरस की व्यवस्था की गई, जिस से मूत्र के साथ शरीरस्थ यूरक ऐसिड का यथेष्ट मात्रा में उत्सर्जन हुआ। परिणाम स्वरूप रोग भी शीघ्र ही शान्त हो गया।

नोट—वृश्चिका नामक वनस्पति के गुण, धर्म और वानस्पतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवरण आदि से जिन महानुभावों को अवगत होना अभीष्ट हो उन्हें लेखक के उस लेख पर दृष्टिपात करना चाहिये, कि जो लेख मार्च १९५६ ई० के सचित्र 'आयुर्वेद' में वृश्चिका शोर्षक से ही प्रकाशित हो चुका है।

यद्यपि रोग विमुक्त होने वाले महानुभाव का तो देश-विभाजन के बाद देहावसान हो चुका है, परन्तु चिकित्सा की सफलता सम्बन्धी सत्यता का समर्थन करने के लिये स्व० रायज़ादा जी की लेखनी के मुख से निकले हुए वह शब्द अब भी संसार में मौजूद हैं, कि जिन शब्दों का उल्लेख "महात्माओं के दर्शन" नामक स्व० महानुभाव की कृति की भूमिका में आया है और वह शब्द अधो लिखित हैं—

"वैद्य वासुदेव जी के इलाज से गाऊट के दौरे भी शान्त हो गये थे। इस लिये महात्मा गांधी जी के दर्शनों की चिरकालीन इच्छा की पूर्ति के लिये मैं वारधा जाने के लिये तैयार हो गया।"

---

[२४]

रोग—जीर्ण गृध्रसी दिनांक १५-६-५५

Chronic Sciatica

रोगी—धर्मपत्नी श्री पं० निरंजननाथ जी। आयु—२४ वर्ष।

रोग विवरण—उपर्युक्त तिथि को जब रुग्णा को चिकित्सार्थ लेखक के निवास-स्थान पर लाया गया तो श्री पं० निरंजन नाथ जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने प्रथम तो यह वर्णन किया, कि अमुक नामाख्यात डाक्टर से दो मास, अमुक से तीन मास और अमुक से ढाई मास चिकित्सा कराई। इस के अतिरिक्त और भी अनेक डाक्टरों से रुग्णा का उपचार कराया, परन्तु रोग का प्रतिकार नहीं हो सका। तदनन्तर यह शब्द कहे, कि रुग्णा का इलाज कराते २ मैं तो अब हार चुका हूँ, क्योंकि मासिक वेतन के रूप में जो आय होती है वह रुग्णा के उपचार पर ही व्यय हो जाती है।

विद्यमान लक्षण—रुग्णा चलने फिरने में असमर्थ तथा रोग-जन्य व्यथा से अति व्यथित।

चिकित्सा सम्बन्धी व्यवस्था

(१) एकाङ्ग वीर रस २ रत्ती।

प्रयोग—प्रातः सायं।

अनुपान—रास्नादि क्वाथ।

(२) विषगर्भ तेल ५ तोला, कर्पूरादि ~~रस~~ तेल १ तोला।

प्रयोग—रात्रि को बन्द कमरे में व्यथित स्थान पर अभ्यङ्ग रूप में।

परिणाम—चूंकि कश्मीर में रास्नादि क्वाथ अनुपलब्ध था, इसलिये औषधि का प्रयोग गरम जल के साथ हुआ। अत एव रुग्णा को यथोचित लाभ न हुआ। तदनन्तर लेखक ने रुग्णा के लिये जम्मू से रास्नादि क्वाथ सहित प्रयोगार्थ त्रयोदशाङ्ग गुगुल भेजा और १-१ माशा प्रातः सायं प्रयोग करने के लिये निर्देश किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम स्वरूप २१ दिन के बाद रुग्णा के पति ने यह सूचना दी कि लाभ तो यथेष्ट है परन्तु पूर्ण लाभ नहीं हुआ, इस लिये और औषधि भेज देवें। अस्तु, पुन: रास्नादि क्वाथ के साथ महायोग राज गुगुल की गोलियां (३–३ रत्ती की) भेजी गईं, कारण कि त्रयोदशांग गुगुल लेखक के पास समाप्त हो गया था। अस्तु, एक मास तक महायोग-राज गुगुल का भी प्रयोग हुआ। फलस्वरूप रुग्णा पूर्ण स्वस्थ हो गई।

सत्य समर्थनार्थ पता—

श्री पं० निरंजन नाथ जुत्शी
C/o. कश्यप इण्डस्ट्री,
अमीरा कदल, श्रीनगर (कश्मीर)।

---

[२५]

रोग—भगन्दर सन् १९३७ ई०

Fistula In Ano

रोगी—श्री सेठ लक्ष्मी चन्द जी। आयु—लगभग ३५ वर्ष।

निवास स्थान—सहारनपुर।

रोग विवरण—दो-ढाई वर्ष से रोगी महोदय भगन्दर रूपी कर्म-रोग के भुक्तभोगी बने हुए थे। आधुनिक चिकित्सकों की अन्तिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राय यह थी, कि रोग का भोगकाल आपरेशन के विना समाप्त नहीं हो सकेगा। अत एव रोगी ने सम्भवतः फरवरी सं० १९३७ ई० में लेखक से यह प्रश्न किया कि भगन्दर की कोई ऐसी औषधि भी है कि जो आपरेशन के विना ही रोग का मूलोच्छेद कर देवे। जिसका उत्तर लेखक ने यह दिया, कि यदि आप स्वयं औषधि तैयार कर सकें तो औषधि की निर्माण-विधि आदि आपको बता दी जायगी। रोगी ने औषधि तैयार करना स्वीकार कर लिया। फलस्वरूप लेखक ने रोगी को मल्लादि वटी और एक तेल का योग लिख कर दे दिया। रोगी ने केवल मल्लादि वटी को ही तैयार करके प्रयोग किया। परिणाम स्वरूप न केवल रोगी ही रोग-विमुक्त हो गया, अपितु अवशेष औषधि द्वारा रोग-विमुक्त होने वाले महानुभाव ने और भी अनेक रोगियों को स्वास्थ्य-सुख प्रदान किया।

सत्य-समर्थनार्थ रोग-विमुक्त होने वाले महानुभाव का पूरा पता—

श्री सेठ लक्ष्मीचन्द जी महेश्वरी
महेश्वरी स्ट्रीट (खालावार),
सहारनपुर यू० पी०।

अत्यावश्यक सूचना

भारतरत्न श्रद्धेय श्री पं० नेहरू जी के अनुकरणीय आदेश के अनुसरण से पूर्व प्रस्तुत पुस्तिका द्वारा जिन जीर्ण, जटिल हठीली और असाध्य व्याधियों से हारे-थके हुए हताश रोगियों की सफल चिकित्सा पर प्रकाश डालने का संकल्प किया गया था, उनमें से अनेक रोगियों के विवरणों को प्रस्तुत पुस्तिका में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस लिये स्थान प्राप्त नहीं, कि वह विवरण उस स्तर पर पूर्ण नहीं उतरते थे, जो स्तर लेखक ने श्री पं० नेहरू जी के आदेश को साकार बनाने के लिये निर्धारित किया था। यद्यपि उनमें वह विवरण विशेष महत्वपूर्ण हैं, कि जिन विवरणों में कतिपय पथभ्रष्ट युवकों की जटिल व्याधियों की सफल चिकित्सा का नाम-पता विरहित उल्लेख आया है।

अस्तु, उन विवरणों के विषय में विचार तो यह था, कि उन्हें "स्वानुभव सार-समुच्चय" नामक उसी पुस्तक के लिये ही सुरक्षित रहने दिया जाय, कि जिस पुस्तक की प्रस्तुत पुस्तिका पूर्वाभास है, परन्तु अब यह निश्चय किया गया है कि उन विवरणों को एक पृथक् पुस्तिका के रूप में "जटिल रोगों की दृष्टफल चिकित्सा" के नाम से शीघ्र ही मुद्रणाभूषणों द्वारा अलंकृत करके वैद्य समाज की सेवा में प्रस्तुत कर दिया जाय।

अतएव सुविज्ञ पाठकों की सेवा में सूचनार्थ विनम्र निवेदन है, कि यदि आप को प्रस्तुत पुस्तिका के अवशिष्टांश से भी लाभान्वित होना अभीष्ट हो तो "जटिल रोगों की दृष्टफल चिकित्सा" के ग्राहकों में अपना नाम शीघ्र अंकित कराने का प्रयास करें।

विनीत—

लेखक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट

जटिल रोगों की सफल चिकित्सा सम्बन्धी

औषधियों के योगादि

---

[१] अक्सीर सूज़ाक—

द्रव्य और निर्माण-विधि—शुद्ध गन्धक १ तोला, कल्मी शोरा ५ तोला, रस माणिक्य १ तोला, वराटिका भस्म ८ तोला, शुक्ति पिष्टी ८ तोला, मल्ल श्वेत १॥ तोला, फिटकड़ी २ तोला, सब को घृतकुमारी के रस में एक दिन खरल करके टिकिया बना लें और शुष्क होने पर शराव-सम्पुट में रख, सन्धि-स्थान पर कपड़ मिट्टी करके ५ सेर कंडों की अग्नि देवें। शीतल होने पर शराव में से भस्म को निकाल कर, खरल करके शीशी में भर लेवें।

मात्रा—आधी रत्ती से १ रत्ती तक। **सहपान**—मक्खन अथवा मलाई।

प्रयोग—प्रातः सायं।

गुण—पुराने सूज़ाक के लिये लाभदायक।

Gurukula Kangri Library

[२] अग्नितुण्डी वटी—

द्रव्य और निर्माण-विधि—भैषज्य रत्नावली (अग्निमान्द्यादि रोगाधिकार) के अनुसार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३] अग्निमुख चूर्ण—

द्रव्य और निर्माण विधि—शुद्ध गन्धक ६ तोला, कृष्ण लवण १५ तोला, नौशादर ६ तोला, शुण्ठी ३ तोला, मिर्च ३ तोला, पीपल २ तोला, लवङ्ग १ तोला, दारचीनी १ तोला, जौखार असली १ तोला, छाया शुष्क अर्क पुष्प १ तोला, सत निम्बू २ तोला, शुद्ध हिंगु ६ माशा, सत पुदीना ६ माशा, सब को कूट पीस कर चूर्ण बना लें।

मात्रा—२ रत्ती से ४ रत्ती तक जल के साथ अथवा किसी अर्कादि के साथ।

गुण—अजीर्ण, अग्निमान्द्यादि के लिये उपयोगी।

[४] अष्टमूर्ति रसायन—

द्रव्य और निर्माण विधि—आ० औषधि गुण धर्मशास्त्र तथा रसतन्त्र सार के अनुसार।

[५] अश्वगन्धारिष्ट—

द्रव्य तथा निर्माण विधि—भै० रत्नावली के अनुसार।

[६] आन्त्र-शोषान्तक रस—

द्रव्य और निर्माण विधि—रस तरङ्गणी तथा रस विज्ञानानुसार।

[७] एकांग वीर रस—

द्रव्य व निर्माण विधि—निघण्टु रत्नाकर व रसतन्त्रसारानुसार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[८] एलादि चूर्ण (एला रसायन)--

द्रव्य व निर्माण विधि—छोटी इलायची के बीज, वंशलोचन, छोटी पीपल, काकड़ा सिंगी, शक्कर तेगाल, सत मुलैटी, गोंद कतीरा, गोंद कीकर, गुल बनफशा, सत गिलोय, अभ्रक भस्म, प्रवाल पिष्टी, अकीक भस्म प्रत्येक एक-एक तोला, सत लोबान दो माशा, चांदी के वरक २५ नग। प्रथम चांदी के बरकों को एक माशा सिता के साथ खरल करें। जब बरकों की चमक जाती रहे तब अन्य द्रव्यों का सूक्ष्म चूर्ण मिलाकर एक घण्टा खरल में मर्दन करके शीशी में भर लें।

मात्रा—चार रत्ती से डेढ़ माशा तक मधु अथवा वासावलेह के साथ दिन में २ से ४ बार प्रयोग कराएं।

गुण—उरक्षत और कासादि के लिये उपयोगी है।

[९] कर्पूरादि द्रव—

द्रव्य व निर्माण विधि—कर्पूर एक तोला, सत अजवायन छः माशा, सत पुदीना छः माशा। सब को एक शीशी में बन्द करके रख देवें, औषधि स्वतः ही द्रव रूप हो जायेगी। गुण, धर्म, प्रयोग तथा मात्रादि अमृत धारा नामक पेटेण्ट औषधिवत्।

[१०] कामलांतक रस—

द्रव्य और निर्माण विधि—शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक प्रत्येक चार चार तोला, त्रिफला चूर्ण सोलह तोला, नौशादर पुष्प, अपामार्ग क्षार, मूली क्षार प्रत्येक आठ आठ तोला। प्रथम पारद गन्धक की कज्जली बनाएं, तदनन्तर अन्य द्रव्यों का सूक्ष्म चूर्ण मिला कर छः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सात घण्टे खरल में मर्दन करके किसी ऐसी शीशी में भर लें जिस में वायु का प्रवेश न हो सके।

मात्रा—चार रत्ती से एक माशा तक दिन में तीन चार बार दही की लस्सी अथवा त्रिफला क्वाथ के साथ।

गुण—कामला के लिये अमोघ औषधि है।

वक्तव्य—कामलांतक रस के यशस्वी कल्पनाकार तो हैं वर्तमान युग के महर्षि आत्रेय प्रातः स्मरणीय, आचार्य प्रवर स्वर्गीय यादव जी त्रिकम जी महाराज। परन्तु उन की कल्पना में किञ्चित् परिवर्तन हुआ है इन पंक्तियों के लेखक की अल्पज्ञता द्वारा। परिवर्तन केवल इतना ही है, कि पूज्य आचार्य जी तो यवक्षार और सज्जी क्षार (सोडा बाई कार्ब) को व्यवहार में लाते थे और लेखक स्वानुभव के आधार पर उक्त दोनों क्षारों के स्थान में अपमार्ग क्षार और मूली क्षार को प्रयोग में लाता है। कारण कि किञ्चित् से परिवर्तन से ही कामलांतक रस कामला कुठार बन गया है। अतएव लेखक इसे पूज्य आचार्य जी की असाधारण सुविज्ञता और अपनी अल्पज्ञता की ओर से अनुपम देन के रूप में आधुनिक चिकित्सा पद्धति के प्रति उस त्रुटि की निवृत्ति के लिये सादर समर्पित करता है, कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति की जिस त्रुटि का प्रथम प्रदर्शन तो हुआ है, आधुनिक चिकित्सा पद्धति की प्रवर्तक सरकार (ब्रिटिश सरकार) के समक्ष उन दिनों में, कि जिन दिनों में भारत की स्वतन्त्रता से पूर्व साबरमती जेल की देवकाय दीवारों को फांद कर कामला ने राजनैतिक कैदियों को अपना शिकार बनाना शुरू कर दिया था। परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार को कामला के प्रतिकारार्थ अपने ही बनाए हुए जेल सम्बन्धी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियमों को भङ्ग करके यह घोषणा करनी पड़ी थी, कि राजबन्दी अपने दायित्व पर कामला का उपचार ऐलोपैथ्येतर चिकित्सा पद्धति द्वारा करा सकते हैं और एतद्विषयक त्रुटि का द्वितीय प्रदर्शन हुआ है भारत की राजधानी (देहली) में। गत वर्ष आधुनिक चिकित्सा पद्धति की संरक्षक सरकार (भारत सरकार) के समक्ष उक्त अनुभव के रूप में, कि जो अनुभव भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग ने गत वर्ष देहली निवासियों को गन्दे नाले का पानी पिला कर किया है।

[११] कुमार कल्पद्रुम घृत—

द्रव्य और निर्माण विधि—भैषज्य रत्नावली के अनुसार, परन्तु उक्त घृत द्वारा वही बन्ध्याएं ही पुत्ररत्न प्राप्त कर सकी हैं, जो आमिष-भोजी हैं। क्योंकि उक्त घृत का एक घटक छाग मांस भी है।

[१२] खमीरा मरवादीद—

द्रव्य व निर्माण विधि—तिब्बी फार्माकोपिया उर्दू व श्री बा० दलजीतसिंह जी कृत यूनानी सिद्धयोग संग्रह (हिन्दी) के अनुसार।

[१३] गोक्षुरादि क्वाथ—

द्रव्य व निर्माण विधि—गोखरू २ तोला, कुलथ बीज २ तोला, शरपुङ्ख मूल एक तोला, सेन्धा लवण ६ माशा, जल १। सेर, अवशेष चतुर्थांश।

मात्रा—५ तोला दिन में ३–४ बार।

गुण—मूत्रल व वृक्कशूलहर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोट—यदा कदा उपर्युक्त योग में १ तोला वरुण त्वक भी मिला ली जाती है।

[१४] गोक्षुरादि गुग्गुल—

द्रव्य व निर्माण विधि—शारङ्गधरानुसार।

[१५] चतुर्मुख रस [कृष्ण]—

द्रव्य व निर्माण विधि—भै० रत्नावली (वात व्याध्यधिकार) के अनुसार।

[१६] चन्द्रप्रभा विशेष—

द्रव्य व निर्माण विधि—बाकुची बीज, वच:, मोथा, चिरायता, गिलोय, देवदारु, हल्दी, अतीस, दारु हल्दी, पीपल, पिपलामूल, चित्रक मूल त्वक्, हिरड़ का छिल्का, बहेड़े का छिल्का, आमले का छिल्का चव्य, विड़ङ्ग, गजपीपल, सोंठ, मिर्च, निशोथ, दन्तीमूल प्रत्येक १–१ तोला। सब को अधकुटा करके १६ गुणा जल में अग्नि पर पकाएं। जब जल चतुर्थांश अवशेष रह जाय तो पात्र को अग्नि से उतार लें। क्वाथ जब कुछ शीतल हो जाय तो उसे छान लेवें और छने हुए जल को पुनः मन्दाग्नि पर पकाएं और पकते हुए जल में ही ८–८ तोला शुद्ध गुग्गुल व शुद्ध शिलाजीत भी छोड़ देवें। जब गुग्गुल व शिलाजीत घुल जाय और पकते-पकते द्रव कुछ गाढ़ा हो जाय तो अग्नि से नीचे उतारें और शीतल होने पर उसमें निम्न लिखित द्रव्यों का सूक्ष्म चूर्ण मिला कर १–२ दिन मर्दन करें। जब गोली बनाने योग्य हो जाय तो ३–३ रत्ती की गोलियां बना लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूर्ण के द्रव्य—धनियां ३ माशा, स्वर्ण-माक्षिक भस्म ३ माशा, तज, पत्रज, इलायची, वंशलोचन, प्रत्येक एक-एक तोला, लोह भस्म, वङ्ग भस्म, अभ्रक भस्म प्रत्येक २ तोला।

गुण—वीर्यस्राव तथा मूत्र के साथ उत्सर्जित होने वाले पदार्थों को रोकने के लिये उपयोगी।

[१७] चन्द्रांशु रस—

द्रव्य व निर्माण विधि—भै० रत्नावली (स्त्री रोगाधिकार) के अनुसार।

[१८] जटामांसी फाण्ट—

द्रव्य और निर्माण विधि—जटा मांसी का अर्ध-कुट्टित चूर्ण १। तोला को उत्तप्त जल १० छटांक में डाल, पात्र को ढक कर एक कोने में रख दें। एक घण्टे के बाद जल जब शीतल हो जाय तो वस्त्र द्वारा छान कर बोतल में भर लें।

मात्रा—ढाई तोला से पांच तोला तक।

प्रयोग—दिन में तीन चार बार।

[१९] जवाहर मोहरा—

द्रव्य और निर्माण-विधि—जहर मोहरा खताई पिष्टी १॥ तो० मुक्ता पिष्टी, तृणकांत मणि पिष्टी, प्रवाल मूल पिष्टी, राजावर्त परिचालित (लाजवर्द मग़सूल) माणिक्य पिष्टी, नीलम पिष्टी, पुखराज पिष्टी, पन्ना पिष्टी, संग यशव पिष्टी, लाल अकीक पिष्टी, रौप्य भस्म,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुमी मस्तगी का सूक्ष्म चूर्ण, प्रत्येक ७-७ माशा, सुवर्ण भस्म जदवारखताई का सूक्ष्म चूर्ण, नारियल दरियाई का सूक्ष्म चूर्ण, मकोय बीज का सूक्ष्म चूर्ण, उत्कृष्ट मृग मद, सत शिलाजीत, प्रत्येक ३॥ माशा। अर्क गुलाब में १५ दिन खरल करके सुरक्षित रखें।

मात्रा—दो चावल से चार चावल तक खमीरा गाव जबान, मधु अथवा मुरब्बा सेवादि के साथ।

गुण—हृदय निर्बलता निवारक, आक्षेपहर तथा हृदयावसाद के लिये अत्युपयोगी।

[२०] ताम्र-कल्प––

द्रव्य व निर्माण विधि—रसयोग सागर प्रथम भाग (पृ० ४२७) के अनुसार।

[२१] तृणकांत मणिपिष्ट––

द्रव्य व निर्माण विधि– तृण कांत मणि (कहरू बाशमई) का सूक्ष्म चूर्ण बना कर अर्क गुलाब में इतना खरल करें कि उस में रड़क न रहे।

[२२] त्रिफला फाएट––

द्रव्य व निर्माण विधि—हरड़, बेहड़े और आमलों का छिलका समभाग ले कर अधकुटा सा कर लेवें, अध कुटे चूर्ण में से ६ माशा से १॥ तोला तक दो तीन छटांक उत्तप्त जल में डाल ढक कर रख देवें। रात्रि का भीगा हुआ प्रातः और प्रातः काल का भीगा हुआ सायं काल छान कर अनुपान के रूप में प्रयोग कराएं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२३] त्रयोदशांग गुग्गुल--

द्रव्य व निर्माण विधि—भै० रत्नावली (वातव्याध्याधिकार) अनुसार।

[२४] द्राक्षा-क्षार—

निर्माण विधि—द्राक्षा (अंगूर) की लता को शुष्क करके अग्नि द्वारा जला कर भस्म बना, भस्म को जल में घोल और नितार कर क्षार विधि अनुसार क्षार बना लें और अन्य क्षार यथा मूली क्षार अपामार्ग क्षार और षडभुज त्वक (खरबूजे की छाल) क्षार आदि भी इसी प्रकार बनावें।

[२५] दवा-उलमिस्क मोतदिल--

द्रव्य व निर्माण विधि—तिब्बी फामीकोपिया (उर्दू) व यूनानी सिद्धयोग संग्रह (पृ० ६७) के अनुसार।

[२६] दशांग लेप--

द्रव्य व निर्माण विधि—भैरव र० (विसर्पाधिकार) के अनुसार।

[२७] नारी-सुधा—

द्रव्य व निर्माण विधि—शुद्ध गन्धक एक सेर काली जीरी (अरण्य जीरक) एक सेर शुद्ध रसौंत एक पाव सूची मूल घन सत्व (Extract Bellodonna) पांच तोला। काकमाची स्वरस में दो तीन दिन मर्दन करके चने प्रमाण गोलियां बना लें।

मात्रा—एक से दो गोली गो दुग्ध अथवा अर्क मकोय व अर्क सौंफ के साथ प्रातः सायं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण—रज कृच्छ्र, जरायु प्रदाह तथा जरायु शूलादि के लिये लाभदायक।

वक्तव्य—उर्दू की कतिपय पुस्तकों में उक्त योग का उल्लेख तिरियाक नसवां के नाम से आया है परन्तु उस योगमें शुद्ध गन्धक के स्थान में डण्डा गन्धक का और सूची मूल घन सत्व पांच तोले के स्थान में ढाई तोले का उल्लेख आया है। इसके अतिरिक्त उक्त गोलियों में यह विशेषता भी देखी गई है कि यदि इसे दो गोली के स्थान एक गोली की मात्रा में प्रयोग कराया जाय तो अतिरज: के लिये भी लाभप्रद सिद्ध होती है।

[२८] नारदीय लक्ष्मी विलास रस—

द्रव्य व निर्माण विधि—भै० रत्नावली (रसायनाधिकार) के अनुसार !

[२९] पन्ना-पिष्टी—

द्रव्य व निर्माण-विधि—पन्ने को पहले लवणाक्त उष्ण जल द्वारा धोएं, तदनन्तर शुद्ध जल द्वारा धोकर हावनदस्ता में कूट कर सूक्ष्म चूर्ण बना, रेशमी वस्त्र द्वारा छान कर, छने हुए चूर्ण को पक्के खरल में (जो घिसे नहीं) डाल अर्क गुलाब अथवा अर्क केवड़ा द्वारा मर्दन करें। मर्दन करते-करते जब सुरमे (नेत्रांजन) की तरह सूक्ष्म हो जाय तो शुष्क होने पर उसे शीशी में भर लें।

मात्रा—$\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{2}$ रत्ती तक यथोचित अनुपान के साथ।

गुण—हृदय, कासहर तथा ज्वर के लिये लाभप्रद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३०] पञ्च पाषाण भस्म—

द्रव्य व निर्माण विधि—संग यहूद ५ तोला, संग मिक्नातीस ५ तोला, संग सरमाही ३ तोला, संग रासख़ ३ तोला, संग लाजवर्द (राजावर्त) २ तोला एक शराव में आध सेर घृत कुमारी का गुद्दा डालें उसके ऊपर उपर्युक्त पांचों द्रव्यों को रखें, द्रव्यों के ऊपर पुनः आध सेर घृत कुमारी का गुद्दा रखें। तदनन्तर कपड़ मिट्टी द्वारा शराव की सन्धि बन्द कर शुष्क होने पर १५ सेर कण्डों की अग्नि देवें शीतल होने पर सब द्रव्यों को निकाल कर सूक्ष्म चूर्ण बना, चूर्ण को एक दिन घृत कुमारी के स्वरस द्वारा खरल कर टिकियां बना, शुष्क होने पर टिकियों को शराव सम्पुट में बन्द कर पुनः १० सेर कण्डों की अग्नि देवें। इसी प्रकार ५ पुट घृत कुमारी स्वरस की और पांच मूली के स्वरस की देवें। १० पुट के बाद औषधि को खरल करके शीशी में भर लेवें।

मात्रा—दो रत्ती से चार रत्ती तक मूली क्षार अथवा किसी अन्य मूत्रल क्षार के साथ मिला कर दिन में दो तीन बार गरम जल अथवा किसी मूत्रल क्वाथ के साथ देवें।

गुण—वृक्क शूल और वृक्काश्मरी के लिये उपयोगी। जब वृक्क शूल हो रहा हो तो दो दो घण्टे बाद देवें।

[३१] प्रदरान्तक लोह—

द्रव्य व निर्माण विधि—भै० रत्नावली के अनुसार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण—रज कृच्छ, जरायु प्रदाह तथा जरायु शूलादि के लिये लाभदायक।

वक्तव्य—उर्दू की कतिपय पुस्तकों में उक्त योग का उल्लेख तिरियाक नसवां के नाम से आया है परन्तु उस योगमें शुद्ध गन्धक के स्थान में डण्डा गन्धक का और सूची मूल घन सत्व पांच तोले के स्थान में ढाई तोले का उल्लेख आया है। इसके अतिरिक्त उक्त गोलियों में यह विशेषता भी देखी गई है कि यदि इसे दो गोली के स्थान एक गोली की मात्रा में प्रयोग कराया जाय तो अतिरजः के लिये भी लाभप्रद सिद्ध होती है।

[२८] नारदीय लक्ष्मी विलास रस—

द्रव्य व निर्माण विधि—भै० रत्नावली (रसायनाधिकार) के अनुसार!

[२९] पन्ना-पिष्टी—

द्रव्य व निर्माण-विधि—पन्ने को पहले लवणाक्त उष्ण जल द्वारा धोएं, तदनन्तर शुद्ध जल द्वारा धोकर हावनदस्ता में कूट कर सूक्ष्म चूर्ण बना, रेशमी वस्त्र द्वारा छान कर, छने हुए चूर्ण को पक्के खरल में (जो घिसे नहीं) डाल अर्क गुलाब अथवा अर्क केवड़ा द्वारा मर्दन करें। मर्दन करते-करते जब सुरमे (नेत्रांजन) की तरह सूक्ष्म हो जाय तो शुष्क होने पर उसे शीशी में भर लें।

मात्रा—$\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{2}$ रत्ती तक यथोचित अनुपान के साथ।

गुण—हृदय, कासहर तथा ज्वर के लिये लाभप्रद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३०] पञ्च पाषाण भस्म—

द्रव्य व निर्माण विधि—संग यहूद ५ तोला, संग मिक्नातीस ५ तोला, संग सरमाही ३ तोला, संग रासख़ ३ तोला, संग लाजवर्द (राजावर्त) २ तोला एक शराव में आध सेर घृत कुमारी का गुद्दा डालें उसके ऊपर उपर्युक्त पांचों द्रव्यों को रखें, द्रव्यों के ऊपर पुनः आध सेर घृत कुमारी का गुद्दा रखें। तदनन्तर कपड़ मिट्टी द्वारा शराव की सन्धि बन्द कर शुष्क होने पर १५ सेर कण्डों की अग्नि देवें शीतल होने पर सब द्रव्यों को निकाल कर सूक्ष्म चूर्ण बना, चूर्ण को एक दिन घृत कुमारी के स्वरस द्वारा खरल कर टिकियां बना, शुष्क होने पर टिकियों को शराव सम्पुट में बन्द कर पुनः १० सेर कण्डों की अग्नि देवें। इसी प्रकार ५ पुट घृत कुमारी स्वरस की और पांच मूली के स्वरस की देवें। १० पुट के बाद औषधि को खरल करके शीशी में भर लेवें।

मात्रा—दो रत्ती से चार रत्ती तक मूली क्षार अथवा किसी अन्य मूत्रल क्षार के साथ मिला कर दिन में दो तीन बार गरम जल अथवा किसी मूत्रल क्वाथ के साथ देवें।

गुण—वृक्क शूल और वृक्काश्मरी के लिये उपयोगी। जब वृक्क शूल हो रहा हो तो दो दो घण्टे बाद देवें।

[३१] प्रदरान्तक लोह—

द्रव्य व निर्माण विधि—भै० रत्नावली के अनुसार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३२] प्रेमपुष्प्यादिचूर्ण—

द्रव्य और निर्माण विधि—प्रेमपुष्पीकाण्ड-त्वक् का सूक्ष्म चूर्ण ५ तोला, शङ्खकीट का सूक्ष्म चूर्ण २॥ तोला, दूधबच का सूक्ष्म चूर्ण ढाई तोला, रस सिन्दूर एक तो० सबको ५-६ घण्टे तक निरन्तर खरल करके शीशी में भर लें।

मात्रा व उपयोग—४ रत्ती से १ माशा तक। दुग्धपायी शिशुओं के लिये १ रत्ती से २ रत्ती तक मधु, दूध अथवा गुलाब-जल के साथ, दिन में २–३ बार प्रयोग करायें।

गुण—आक्षेपहर, निद्रा कारक, तथा अपतन्त्रक और अपस्मार के लिये उपयोगी। परन्तु अपस्मार के जिन रोगियों के रोग के इतिहास के साथ शिरो आघात का सम्बन्ध होता है उन्हें उक्त औषधि द्वारा लाभ नहीं होता। उन्हें लाभ क्यों नहीं होता? इसका उत्तर स्वानुभव सार समुच्चय में दिया जायेगा।

वक्तव्य—प्रेम पुष्पी (जिस का उल्लेख उक्त योग में आया है) एक विशेष उपयोगी और गुणकारी वनस्पति है जिसका लैटिन नाम Passiflora incarnata है। जिन महानुभावों को प्रेमपुष्पी के गुण कर्म और वानस्पतिक विवरणादि से अवगत होना अभीष्ट हो, उन्हें लेखक के उस लेख पर दृष्टिपात करना चाहिये कि जो लेख मई १९५७ ई० की आयुर्वेद महा सम्मेलन पत्रिका में 'प्रेमपुष्प' शीर्षक से प्रकाशित हो चुका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३३] प्रवाल पिष्टी—

निर्माण विधि—पन्ना पिष्टीवत् ।

[३४] पुष्यानुग चूर्ण—

द्रव्य और निर्माण-विधि—भै० रत्नावली के अनुसार।

[३५] मतान्त्र धात्री लोह—

द्रव्य और निर्माण विधि—कुट्टित यव-तण्डुल ३२ तो०, पाकार्थ जल १२८ तो०, शेष ३२ तोला, वस्त्रपूत शतमूली रस, आमलकी रस, दधि और दुग्ध प्रत्येक ६४ तो०, भूमि कूष्माण्ड रस, गव्य घृत, इक्षु रस, प्रत्येक ३२ तो० सब को एक पात्र में एकत्र करें और उसमें गो मूत्र द्वारा शोधित मण्डूर का सूक्ष्म चूर्ण ४८ तोला परिक्षिप्त करें। तदनन्तर पात्र को चूल्हे पर चढ़ा कर मन्दाग्नि द्वारा पाक करें। पाक शेष होने पर शीतल होने से पूर्व ही पाक में निम्न द्रव्यों का सूक्ष्म चूर्ण मिला कर आलोढ़न करें। श्वेत जीरा, धनिया, दाल चीनी, तेज पत्र, इलायची, गज पिप्पली, मोथा, हरीतकी त्वक्, लोह भस्म, अभ्रक भस्म, सोंठ, मिर्च, पीपल, रेणुका आमला, बहेड़ा, तालीस पत्र, नाग केशर, प्रत्येक दो तोला।

मात्रा—दो रत्ती से एक माशा तक। गो दुग्ध अथवा जल के साथ भोजन से पूर्व व भोजनोपरांत।

गुण—अम्ल पित्त एवं तज्जन्य शूलादि के लिये अत्युपयोगी।
(बङ्गला आयुर्वेद शिक्षा से उद्धृत)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्तव्य—आयुर्वेद शिक्षा के यशस्वी लेखक श्री अमृत लाल गुप्त जी ने मात्रा तीन माशा से एक तोला तक लिखी है। परन्तु लेखक ने इतनी मात्रा में औषधि किसी को भी प्रयोग नहीं कराई। यद्यपि लेखक अपने रोगियों को दो रत्ती से एक माशा तक की मात्रा में सेरों औषधि प्रयोग करा चुका है। अतएव यदि किसी वङ्ग देशाधिवासी महानुभाव को आयुर्वेद शिक्षा के अनुसार औषधि अधिक मात्रा में प्रयोग कराने का अवसर प्राप्त हुआ हो तो वह अपने अनुभव पर प्रकाश डालने की कृपा करें। —लेखक।

[३६] मकरध्वज व सिद्ध मकरध्वज—

द्रव्य और निर्माण-विधि—रस तरंगिणी व रस विज्ञानानुसार।

[३७] मल्लादि वटी—

द्रव्य व निर्माण विधि—श्वेत मल्ल (संखिया); चोबचीनी, हिर्वी मूल (प० चोक), शुद्ध कुचला, कृष्ण मिर्च, पिप्पली, सब एक-एक तो०। अदरक के निथरे हुए रस द्वारा ४१ दिन खरल करके आधी आधी रत्ती की गोलियां बना लेवें।

मात्रा और उपयोग—एक एक गोली प्रातः सायं दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण—नाड़ी व्रण भगन्दर तथा अन्तर्मुखी फोड़ों आदि के लिये लाभदायक।

[३८] मल्ल सिंदूर—

द्रव्य व निर्माण विधि—रसायन सारानुसार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३९] माहेश्वर घृत—

द्रव्य व निर्माण विधि—भै० रत्नावल्योक्त महा पैशाचक घृतानुसार, अन्तर केवल इतना ही है कि महा पैशाचक घृत के क्वाथ्य द्रव्यों में चार सेर घृत के लिये लेखक दस तो० सर्पगन्धा मूल को भी परिक्षिप्त करता है और वृश्चकाली के स्थान में लेखक दरुनज अकरबी नामक द्रव्य को व्यवहार में लाता है।

[४०] माहेश्वर मिश्रण—

द्रव्य और निर्माण विधि—सर्पगन्धा मूल चूर्ण दस तोला, प्रवाल पिष्टी एक तोला, शुक्ति पिष्टी एक तोला, अभ्रक भस्म एक तोला। सब को मिला कर यदि हो सके तो ब्राह्मी और शङ्खपुष्पी स्वरस की एक-एक भावना दे लेवें, नहीं तो वैसे ही एक घण्टा खरल करके शीशी में भर लेवें।

मात्रा और उपयोग—छः रत्ती से डेढ़ माशा तक दिन में दो से चार बार तक अर्क गुलाब अथवा दूध के साथ प्रयोग करायें।

गुण—उन्माद हर।

[४१] माहेश्वर मूल त्वक् चूर्ण—

निर्माण विधि—सर्प गन्धा की जड़ की छाल को कूट कर सूक्ष्म चूर्ण बना लिया जाय।

मात्रा और उपयोग—तीन से चार रत्ती तक रक्त चापाधिक्य के लिये मुक्ता पिष्टी अथवा माणिक्य पिष्टी के साथ मिश्रित करके दिन में दो-तीन बार अर्क गुलाब अथवा दूध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ प्रयोग करायें।

[४२] महायोगराज गुग्गुल—

द्रव्य तथा निर्माण विधि—शारङ्गधर संहिता के अनुसार।

[४३] माणिक्य पिष्टी व मुक्ता पिष्टी—

निर्माण विधि—पन्ना पिष्टीवत्!

[४४] मृगांक चूर्ण—

द्रव्य और निर्माण विधि—शङ्ख भस्म, वराटिका भस्म, शुक्ति भस्म, समुद्रफेन, वंशलोचन, प्रत्येक एक-एक तोला। सब को खरल में डाल कर मर्दन करें और मर्दन करते समय इतनी मात्रा में रस सिंदूर मिलायें कि औषधि का रंग ईषत् गुलाबी हो जाय।

मात्रा—चार रत्ती से छः रत्ती तक दिन में दो तीन बार।

अनुपान—मधु मिश्रित दूर्वा स्वरस अथवा वांसा स्वरस।

गुण—संकोचक तथा रक्त और मल स्तम्भक।

वक्तव्य—उपर्युक्त योग प्रातः स्मरणीय महा महोपाध्याय क० डा० श्री गणनाथ सेन जी के उस स्नेह की यादगार है कि जिस स्नेह के वशीभूत होकर सन् १९३२ ई० में श्री महा महोपाध्याय जी ने काश्मीर पधार कर इन पंक्तियों के लेखक को अपने आतिथ्य का सौभाग्य प्रदान किया था। यद्यपि स्व० महा महोपाध्याय जी ने तो उक्त योग यक्ष्मा विकार जन्य रक्त निष्ठीवन और पानीवत् पतले दस्तों के प्रतिकारार्थ बताया था परन्तु योग अतिरजः और रक्तमेह (Heamaturia)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये भी उपयोगी सिद्ध हो चुका है, बल्कि प्रथमतः लेखक ने इसे प्रयोग ही रक्तमेह में किया था। अत एव जिन महानुभावों को उक्त योग से लाभ उठाने का अवसर प्राप्त होवे उन्हें स्वर्गीय महा महोपाध्याय जी को धन्यवाद देना चाहिये।

—लेखक।

[४५] रक्तार्गल रस—

द्रव्य और निर्माण विधि—लोह भस्म छः माशा, अभ्रक भस्म छः माशा शुद्ध रसौंत एक तोला, दम-उल-अख़्वैन (खून खराबा) एक तोला, फिटकड़ी छः माशा, रक्त चन्दन एक तोला, स्वर्ण गेरिक एक तोला, रस सिंदूर एक तोला, पीपल की लाख एक तो०, बबूल के पत्तों के स्वरस में खरल करके दो दो रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा और उपयोग—एक-एक गोली अयपान के स्वरस अथवा दूर्वा के स्वरस के साथ दिन में तीन-चार बार प्रयोग कराएं।

गुण—अतिरजः, रक्त प्रदर तथा रक्तर्शादि के लिये अत्युपयोगी है।

वक्तव्य—उपर्युक्त योग के किञ्चित् परिवर्तित रूप का शोणितार्गल रस के नाम से आयुर्वेद सोपान नामक बङ्गला पुस्तक तथा वैद्यक चिकित्सा सार नामक गुजराती पुस्तक में भी उल्लेख आया है परन्तु लेखक को प्रातः स्मरणीय आचार्य प्रवर पूज्य यादव जी त्रिकम जी महाराज ने स० १९३३ ई० में अपने एक पत्र में निम्न शब्दों सहित योग लिपि-बद्ध करके भेजा था।

'आप ने रक्त प्रदर की जिस रुग्णा का बिवरण लिख कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेजा है उसे आप दिन में तीन-चार बार रक्तार्गल रस (जिस का योग लिखा जा रहा है) प्रयोग कराएं और पंच वल्कल के क्वाथ का डूश कराएं तथा न्यग्रोधादि तेल का पिचु धारण करायें।

स्वानुभव—लेखक काश्मीर में एक रुग्णा को रक्तार्गल रस प्रयोग करा रहा था और प्रयोग काल में ही औषधि समाप्त हो गई। चूंकि नवीन औषधि बनाने के लिये कीकर के पत्तों का स्वरस वहां अनुपलब्ध था। अतएव लेखक ने कीकर के पत्तों के स्वरस के स्थान में पहलगास (Millefolium) नामक रक्त रोधक वनस्पति के स्वरस को डा० नैश (Dr. E. B. Nash) के उस लेख के आधार पर प्रयोग किया, कि जिस लेख का उल्लेख काशी राम के मैटीरिया मैडिका में निम्न शब्दों में आया है:—

डा० नैश लिखते हैं कि जब मैं युवक था तो मेरी नाक से नकसीर के रूप में प्रचुर मात्रा में रक्त स्राव होता था, विशेष उपचार के बावजूद भी मैं ठीक न हुआ और क्षीण होता गया अन्ततः मेरी दादी ने मुझे मिलीफोलियम के पौदे को दिखाया और मैंने उस के थोड़े से पत्र चबा लिये परिणाम स्वरूप मैं स्वस्थ हो गया।

अस्तु, डा० नैश के उक्त लेख के आधार पर पहल गास के प्रयोग का परिणाम यह, कि उसके स्वरस द्वारा निर्मित होने वाला रक्तार्गल रस कीकर के पत्तों के स्वरस द्वारा निर्मित होने वाले रक्तार्गल रस से कई गुणा अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ।

[४६] रजत विद्रुम—

द्रव्य और निर्माण विधि—प्रवाल पिष्टी ढाई तोला, रजत पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवा तो० । प्रथम रजत पत्रों को एक माशा कुज्जे की मिश्री के साथ खरल करें, जब वरकों की चमक विलुप्त हो जाय, (मिश्री के साथ खरल करने से मिनटों में ही चमक जाती रहती है) तो प्रवाल पिष्टी मिला, एक सप्ताह तक पुन: खरल कर, औषधि को शीशी में भर लें ।

मात्रा—दो रत्ती ।

प्रयोग—प्रात: सायं मक्खन अथवा शर्बत अनार के साथ ।

गुण—पित्त शामक, हृदय तथा प्रमेह और प्रदर नाशक ।

(यादव वचनामृत से उद्धृत)

४७] रत्नगर्भ-पोटली रस——

द्रव्य व निर्माण विधि—वज्र भस्म, पन्ना भस्म, वैक्रांत भस्म, मुक्ता पिष्टी, प्रवाल पिष्टी, माणिक्य भस्म, मकरध्वज, पुखराज भस्म, गोमेद भस्म, नीलम भस्म, शङ्ख भस्म, स्फटिक भस्म, चुन्नी भस्म, वैदुर्य भस्म; राजावर्त भस्म; प्रत्येक १—१ कर्ष; शुद्ध गन्धक का चूर्ण एक टङ्क; सुवर्ण के वरक बारह रत्ती; सब को घृत कुमारी के स्वरस में छ: सात दिन खरल करके एक एक तोला की अथवा छोटी बड़ी गोलियां बना, एक रेशम के वस्त्र पर थोड़ा सा गन्धक का चूर्ण छिड़क, उसमें एक एक गोली पोटली वत् बांध, एक मृत्पात्र में इतना शुद्ध गन्धक डाल मन्दाग्नि पर द्रव करें कि जिस में पोटली दोलायन्त्रवत् पक सके । पोटली को द्रव रूप गन्धक में इतनी देर पकाएं कि द्रव का रंग नीलाभ हो जाय । तदनन्तर पोटली को बाहर निकाल कर शीतल करें और शीतल होने पर वस्त्र में से गोली निकाल कर साफ करके रख लेवें ।

प्रयोग विधि—किसी स्वच्छ पत्थर पर अथवा छोटे खरल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुग्ध अथवा किसी उचित अनुपान के साथ १ चावल से ४ चावल तक घिस कर रोगी को प्रयोग करायें। यदि शीतांग के कारण रोगी पतनावस्था को प्राप्त हो रहा हो तो गोली को घिसते समय उसके साथ अल्प मात्रा में केसर कस्तूरी अथवा जायफल भी मिला लें।

वक्तव्य—रत्न-गर्भ पोटली का उपर्युक्त योग लेखक को तो प्रातः स्मरणीय आचार्य प्रवर पूज्य यादव जी त्रिकम जी महाराज ने १॥ तोला के लगभग रत्नगर्भ पोटली सहित उस स्नेह की यादगार के रूप में प्रदान किया था, कि जिस स्नेह के वशीभूत होकर सं० १९४५ ई० में पूज्य आचार्य जी ने सपरिवार कश्मीर पधार कर निरन्तर डेढ़ मास तक अतिथि रूप सुदामा-कुटी (लेखक के निवासागार) को अपने पद-पद्मों द्वारा सुपवित्र किया था।

परन्तु उपर्युक्त योग का उल्लेख रसयोग सागर में भी योग में प्रयुक्त होने वाले रत्न-समूह के भस्म-विधान सहित आया है और भस्मों का विधान भी वही है, कि जिस विधानानुसार पूज्य आचार्य जी तथा रसयोग सागर के यशस्वी संग्रहकार पू० पण्डित हरिप्रपन्न जी रत्नों की भस्में बनाते थे। (यादव वचनामृत से उद्धृत)

[४८] रस-सिन्दूर—

द्रव्य और निर्माण विधि—रस विज्ञानानुसार।

[४९] रास्नादि क्वाथ (महा०)

द्रव्य और निर्माण विधि—शारङ्गधरानुसार।

[५०] लाई चूर्ण—

द्रव्य व निर्माण विधि—रसराज सुन्दरानुसार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५१ वङ्ग भस्म विशेष—

द्रव्य व निर्माण विधि—स्वर्णवङ्ग को घृत कुमारी स्वरस, वट-दुग्ध, शतावरी स्वरस तथा गो दुग्ध आदि द्वारा भावित करके ७–८ पुटें दे ली जाएं।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक उचित अनुपान के साथ।

गुण—वङ्ग भस्म के समान परन्तु साधारण वङ्ग भस्म से कुछ अधिक प्रभावशाली है।

५२ वराटिकादि वटी—

द्रव्य व निर्माण विधि—वराटिका भस्म २ तोले, १० तोले निम्बू स्वरस से घोट कर सुखा लें। फिर आधा तोला कच्चा नीला थोथा पीस के मिला कर पुनः १० तोले निम्बू स्वरस में घोट कर सुखावें, फिर २ तोला पीली हरीतकी का चूर्ण मिला पुनः २० तोला निम्बू स्वरस द्वारा घोट कर सूखने पर चने प्रमाण गोलियां बना लें।

मात्रा—१ गोली प्रातः दही में मिला कर खिलायें एक दोपहर एक सायं काल को दही अथवा जल के साथ प्रयोग करायें।

(वैद्यरत्न श्री सुखराम दास जी ओझा के पत्र से उद्धृत)

वक्तव्य—उपर्युक्त गोलियां बनाने का अवसर तो लेखक को अभी तक प्राप्त नहीं हुआ, परन्तु दो रोगियों को गोलियां प्रयोग कराने का अवसर प्राप्त हो चुका है। कारण कि स्व० ओझा जी सं० १९४४ ई० में जब कश्मीर पधारे थे तो थोड़ी सी गोलियां प्रयोगार्थ प्रदान कर गये थे। अस्तु, गोलियां जब उपयोगी सिद्ध हुई तो पत्र द्वारा गोलियों के योग के लिये श्री ओझा जी से प्रार्थना की गई। परिणाम स्वरूप आदरणीय ओझा जी ने दिनाङ्क ९–२–४५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को निम्न शब्दों सहित उपर्युक्त योग लिख कर भेजने की कृपा की थी—

वैद्यराज श्री वासुदेव जी !

सादर बन्दे !

पत्र आपका प्राप्त हुआ, पढ़ कर अत्यानन्द हुआ। इस पत्र में आपको सूजाक का प्रयोग लिख रहा हूँ तथा नवरत्न राज मृगाङ्क के लिये आप ने लिखा है, सो आप को पोस्ट द्वारा थोड़ा सा भेज देंगे। कैंसर की औषधि तो तैयार है, केवल पीपल की राख की आवश्यकता है। सो लाड़काना निवासी स्वामी चेतनानन्द जी को लिखा है। राख जब आ जायगी तो औषधि तैयार करने पर आपको सूचित करेंगे। अन्य कोई सेवा हो तो अवश्य लिखें।

भवदीय—

वै० र० सुखराम दास जी टी. ओझा,

कराची।

५३ वातकुलांतक रस—

द्रव्य व निर्माण विधि—भैषज्य रत्नावली के अनुसार।

५४ वातकुलांतक विशेष—

द्रव्य और निर्माण विधि—भैषज्य रत्नावल्योक्त वातकुलांतक ४॥ तोला, ऊदसलीब ६ माशा, अकरकरा ६ माशा, दरुनज अकरबी ६ माशा, गोरोचन ३ माशा, वातकुलांतक में अन्य द्रव्यों के सूक्ष्म चूर्ण को मिला कर ब्राह्मी व शङ्खपुष्पी के स्वरस की ३-३ भावना देकर १-१ रत्ती की गोलियां बना लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा—१ से २ गोली तक मधु अथवा खमीरा गावजबान आदि के साथ दिन में २ से ३ बार तक।

गुण—आक्षेपहर, हृदय तथा अपतन्त्रक, अपस्मार और मानसिक विकार के लिये उपयोगी है।

नोट—उक्त औषधि में पारद-गन्धक की कज्जली के स्थान में यदि मकरध्वज को व्यवहृत किया जाय तो औषधि के हृदय-गुण में विशेष वृद्धि हो जाती है।

५५ वात कुलांतक स्वल्प—

द्रव्य व निर्माण विधि—भै० रत्नावल्योक्त वातकुलांतक कस्तूरी विरहित ८ तोला, जुन्द बेदस्तर का सूक्ष्म चूर्ण २ तोला। तीन-चार घण्टा खरल करके शीशी में भर लें।

मात्रा—१ रत्ती से ३ रत्ती तक। सहपान—मधु।

अनुपान—जटामांसी फाण्ट।

गुण—रजोविकार विशेषतया रजः कृच्छ्र जन्य अपतन्त्रक के लिये उपयोगी। यदि रुग्णा के उदर में से वायु का गोला सा उठता हो तो प्रति मात्रा २ चावल हींग भी मिला ली जाय।

५६ वात चिन्तामणि (बृहद्)—

द्रव्य व निर्माण विधि—भै० रत्नावली के अनुसार।

५७ शिवाक्षार पाचन चूर्ण—

द्रव्य व निर्माण-विधि—हिंग्वाष्टक चूर्ण १० तोला, सोडा बायकार्ब १० तोला, लघु हरीतकी ३० तो०। प्रथम खरल में सोडा बाय-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्ब को घोटें, तदनन्तर उसमें हरीतकी चर्ण और हिंग्वाष्टक चर्ण को धीरे-धीरे मिला कर खरल करें। फिर कपड़छान करके शीशी में भर लें।

मात्रा—३ माशा से ६ माशा तक।

अनुपान—स्वच्छ जल अथवा कवोष्ण जल।

प्रयोग—प्रात: सायं अथवा आवश्यकतानुसार।

गुण—अजीर्ण, अम्लपित्त, कब्ज़, शूल तथा आध्मानादि के लिए उपयोगी है।

[५९] शुक्ति-पिष्टी—

निर्माण विधि—पन्नापिष्टी वत्।

६० शूल गज केसरी रस—

द्रव्य और निर्माण-विधि—योग रत्नाकरानुसार।

६१ सर्पगन्धा चूर्ण—

द्रव्य और निर्माण विधि—सर्पगन्धा मूल को कूट-पीस कर चूर्ण बना लें।

मात्रा—रक्तचापाधिक्य के लिये ३ रत्ती से ४ रत्ती तक और उन्माद के लिये ६ रत्ती से १॥ माशा तक।

प्रयोग—दिन में २–३ बार।

अनुपान—अर्क गुलाब अथवा गोदुग्ध।

६२ सारस्वतारिष्ट—

द्रव्य व निर्माण विधि—रस तन्त्रसारानुसार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६३ सुधा-कल्प--

द्रव्य व निर्माण विधि—अकीक पिष्टी, संग यशब पिष्टी, प्रवाल पिष्टी, शङ्ख चूर्ण, बृहद्वराटिका (बड़े कौड़) चूर्ण, शुक्ति पिष्टी, गोदन्ती भस्म--प्रत्येक २-२ तोला, अभ्रक भस्म १४ तोला। प्रथम गौ के दूध में एक दिन खरल कर, टिकियां बना, शुष्क कर लें और एक शराव-सम्पुट में बन्द कर १० सेर कण्डों की अग्नि देवें। तदनन्तर अजवायन, वांसा, गिलोय, चिरायता, नीम, करंजवा, घृत कुमारी, कासनी और दारु हरिद्रा के स्वरस अथवा क्वाथ में एक-एक दिन खरल कर टिकिया बना, शराव सम्पुट में बन्द कर पहली पुट वत् एक-एक पुट दे लेवें और अन्तिम पुट बकरी के दूध की देवें। जब ११ पुटें पूरी हो जायें तो तदुपरांत प्रति तोला १ रत्ती स्वर्ण भस्म मिला कर निरन्तर दो दिन खरल करें।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक। सहपान—मधु-मिश्रित मक्खन अथवा वांसावलेह।

गुण—ज्वर, कास, विशेषतया यक्ष्मा जन्य ज्वर कासादि के लिये उपयोगी है।

वक्तव्य—उपर्युक्त योग उसी योग का ही परिवर्तित रूप है, कि जिस योग का निर्माण झंग (पाकिस्तान) निवासी हकीम डा० मुहम्मद लतीफ़ बी. ए. के हां अकसीर तपदिक़ के नाम से होता है। स्वर्ण भस्म के अतिरिक्त लेखक उक्त योग में यदा कदा मुक्ता-पिष्टी और माणिक्य पिष्टी भी संयुक्त कर लिया करता है, लेकिन अधिकतर लेखक इसे स्वर्ण वसन्त मालती के साथ ही उपयोग में लाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६४ स्मृति-सागर रस--

द्रव्य और निर्माण विधि—रस योगसागर के अनुसार।

६५ स्वर्ण बसन्त-मालती--

द्रव्य और निर्माण विधि—भै० रत्नावली के अनुसार, लेकिन खर्पर के स्थान में लेखक यशद भस्म को प्रयोग में लाता है। यशद भस्म को प्रयोग में क्यों लाया जाता है? इसका उत्तर स्वानुभव सार-समुच्चय में दिया जाएगा।

मात्रा—१ रत्ती।

६६ स्वर्ण बसन्त-मालती नं० १

द्रव्य व निर्माण विधि—स्वर्ण बसन्त-मालती वत् ही। अन्तर केवल इतना ही है, कि शुद्ध हिंगुल के स्थान में मकरध्वज और सोने के वरकों के स्थान में स्वर्ण भस्म प्रयोग में लाई जाती है।

मात्रा—आधी रत्ती से १ रत्ती तक।

गुण—योग नं० ६५ की तरह ही, लेकिन उस से कुछ विशेष प्रभावशाली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तिम वक्तव्य

"जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" जिस सत्यता और सचाई से ओत-प्रोत है, उस सत्यता और सचाई के उद्घाटन का उद्देश्य न तो आधुनिक चिकित्सा पद्धति का विरोध है और न ही लेखक आधुनिक चिकित्सा पद्धति की प्रत्येक बात का विरोधी है। प्रत्युत इसके विपरीत आधुनिक किकित्सा पद्धति की अनेक विशेषताओं के विषय में लेखक की यह धारणा है, कि वह विशेषताएं चिकित्सा विज्ञान के लिये अभिमान जनक और जनता-जनार्दन के कल्याण के लिये वरदान रूप हैं। परन्तु लेखक आधुनिक चिकित्सा पद्धति के अनुचरों, एजेण्टों और अनन्य उपासकों के उस आयुर्वेद-विरुद्ध प्रलाप का प्रतिकार भी अनिवार्य समझता है, कि जिस प्रलाप का कारण आधुनिक चिकित्सा पद्धति की भृत्यता और आयुर्वेद विज्ञान विषयक अविज्ञता है। जैसा कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति के विशेष पारंगत श्री डा० नरहर डेसाई एम. डी. की उस प्रार्थना से भी स्पष्ट है, कि जो प्रार्थना उन्होंने स्वानुभव के आधार पर आयुर्वेद विज्ञान के विरुद्ध अनर्गल प्रलाप करने वालों से 'जंगलनी जड़ी बूटी' नामक गुजराती पुस्तक के अनुसार कर-बद्धावस्था में निम्नांकित वक्तव्य के रूप में की है—

''देसी औषधियों के विरुद्ध बोलने वाले डाक्टरों से मैं दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूं, कि आप एक बार आयुर्वेद शास्त्र का अध्ययन और अनुशीलन करें। उसके सम्पूर्ण रहस्यों को समझने का प्रयास करें। उसके आश्चर्य-

Gurukula Kangri Library

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मय परिणाम का अनुभव करें। तदुपरांत यदि नाक चढ़ानी हो तो चढ़ायें।"

(जं० नी. ज. बू. भाग १–२ पृ० २७३)

अस्तु, माननीय श्री डा० देसाई जी ने अपने वक्तव्य द्वारा जिस आश्चर्यमय परिणाम के विषय में संकेत किया है, उस परिणाम के प्रत्यक्ष प्रमाण तो अनर्गल प्रलाप के प्रतिकारार्थ उन अद्भुत, आश्चर्यजनकऔर अकाट्य घटनाओं के रूपमें पाठकों की सेवामें प्रस्तुत हैं, कि जिन घटनाओं का उल्लेख प्रस्तुत पुस्तिका में "जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" के रूप में आया है और परोक्ष प्रमाण वह तथ्य है, कि जो **श्रीमती डोरेथी चपलन** कृत "Some Aspects of Hindu Medical Treatment" नामक उस कृतिमें निहित है, कि जिस कृति को लुज़ाक एण्ड कम्पनी (M/s. Luzzack & Co) लण्डन ने सं० १६३० ई० में आयुर्वेद विज्ञान के उन चमत्कारों पर प्रकाश डालने के लिये प्रकाशित किया था, कि जिन चमत्कारों का प्रदर्शन लंडन में कविराज श्री एम. एस. मित्रा के चिकित्सा-चातुर्य द्वारा हुआ था और उक्त कृति में निहित तथ्य का सार लेखिका के लेखानुसार यह है कि—कविराज श्री एम. एस. मित्रा के एक बार के परामर्श का फ़ीस ४ पौंड थी और वह केवल उन्हीं रोगियों की ही चिकित्सा करते थे, जिनके इलाजमें आधुनिक चिकित्सा पद्धति के महाप्रभुओं का चिकित्सा-चातुर्य असफल हो जाता था। अस्तु, जो रोगी किसी कारणवश स्व. कविराज जी से चिकित्सा नहीं करा सके, उनके विषय में लेखिका महोदया ने यह विचार व्यक्त किया है, कि उन्होंने एक स्वर्ण-अवसर को खो दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्यावश्यक निवेदन !

"जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" नामक नन्हीं सी कृति, जो लेखक की अल्पज्ञता एवं तत्सम्बन्धी अनुभव तथा आयुर्वेद की महत्ता की परिचायक पुस्तिका के रूप में पाठकों के समक्ष है। इसमें शाब्दिक भूलों और प्रूफ सम्बन्धी अशुद्धियों के रूप में कुछ साहित्यिक त्रुटियों का होना तो स्वाभाविक ही है, क्योंकि पुस्तिका का सम्पादन और प्रकाशन सम्बन्धी कार्य तो उस प्रयास द्वारा सम्पन्न हुआ है, जो लेखक का एतद्विषयक प्रथम प्रयास है और पुस्तिका प्रकाशित हुई है उस अहिन्दी भाषी प्रदेश में, कि जिस प्रदेश में राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रकाशन उन सुविधाओं से वञ्चित है, कि जो सुविधाएं उसे भारत के अन्य प्रदेशों में प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त पुस्तिका संपादित तो हुई थी आयुर्वेद जगत् के प्रति समर्पित होने के लिये, परन्तु उसे समर्पित होना पड़ा है, परिवर्तित रूप में आदरणीय पं० नेहरू जी के आयुर्वेद जगत् सम्बन्धी आदेश रूप संकेत के अनुसरण स्वरूप अनुपम देनादि सहित, आधुनिक चिकित्सा पद्धति के प्रति उस भ्रांति के निवारणार्थ, कि जिस भ्रांति के कारण पृष्ठ ४ पर समुद्धृत श्री पं० नेहरू जी के सदुपदेशानुसार आधुनिक चिकित्सा पद्धति के डाक्टरों को तो यह भ्रम हो गया है कि जीवन के विषय में सारी जानकारी हमें ही प्राप्त है और पृष्ठ १० पर समुद्धृत माननीया राजकुमारी अमृत कौर जी के वास्तविकता विरुद्ध वक्तव्य के अनुसार आधुनिक चिकित्सा पद्धति के अनुचरों और उपासकों को यह वहम हो गया है, कि भारत की ८५ प्रतिशत जनता की चिकित्सा का भार वहन करने वाला देसी इलाज मामूली बीमारियों के लिये ही मुफीद है, क्योंकि बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी बीमारियों के इलाज का टेका अल्ला मीयां ने ऐलोपैथी को दे दिया है।

अस्तु, उपर्युक्त भ्रम और वहम के उपचारार्थ भ्रान्ति निवारक विषय तथा तत्सम्बन्धी अकाट्य तथ्यों को प्रस्तुत पुस्तिका में स्थान प्रदान करने के लिये लेखक को न केवल पुस्तिका के पूर्व रूप को संक्षिप्त ही करना पड़ा है, अपितु कुछ विशेष महत्वपूर्ण विषय को पुस्तिका से विलग भी करना पड़ा है। यह सारा कार्य चूंकि एक सप्ताह के भीतर ही हुआ है, इस लिये शाब्दिक भूलों और छोटी २ अशुद्धियों की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया जा सका, जिन में से वह अशुद्धियां लेखक की दृष्टि में विशेष खटक रही हैं, कि जिन का प्रारम्भिक १४ पृष्ठों में लेखक की लेखनी द्वारा संशोधन हुआ है।

अत एव सुविज्ञ पाठकों की सेवा में विनम्र निवेदन है कि उक्त प्रकार की जो २ त्रुटियां आप के दृष्टिगोचर हुई हों, न केवल उन के सम्बन्ध में ही संकेत रूप सूचना देने की कृपा करें, अपितु पुस्तिका के विस्तारात्मक सुधार के विषय में भी आपके जो विचार हों उन पर भी प्रकाश डालने की अनुकम्पा करें। कारण कि कतिपय आयुर्वेद हितैषी सुहृद्वरों ने (जिनको पुस्तिका के प्रकाशितांश के अवलोकन का अवसर प्राप्त हो चुका है) यह विचार व्यक्त किया है कि पुस्तिका न केवल आयुर्वेद की असाधारण महत्ता की ही द्योतक है, अपितु आयुर्वेद के प्रचारार्थ वैद्येतर सर्व साधारण में भी प्रसारित होने के योग्य है, इस लिये पुस्तिका के द्वितीय संस्करण को विशेष सरल, सुबोध और ग्रन्थ संकेत सम्बन्धी योगों आदि सहित सुविस्तृत रूप में प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराना चाहिये। बल्कि कुछ महानुभावों ने तो यह संकेत भी किया है कि पुस्तिका अन्य भाषाओं विशेषतया उर्दू और अंग्रेजी में भी प्रकाशित होनी चाहिये, ताकि पुस्तिका सर्व साधारण के लिये भी वैसी ही उपयोगी बन जाय, कि जैसी वैद्य समाज के लिये उपादेय है।

इसके अतिरिक्त पुस्तिका को जिस महत्वपूर्ण विषय से वंचित होना पड़ा है, उस विषय के सम्बन्ध में लेखक का तो वही विचार था, कि जिस विचार का उल्लेख सूचना के रूप में "जटिल रोगों की दृष्टफल चिकित्सा" के बारे में आ चुका है। परन्तु कुछ वैद्यवरों ने यह संकेत किया है, कि "जटिल रोगों की दृष्टफल चिकित्सा" नामक कृति को अन्य अनुभवी चिकित्सकों के अनुभवात्मक आत्मत्याग से भी अलंकृत करना चाहिये। अस्तु इस सम्बन्ध में भी लेखक आप के सहयोग का इच्छुक है। परन्तु, अनुभवात्मक विषय अकाट्य, महत्व-पूर्ण तथा किसी जटिल रोग की सफल चिकित्सा पर पूर्ण प्रकाश डालने वाला और अतिशयोक्ति विरहित होना चाहिये, ताकि किसी को यह कहने का अवसर न मिले, कि विषय कपोल कल्पित कहानी है।

इसके अतिरिक्त यदि किसी महानुभाव को ग्रन्थ संकेत सम्बन्धी किसी औषधि के निर्माण के विषय में ग्रन्थाभाव के कारण प्रतिबाधा हो तो वह लेखक को एक पत्र लिखकर औषधि का योगादि पूछ सकते हैं। ऐसे पत्रों का उत्तर तुरन्त दिया जायेगा। परन्तु उत्तरार्थ पत्र के साथ अपने पते का लिफाफा अवश्य भेजना चाहिये।

विनीत—**लेखक।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराश रोगियों की सेवा में

निवेदन

दैव गति को तो कोई रोक नहीं सकता और न किसी रोग के विषय में दैवी दावा ही किया जा सकता है। परन्तु "जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" नामक यह नन्ही सी कृति जिस सत्यता और सचाई की द्योतक है। उसी सत्यता और सचाई के आधार पर लेखक आप से यह प्रार्थना करना आवश्यक समझता है, कि दुर्भाग्यवश यदि आप किसी जीर्ण, जटिल अथवा कष्टसाध्य व्याधि से व्यथित और निरन्तर चिकित्सा कराने के बावजूद भी स्वास्थ्य सुख से वञ्चित हैं तो पत्र व्यवहार द्वारा हम से परामर्श करें। क्योंकि सम्भव है कि आपका स्वास्थ्य सुख भी उसी चिकित्सा पद्धति की परि-सफलता की प्रतीक्षा कर रहा हो, कि जिस चिकित्सा पद्धति की असाधारण सफलताओं से लेखक की कृति "जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" ओतप्रोत है। परन्तु रोग विवरण के साथ यथाशक्ति परामर्श शुल्क [जो २) रु० से कम नहीं होना चाहिये] भेजना आवश्यक है।

पत्र व्यवहार का पता :—

वैद्य एस० वासुदेव (ले०-ज० रो० की स० चि०)

रघुनाथ पुरा, जम्मू तवी (कश्मीर)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा अगला प्रकाशन—

यादव-वचनामृत

"यादव वचनामृत" रूपी अमृत निधि, जो चिकित्सा के कर्म-क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिये वरदान रूप है, प्रातः स्मरणीय आचार्य प्रवर पूज्य यादव जी त्रिकम जी महाराज के उस औदार्यान्वित सान्निध्य की सुमधुर यादगार है, कि जो सान्निध्य निरन्तर २५ वर्ष तक स्नेहमय सम्पर्क के रूप में लेखक के साथ स्थापित रहा है और 'यादव वचनामृत' रूपी अमूल्य निधि की संपूर्ति उस अमृत-योग द्वारा हुई है, कि जिसे स्वप्रदत्त निधि की परिपूर्ति के लिये पूज्य आचार्य जी ने परम गति प्राप्त करने से केवल १२ दिन पूर्व एक पत्र द्वारा (जिस की प्रति लिपि उक्त कृति में उद्धृत है) लेखक को प्रदान किया है। परिणाम स्वरूप उक्त कृति में पूज्य आचार्य जी के उन हृदयङ्गम अनुभूत योगों आदि का समावेश भी हो गया है, कि जिन योगों आदि से यादव वचनामृत से पूर्व प्रकाशित वह कृतियां भी वञ्चित हैं, कि जिन कृतियों का प्रणयन पूज्य आचार्य जी की अमर लेखनी द्वारा हुआ है। अस्तु, वह तीन योग भी उन्हीं योगों में से ही हैं, कि जिन योगों का उल्लेख "जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" में रक्तार्गल रस, रजत विद्रुम और रत्नगर्भ पोटली संज्ञाओं से आया है।

मूल्य—२) रुपये।

लेकिन पुस्तक प्रकाशित होने से पूर्व ही आर्डर भेजने वालों के लिये केवल १।।) रुपया।

आर्डर भेजने का पता :—

वैद्य एस० वासुदेव (वासुदेव आरोग्य वाटिका)

जम्मू-तवी (काश्मीर)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जटिल रोगों की सफल चिकित्सा" तथा निकट भविष्य में प्रकाशित होने वाली लेखक की अन्य कृतियों के

प्राप्ति-स्थान

(१) वासुदेव आरोग्य वाटिका जम्मू । (२) सुन्दर आयुर्वैदिक फार्मेसी रघुनाथ बाजार जम्मू । (३) पुष्करणा आयुर्वैदिक फार्मेसी प्राईवेट लिमिटिड निमक मण्डी अमृतसर। (४) चौखम्बा संस्कृत सीरिज P. B. 8 बनारस । (५) तक्षशिला आयुर्वैदिक फार्मेसी चन्दौसी (मुरादाबाद) । (६) देशरक्षक आयुर्वैदिक औषधालय कनखल (हरिद्वार) । (७) प्राणाचार्य आयुर्वेद भवन प्राईवेट लिमिटिड विजय गढ़ जि० अली गढ़ । (८) कश्मीर स्टेशनरी मार्ट अड्डा होशियारपुर जालन्धर सिटी (पंजाब) । दवाखाना अल्कोसर अमीरा कदल श्रीनगर (काश्मीर) ।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रस्तुत पुस्तिका (ज० रो० की स० चि०) के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं, अतएव पुस्तिका अथवा पुस्तिका के किसी अंश को विकल अविकल अथवा अनुवाद के रूप में लेखक की आज्ञा के बिना प्रकाशित करना निषिद्ध है। यदि कोई लेखक की आज्ञा के बिना प्रकाशित करेगा तो उस पर कानूनी कार्यवाही की जायेगी ।

—लेखक ।

भारती प्रेस, जम्मू में छपी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar